1984
GEORGE ORWELL

उन्नीस सौ चौरासी

अप्रैल का महीना था। दिन ठंडा था लेकिन धूप खिली थी। घड़ियां तेरह (दिन का एक) बजा रही थीं। विन्स्टन स्मिथ ने अपनी ठोड़ी छाती की ओर झुका रखी थी, सर्द हवा के झोंकों से मुंह को बचाने के लिए। वह तेज़ी से विजय भवन के दरवाज़े खोलकर अन्दर घुस गया। परन्तु फिर भी दरवाज़ा खुलते ही विन्स्टन के साथ धूल-भरी हवा का झोंका भी मकान के अन्दर आ गया।

हॉल वाले रास्ते से ऊपर जाते हुए उसमें बन्दगोभी और गन्दे गूदड़ों की गन्ध उसकी नाक में घुस गई। दीवार पर एक बहुत बड़ा पोस्टर चिपका हुआ था। दीवार छोटी थी और पोस्टर बड़ा, इसलिए वह दीवार पर समा नहीं रहा था। पोस्टर पर बहुत बड़ी तस्वीर बनी थी, कोई एक मीटर चौड़ी। शक्ल किसी ऐसे आदमी की थी, जिसकी उमर कोई पैंतालीस वर्ष की होगी। घनी काली मूछों और नाक-मुख से परिपक्वता झलकती थी। विन्स्टन सीढ़ियों की ओर बढ़ा। लिफ्ट की तरफ जाना बेकार था। वैसे भी लिफ्ट शायद ही कभी चलती हो, और इस समय तो बिजली ही नहीं थी। दिन का उजाला था न! घृणा-सप्ताह की तैयारियां हो रही थीं। इसलिए मितव्यय के लिए दिन में बिजली काट दी जाती थी। विन्स्टन का फ्लैट सातवीं मंज़िल पर था। उसकी उमर उन्तालीस वर्ष थी। उसके दाहिने पैर के टखने की नस पर फोड़ा था। इसलिए वह धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ पाया। रास्ते में उसे कई बार आराम करना पड़ा। हर मंज़िल पर लिफ्ट के उस पार दीवार में चिपके पोस्टर की शकल, ऐसा लगता था, उसकी ओर देख रही है। यह ऐसी तस्वीर थी, जिसकी आंखें इस तरह बनाई

1984

GEORGE ORWELL

मूल्य : दो रुपये

उन्नीस सौ चौरासी

अप्रैल का महीना था। दिन ठंडा था लेकिन धूप खिली थी। घड़ियाँ तेरह (दिन का एक) बजा रही थीं। विन्स्टन स्मिथ ने अपनी ठोड़ी छाती की ओर झुका रखी थी, सर्द हवा के थपेड़ों से मुँह को बचाने के लिए। वह तेज़ी से विजय भवन के दरवाजे खोलकर अन्दर घुस गया। परन्तु फिर भी दरवाज़ा खुलते ही विन्स्टन के साथ धूल-भरी हवा का झोंका भी मकान के अन्दर आ गया।

हॉल वाले रास्ते से ऊपर जाते हुए उसने बन्दगोभी और गन्दे गुदड़ों की गंध उसकी नाक में घुस गई। दीवार पर एक बहुत बड़ा पोस्टर चिपका हुआ था। दीवार छोटी थी और पोस्टर बड़ा, इसलिए वह दीवार पर समा नहीं रहा था। पोस्टर पर बहुत बड़ी तस्वीर बनी थी, कोई एक मीटर चौड़ी। शक्ल किसी ऐसे आदमी की थी, जिसकी उमर कोई पैंतालीस वर्ष की होगी। घनी काली मूछों और भाव-मुद्रा से परिपक्वता झलकती थी। विन्स्टन सीढ़ियों की ओर बढ़ा। लिफ्ट की तरफ जाना बेकार था। वैसे भी लिफ्ट शायद ही कभी चलती हो, और इस समय तो बिजली ही नहीं थी। दिन का उजाला था न! घृणा-सप्ताह की तैयारियाँ हो रही थीं। इसलिए मितव्यय के लिए दिन में बिजली काट दी जाती थी। विन्स्टन का फ्लैट सातवीं मंज़िल पर था। उसकी उमर उन्तालीस वर्ष थी। उसके दाहिने पैर के टखने की नस पर फोड़ा था। इसलिए वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ पाया। रास्ते में उसे कई बार आराम करना पड़ा। हर मंज़िल पर लिफ्ट के उस पार दीवार से चिपके पोस्टर की शक्ल, ऐसा लगता था, उसकी ओर देख रही है। यह ऐसी तस्वीर थी, जिसकी आँखें इस तरह बनाई

बाहर, बन्द खिड़कियों के शीशों के पार की सारी दुनिया में ठंडक छाई हुई थी। सड़कों पर तेज़ हवा थी। इन झोंकों के भंवरों में धूल और फटे कागज़ों को छितराते गोल-गोल घूमती हुई ऊपर उठ जाती थी। धूप खिली थी, आसमान गहरा नीला था, लेकिन बाहर कोई रंगीन चीज़ नहीं थी। रंग था तो केवल पोस्टरों में, जो चारों तरफ लगे थे। हर कोने के पोस्टर से वही काली मूंछों वाली शक्ल घूर रही थी। विन्स्टन की खिड़की के सामने जो इमारत थी उस पर भी बहुत बड़ा पोस्टर लगा था। काफ़ी दूरी पर एक हैलीकॉप्टर उड़ रहा था। वह छतों के बीच था। कुछ देर के लिए वह एक मकान की खिड़कियों की ओर झुका और फिर तिरछा होकर चला गया। यह पुलिस का गश्ती दल था जो खिड़कियों से देखता फिरता था कि लोग मकानों में क्या कर रहे हैं। लेकिन इन गश्ती दलों की कोई चिन्ता नहीं थी। असली भय तो उस पुलिस से था जो विचारों पर नियन्त्रण रखती थी। उसका नाम था—विचार नियन्त्रक पुलिस।

विन्स्टन के पीछे अब भी टेलीस्क्रीन की आवाज़ आ रही थी। कच्चे लोहे के उत्पादन के आंकड़े दिए जा रहे थे और बतलाया जा रहा था कि नवें तीन-वर्षीय आयोजन में लक्ष्य से अधिक उत्पादन हुआ है। टेलीस्क्रीन की खासियत यह थी कि वह कमरे के दृश्य को ग्रहण कर

दृश्य प्रसारित कर सकता था और दूसरी ओर से प्रसारित ध्वनि और दृश्य को कमरे में देखा-सुना जा सकता था। विंस्टन 'फुसफुसाहट' की ध्वनि से ज़रा भी ऊंचा बोलता कि टेलीस्क्रीन के पीछे 'मालिक' उसकी आवाज़ पकड़कर दूसरी तरफ भेज सकता था। ऐसा उस समय तक हो सकता था जब तक वह उस धातु के पर्दे की दृष्टि-सीमा में रहता था। किन्तु निश्चय पूर्वक यह किसको देख रही होती—इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती थी। परन्तु इसमें तो सन्देह ही नहीं था कि वे जिस समय जिसे चाहें उसे देख सकते थे। लोगों को जीना है और जी? क्योंकि जीवन का अभ्यास पड़ गया है, परन्तु उनकी हर आवाज़ को सुना जाता है, अंधेरे के अलावा हर समय वे क्या करते हैं, यह बराबर देखा जाता है।

विंस्टन टेलीस्क्रीन की तरफ बराबर पीठ किए था। ऐसा करना अधिक सुरक्षित था, किन्तु बिल्कुल सुरक्षित नहीं, क्योंकि कभी-कभी पीठ देखकर भी यह अनुमान किया जा सकता है कि आदमी क्या कर रहा है। कोई एक किलोमीटर की दूरी पर विंस्टन के कार्यालय की इमारत थी जिसे सत्य मन्त्रालय कहते थे। इमारत काफी ऊंची और बिल्कुल सफेद थी। कुछ विरक्तिपूर्वक विंस्टन सोच रहा था, यह लन्दन है, हवाई पट्टी नम्बर एक का मुख्य नगर। हवाई पट्टी नम्बर एक ओशनिया का सबसे घनी आबादी वाला प्रान्त था। वह अपने बचपन की याद कर रहा था और सोच रहा था कि क्या लन्दन पहले ऐसा ही था? क्या पहले भी उन्नीसवीं शताब्दी के ढंग के इसी तरह के मकान थे? दीवारों पर लकड़ी चढ़ी हुई, खिड़कियों में गत्ता लगा हुआ और छतों में लोहे की नालीदार चादरें लगी हुई और बागों की चहारदीवारी चारों तरफ फैली हुई। इधर-उधर बमबारी के कारण बने खण्डहर और मलबे पर उड़ती हुई धूल। जहां बम ने पुराने मकानों को बिल्कुल साफ कर दिया था वहां नये मकान बन गए थे। ये लकड़ी के थे और ऐसा लगता था कि मुर्गियों के दरबे हों। क्या पहले भी ऐसा ही था? लेकिन कोई लाभ नहीं—सोचने से कोई लाभ नहीं, उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। कभी उसे कोई दृश्य याद आ जाता था, जो बिल्कुल एक-दूसरे से असम्बद्ध था और उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता था।

युद्ध ही शान्ति है!
दासता ही स्वतन्त्रता है!
अज्ञान ही शक्ति है!

सत्य मंत्रालय की इमारत की सारी मंज़िलों में लगभग तीन हज़ार कमरे थे। इतने ही कमरे ज़मीन के नीचे भी थे। लन्दन-भर में ऐसी तीन इमारतें और थीं। इनके सामने अन्य सारे मकान बौनों की तरह छोटे और साधारण प्रतीत होते थे। इन इमारतों में चार सरकारी मंत्रालयों के दफ्तर थे और इन्हीं मंत्रालयों से सारा सरकारी कामकाज चलता था। इनमें पहला मंत्रालय था सत्य का। इस मंत्रालय का सम्बन्ध समाचार, मनोरंजन, शिक्षा और ललितकलाओं आदि से था। इसके बाद था शान्ति मंत्रालय। इसका काम युद्ध-व्यवस्था करना था। तीसरा मंत्रालय था प्रेम का। इसका काम शान्ति तथा व्यवस्था कायम करना था। इसके बाद समृद्धि मंत्रालय था। इसका सम्बन्ध आर्थिक मामलों से था। नई भाषा में इनको—'सत्यमंत्र', 'शान्तिमंत्र', 'प्रेममंत्र' और 'समृमंत्र' कहते थे।

प्रेम मंत्रालय वाकई भयानक था। उसमें कहीं कोई खिड़की नहीं थी। इसमें केवल सरकारी काम से ही अन्दर जाना हो सकता था, अन्यथा प्रवेश असम्भव था। अन्दर घुसने के लिए काँटेवाले तारों का घेरा, लोहे के दरवाज़ों, छिपी मशीनगन की बुर्जियों को पार करना पड़ता था। जो गलियाँ इस इमारत के पास जाती थीं, उन तक में काली वर्दी पहने, गुरिल्लों जैसी शक्लों के सैनिक बराबर पहरा देते रहते थे।

[illegible] । उसने अपने चेहरे पर आशावादी मुद्रा [illegible] था। टेलीस्क्रीन के सामने इस तरह की मुद्रा होना ज़रूरी [illegible] बाद वह बगल के रसोईघर में चला गया। इस वक्त सर-

कारी दफ्तर को छोड़कर उसे कैन्टीन में मिलने वाले भोजन से वंचित रहना पड़ा था। उसे यह मालूम था कि रसोई में इस वक्त काली रोटी के टुकड़े के अलावा और कुछ भी न होगा और वह भी कल सुबह के नाश्ते के लिए बचाकर रखना जरूरी है। उसने अलमारी में से एक बोतल उतारी। इसपर विक्टरी जिन का लेबिल चिपका था। यह रंगहीन नशीला पेय था। बोतल चाय के प्याले में उंडेलकर खाली की। इससे तेल जैसी गंध आ रही थी। गंध नाक में पहुंचते ही उबकाई आने लगती थी। थोड़ी देर वह उसे देखता रहा, इसके बाद नाक बंद कर प्याले को चढ़ा गया, जैसे वह कोई दवा हो।

शराब का प्याला पीते ही उसका मुंह नीला पड़ गया और आंखों से पानी बहने लगा। शराब क्या थी, तेज़ाब था। इसे गले से नीचे उतरते ही ऐसा लगता था कि किसीने रबड़ के हंटर से ज़ोर से गर्दन के पीछे प्रहार किया हो। दूसरे ही क्षण पेट में होनेवाली जलन शान्त हो गई और दुनिया कुछ बदली-सी दिखलाई पड़ने लगी। परिवर्तन प्रसन्नतादायी था। उसने जेब में सिगरेट का दबा हुआ पैकेट निकाला। इसपर भी विक्टरी सिगरेट लिखा था। एक सिगरेट निकालकर उसे सीधा किया। सिगरेट सीधा खड़ा करते ही उसका तम्बाकू ज़मीन पर नीचे आ गिरा। उसने एक और सिगरेट निकाली। इसके बाद वह कमरे के एक कोने में रखी मेज़ के पास चला गया। यह मेज़ टेलीस्क्रीन से बाईं तरफ थी। कुर्सी पर बैठकर उसने दराज़ से कलम, दवात और बढ़िया जिल्द चढ़ी एक कापी निकाली।

इस कमरे में पता नहीं क्यों टेलीस्क्रीन ऐसी जगह लगा था, जहां से उसकी नज़र में वह भाग नहीं आता था जहां मेज़-कुर्सी रखी थी। जब यह कमरा बना था तो ख्याल था कि इस कोने में, जहां मेज़ थी, किताबों की आलमारी रहेगी। लेकिन इस जगह दबकर बैठने से विन्स्टन टेलीस्क्रीन की आंख से बचा रहता था। उसकी आवाज़ ज़रूर स्क्रीन के माइक तक पहुंच सकती थी, किन्तु यदि वह चुप रहता तो उसकी उपस्थिति का किसीको ज्ञान नहीं हो सकता था। विन्स्टन जो कार्य अब करने जा रहा था, उसका एक कारण कमरे का यह गुप्त कोना भी था।

विन्स्टन ने दराज़ से जो कापी निकाली थी, उस कापी ने भी उसे

ऐसा कार्य करने को बाध्य किया था। यह कापी बड़ी खूबसूरत थी। उसका कागज बड़ा चिकना था। और इस समय और आने के कारण कागज कुछ पीला अवश्य पड़ गया था। ऐसा कागज पिछले चालीस वर्षों से नहीं बना था। उसने इस कापी को शहर की गन्दी बस्ती की एक कबाड़ी की दुकान की खिड़की में पड़ा देखा था। देखते ही उसकी यह इच्छा हो उठी थी कि वह उसे खरीद ले। पार्टी के सदस्यों को साधारण दुकानों पर जाने की इजाजत नहीं थी। इन दुकानों को खुला बाजार कहा जाता था। लेकिन इस नियम का कठोरता से पालन नहीं किया जाता था, क्योंकि बहुत-सी चीजें जैसे जूतों के फीते और रेजर-ब्लेड खुले बाजार के अलावा अन्य कहीं से भी मिलने की सम्भावना नहीं थी। उसने सड़क पर पहले आगे-पीछे नजर डाली थी और जैसे ही यह जान लिया कि कोई उसे देख नहीं रहा, वह लपककर कबाड़ी की दुकान में घुस गया और ढाई डालर में कापी खरीद ली थी। उस समय विन्स्टन के दिमाग में यह बात नहीं थी कि वह उस कापी का क्या करेगा। अपने छोटे थैले में छिपाकर वह कापी घर ले आया था। उसमें कुछ नहीं लिखा था फिर भी कापी का पास पाया जाना कुछ कम खतरनाक नहीं था।

अब वह डायरी लिखना चाहता था। यह गैरकानूनी नहीं था। कोई कानून ही नहीं था, इसलिए किसी बात के गैरकानूनी होने का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता था। किन्तु यदि वह इस कापी-समेत पकड़ लिया जाता तो यह निश्चित था कि उसे मृत्युदण्ड मिलता, या कुछ नहीं तो कम से कम पचीस वर्ष बेगार-शिविर में बिताने पड़ते। विन्स्टन ने कलम में निब लगाई। कलम का उपयोग इन दिनों बन्द था। कोई दस्तखतों तक के लिए उसको काम में नहीं लाता था। उसे यह कलम बड़ी कठिनाई से मिला था। वह चाहता था कि स्याही वाली पेंसिल के बजाय इस सुन्दर कापी में कलम से लिखे। वस्तुतः अब उसे हाथ से लिखने की आदत ही नहीं रही थी। छोटे-मोटे नोट लिखने के अतिरिक्त बड़ी-बड़ी चीजें तो लेखनयंत्र पर बोल दी जाती थीं जो अपने आप बोली गई चीजों को लिख लेता था। परन्तु इस समय उस यंत्र का तो प्रयोग संभव ही नहीं था। उसने कलम को स्याही में डुबोया। इसके बाद क्षण-भर उसका हाथ कांपा। उसके पेट में अजीब-सी खलबली मच

गई थी। उसने जैसे-तैसे लिखा :

'अप्रैल, १९८४'

इसके बाद वह कुर्सी से पीठ लगाकर बैठ गया। सबसे पहली बात तो यह थी कि उसे यही मालूम नहीं था कि यह सन् १९८४ ही है। उसका ख्याल था कि साल करीब-करीब ठीक ही होगा। उसकी आयु कोई उन्तालीस वर्ष की थी। वह सन् १९४४ या १९४५ में पैदा हुआ था। लेकिन पिछले एक-दो वर्षों की ठीक-ठीक तारीखें बनाना भी कठिन था।

लेकिन वह यह डायरी किसके लिए लिख रहा है? इसे कौन पढ़ेगा? भविष्य के लिए? भावी सन्तति के लिए? उसके दिमाग में कुछ देर कापी पर लिखी तारीख के बारे में ही विचार आते-जाते रहे। भविष्य से आप अपना सम्बन्ध ही किस प्रकार स्थापित कर सकते हैं? जो स्थिति अब थी, उसमें यह असम्भव था। या तो भविष्य वर्तमान की भांति ही होगा और ऐसी अवस्था में वह उसकी बात ही नहीं सुनेगा, या वह भिन्न होगा और उसका आज का असमंजस निरर्थक होगा।

कुछ देर वह कागज पर दृष्टि गड़ाए बुद्धू की तरह घूरता रहा। टेलीस्क्रीन अब सैनिक धुन बजा रहा था। अजब हालत थी उसकी। वह न केवल अपने-आपको अभिव्यक्त कर पाने में असमर्थ पा रहा था, बल्कि अब उसे यह भी याद नहीं पड़ रहा था कि वह क्या लिखना चाहता था। उसके दिमाग में यह बात कभी नहीं आई थी कि लिखना आरम्भ करने के साहस के अलावा अन्य किसी बात की भी आवश्यकता पड़ेगी। जो बातें वर्षों से उसके दिमाग में घुमड़ रही थीं, उनका उसे अनुमान था। उसका ख्याल था, उन्हें वह उचित अवसर और सामग्री मिलते ही लिखना आरम्भ कर देगा। परन्तु अब वे स्वगत भी दिमाग से गायब हो गए थे। उसके टखने वाले फोड़े में बड़ी खुजली हो रही थी। वह उसे खुजला भी नहीं सकता था, क्योंकि खुजलाने से उसकी सूजन बढ़ जाने का खतरा था। उसे अपने सामने कापी के खुले पृष्ठ, कर्णकटु सैनिक धुन, फोड़े की खुजली और शराब से उत्पन्न थोड़े-से नशे के अलावा और किसी बात का ज्ञान नहीं था।

और अकस्मात्, अनायास उसने लिखना शुरू कर दिया। उसे ठीक-ठीक यह मालूम भी नहीं था कि वह क्या लिख रहा है। बच्चों की

तरह वह कागज पर टेढ़े-मेढ़े ढंग से लिख रहा था। वह बातों में विराम भी नहीं लगा रहा था।

'४ अप्रैल, १९८४। कल सिनेमा गया था। सारी फिल्म लड़ाई की थी। दिखलाया गया था कि भूमध्यसागर में कहीं एक बहुत अच्छा और बड़ा जहाज भागा आ रहा है। इसमें शरणार्थी भरे हैं। जहाज पर बमवर्षा की जा रही है। जहाज डूब रहा था और दर्शकों को यह देखने में बड़ा मजा आ रहा था कि एक मोटा आदमी तैर रहा है। उसके पीछे हैलीकॉप्टर था। पहले तो दिखलाया गया कि वह लहरों में ऊपर-नीचे जाते हुए हाथ-पैर पीट रहा है। इसके बाद उस आदमी को हैलीकॉप्टर की उस जगह से दिखलाया गया जहां मशीनगन थी। उसके शरीर-भर में छेद हो गए। आसपास का पानी गुलाबी हो गया और ज्योंही इन छेदों में पानी भरा त्योंही वह आदमी डूब गया। दर्शक उसको डूबता देख खूब जोर-जोर से हंस रहे थे। इसके बाद एक लाइफबोट दिखलाई गई। इसमें बहुत-से बच्चे भरे थे। ऊपर एक हैलीकॉप्टर उड़ रहा था। नाव के एक कोने में एक यहूदी अधेड़ महिला बैठी थी। उसकी गोद में तीन वर्ष का बच्चा था। बच्चा भय के मारे चीख रहा था और महिला की छाती से चिपका जा रहा था। यहूदिन ने भी उसे अपनी बाहों में लपेट रखा था और चुप करा रही थी। हालांकि भय के मारे वह स्वयं नीली पड़ी जा रही थी। हैलीकॉप्टर ने नौका के बीचोंबीच एक छोटा-सा बम फेंक दिया। एकसाथ बिजली-सी चमकी और नाव ऐसी उड़ गई जैसे दियासलाई की तीलियों से बना मकान। इसके बाद एक डूबते बच्चे का पानी से ऊपर निकला हाथ दिखलाया गया। हैलीकॉप्टर में लगे कैमरे ने यह शाट लिया होगा। पार्टी-सदस्यों की सीटों पर बैठे लोगों ने खूब तालियां पीटीं, लेकिन मजदूरों वाले हिस्से में बैठी एक औरत ने शोर मचाना शुरू कर दिया। वह कह रही थी, "बच्चों के सामने यह दृश्य नहीं दिखलाना चाहिए।" वह तब तक चिल्लाती रही जब तक पुलिस ने आकर उसे बाहर नहीं निकाल दिया। उस औरत का क्या हुआ, नहीं मालूम।

'मजदूरों की प्रतिक्रिया—'

विन्स्टन ने लिखना बन्द कर दिया। वह नहीं जानता—किस धुन में वह यह सब लिख गया था। लेकिन लिखते-लिखते उसे एक ऐसी

वह घटना ऐसी थी जिसके कारण वह दफ्तर से चला आया था और उसने निश्चय किया था कि वह आज ही से डायरी लिखना शुरू कर देगा।

यह घटना आज मंत्रालय में हुई थी, यदि उसे घटना मान लिया जाए तो। करीब ग्यारह बजे थे। रिकार्ड विभाग में, जहां विन्स्टन काम कर रहा था, कमरों से कुर्सियां ला-लाकर सेंट्रल हाल में जमा की जा रही थीं। इस हाल में बड़ा-सा टेलीस्क्रीन लगा था। घृणा उत्पन्न करने वाली दो मिनट की प्रचार-फिल्म दिखलाई जाने वाली थी। विन्स्टन बीच की पंक्ति वाली कुर्सियों में से एक पर बैठा, तभी दो व्यक्ति हाल में घुसे। इनकी शक्लों से तो वह परिचित था लेकिन उसे उनसे बात करने का अवसर कभी नहीं मिला था। इनमें से एक लड़की थी। इस लड़की से बरामदे में आते-जाते उसकी अक्सर मुलाकात हो जाती थी। वह उसका नाम नहीं जानता था, परन्तु उसे यह मालूम था कि वह लड़की कथा-उपन्यास विभाग में काम करती है। कभी-कभी उसके हाथ मशीन के काले तेल में रंगे होते थे और स्क्रू कसने वाला औज़ार भी होता था, इससे विन्स्टन ने अन्दाज़ कर लिया था कि वह उपन्यास लिखनेवाली मशीन पर काम करती होगी। लड़की की उमर सत्ताइस साल की होगी। चेहरे से वीरता टपकती थी। उसके बाल घने और गहरे काले थे। उसके हर क्रिया-कलाप से चुस्ती ज़ाहिर होती थी। उसकी कमर में नीली पट्टी कई फेरों में बंधी रहती थी और साथ ही वह सेक्स-विरोधी लीग का बैज भी लगाए रहती थी। नीली पट्टी से उसकी कमर कसी और अपेक्षाकृत पतली नज़र आती थी और कूल्हे पीछे की ओर अधिक आकर्षक ढंग से उभरे नज़र आते थे। विन्स्टन ने जब पहली बार उसे देखा था, तभी से वह उससे घृणा करने लगा था। वह इसका कारण भी जानता था। ऐसी लड़कियों में ही आवश्यकता से अधिक पार्टी-भक्ति होती थी। वे हर नारा लगाती थीं, जासूसी करती थीं और हमेशा यह देखती रहती थीं कि कौन पार्टी के विश्वासों और सिद्धान्तों पर दृढ़ नहीं है। उसका ख्याल था कि वह लड़की विशेष रूप से खतरनाक है। एक बार गलियारे में गुज़रते हुए उसने ऐसी तिरछी नज़र से विन्स्टन को घूरा था कि विन्स्टन सिर

के भय के मारे कांप गया था। विन्स्टन का ध्यान आया। कि हो
गुप्तचरी विचार नियंत्रक पुलिस की एजेंट हो। जब भी वह
कहीं होती, विन्स्टन के मन में बेचैनी, भय और उसके विरुद्ध
भाव बराबर बना रहता।

रा आदमी ओ' ब्रायन था। वह अन्तरंग पार्टी का सदस्य था।
ी महत्वपूर्ण पद पर था जिसका उसे तनिक-सा आभास ही था।
योगागार में अन्तरंग पार्टी के सदस्य को आते देख चारों तरफ
छा गया। ओ' ब्रायन मोटा और लम्बे कद का था। उसकी
बड़ी मोटी थी। चेहरे से क्रूरता, परिहास और रूखापन-सा
था। इस तरह की भाव-भंगिमा होते हुए भी उसके आचार में
आकर्षण था। वह अपनी नाक पर चश्मा इस प्रकार रखता था जो
बैठे आदमी को सकपका देने के लिए काफी होता था। पिछले
वर्षों में लगभग दर्जन बार ही विन्स्टन ने ओ' ब्रायन को देखा
विन्स्टन को ओ' ब्रायन का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक लगता था।
कारण केवल ओ' ब्रायन की परिष्कृत शिष्टता और पहलवानों
शरीर ही नहीं था। उसे कुछ-कुछ यह भी आभास था कि ओ'
राजनीतिक दृष्टि से अन्य पार्टी-उच्चाधिकारियों की भांति कट्टर
। उसकी मुखमुद्रा पर कुछ-कुछ उदनाशय का भाव बराबर बना
था। और शायद यह भाव राजनीतिक विश्वासों की निश्चलता
होकर बौद्धिकता का था। लेकिन कुछ भी हो, उसके मुख की
ऐसी थी जिसे देखकर ओ' ब्रायन से बात करने को जी चाहता
कठिनाई यही थी कि टेलीस्क्रीन से कैसे बचा जाए और उसके साथ
त से किस प्रकार बैठा जाए। यदि टेलीस्क्रीन को धोखा दिया जा
और ओ' ब्रायन एकान्त में होता तो उससे आसानी से बातचीत
ा सकती थी। विन्स्टन ने अपने इस अनुमान की सत्यता परखने
ए जरा भी प्रयत्न नहीं किया था। तभी ओ' ब्रायन ने कलाई में
घड़ी की ओर देखा। दिन के ग्यारह बजने को थे। इसीलिए उसने
ा कि अब वह दो मिनट चलने वाली पार्टी-प्रचार की फिल्म देखने
बाद ही रेकार्ड-विभाग से जाएगा। वह विन्स्टन वाली कुर्सी की
त में ही कुछ दूरी पर दूसरी कुर्सी पर बैठ गया। दोनों के बीच एक
थी। वह भी विन्स्टन के विभाग में ही काम करती थी। घने और

दूसरे ही क्षण टेलीस्क्रीन के पीछे से एक ऐसी मशीन चलने की आवाज आई जैसे वह बहुत पुरानी हो और बिना तेल के चल रही हो। यह आवाज इतनी कर्कश थी कि उसे सुनते ही आदमी के दांत भिंच जाते थे और पीठ तथा गर्दन के पीछे के रोम तक खड़े हो जाते थे। घृणा-प्रचार आरम्भ हो गया था।

हमेशा की भांति, जनता के दुश्मन, गोल्डस्टीन की शकल टेलीस्क्रीन पर सबसे पहले आई। सबके मुंह से धिक्कार की आवाज निकलने लगी। विन्स्टन की पंक्ति वाली कुर्सियों में से एक पर बैठी स्त्री के मुंह से भय और निराशा मिश्रित आह निकल गई। गोल्डस्टीन कायर और भगोड़ा था। बहुत समय पहले वह भी पार्टी में था और बड़े भाई की बराबरी का नेता था। परन्तु बाद में वह क्रान्ति-विरोधी कार्य करने लगा, जिससे उसे मौत की सजा दी गई, लेकिन वह भाग गया और लापता हो गया। उसका भागना और लापता हो जाना अब भी रहस्य था। घृणा-प्रचार का कार्यक्रम प्रतिदिन दो मिनट के लिए होता था। हर बार फिल्म का कथानक भिन्न होता था, किन्तु ऐसी कोई फिल्म नहीं होती थी जिसमें गोल्डस्टीन मुख्य पात्र न होता हो। वह आदि विद्रोही था। वह पार्टी की पवित्रता को नष्ट करने वाला आदि अपराधी था। पार्टी के विरुद्ध किया जाने वाला प्रत्येक अपराध, विद्रोह, विध्वंसात्मक कार्य, पथभ्रष्टता आदि सब कुछ गोल्डस्टीन की शिक्षाओं के ही फलस्वरूप होते थे। वह कहीं न कहीं छिपा था और बराबर साजिशें करता रहता था। सम्भवतः वह समुद्र-पार किसी देश में था और अपने विदेशी स्वामियों से धन लेकर तरह-तरह के षड्यन्त्र रचा करता था। कभी-कभी यह भी अफवाह सुनाई पड़ती थी कि वह ओशनिया में ही छिपा है।

विन्स्टन का सारा बदन अकड़ गया था। वह गोल्डस्टीन की शकल की ओर बिना कष्टपूर्ण भावों के नहीं देख पा रहा था। गोल्डस्टीन की शकल लम्बी, दुबली, यहूदियों की-सी थी। सफेद बाल थे और बकरे जैसी छोटी दाढ़ी। शकल से होशियारी टपकी पड़ती थी। फिर भी यह शकल देखते ही मन में घृणा के भाव उभर उठते थे। गोल्डस्टीन पार्टी की हमेशा की तरह विषैली आलोचना कर रहा था। उसकी आवाज

गा रहा बोल रहा हो। आलोचना इतनी अतिशयोक्तिपूर्ण थी कि ब
सुनकर बच्चा भी यह समझ जाए कि यह गलत है, गोल्डस्टीन सं
भाई को गालियां दे रहा था। वह पार्टी के नेताओं की निन्दा कर र
था। वह कह रहा था कि यूरेशिया के साथ तत्काल शान्ति-संधि क
जाए। वह भाषण की, समाचारपत्रों की, सभा करने की, और वि
की स्वतन्त्रता की मांग कर रहा था। वह कह रहा था कि क्रान्ति जि
उद्देश्यों से की गई थी, वे पूरे नहीं हुए। उसके बोलने का ढंग पार्ट
नेताओं का था। भाषण में नई भाषा के भी शब्द थे—बल्कि अन्य पार्ट
नेताओं के भाषणों में आने वाले नई भाषाओं के शब्दों से भी अधि
इसके साथ ही उसके सिर के पीछे यूरेशियन सेनाओं के अनगिनत सैनि
मार्च करते हुए दिखलाए जा रहे थे। एक के बाद एक सैनिक-पं
स्क्रीन पर आती और लुप्त हो जाती। एक के गायब होते ही सपाट
मुखमुद्रा वाले एशियाई सैनिक पर्दे पर आ जाते। उनके बूटों की
आवाज गोल्डस्टीन के भाषण के साथ बराबर मिश्रित थी।

अभी फिल्म को आरम्भ हुए कठिनाई से तीस सेकेंड भी नहीं हु
थे कि कमरे के आधे से अधिक व्यक्ति क्रोध में चिल्लाने लगे थे। गोल्ड
स्टीन का भेड़ों जैसा सन्तुष्ट चेहरा और यूरेशियन सैनिकों का आत
दर्शकों की सहनशक्ति के बाहर था। इसके अलावा गोल्डस्टीन का
चेहरा सामने आते ही लोगों में भय और क्रोध के भाव अपने आप उभ
आते थे। वह यूरेशिया और ईस्ट एशिया दोनों से कहीं अधिक निरन्तर
घृणा का पात्र था। ओशनिया बराबर युद्ध करता रहता था। कभी
यूरेशिया से तो कभी ईस्ट एशिया से। जब वह यूरेशिया से युद्ध करता
तो ईस्ट एशिया से उसकी मैत्री होती और जब ईस्ट एशिया से युद्ध
करता तो यूरेशिया से। लेकिन गोल्डस्टीन के संबंध में एक अजीब बा
थी। उससे हर आदमी घृणा करता था। हर रोज और दिन में हजा
बार सभाओं में, टेलीस्क्रीन पर, अखबारों में और पुस्तकों में उसकी
निन्दा की जाती थी, उसके सिद्धान्तों का खण्डन किया जाता था, उसके
तर्क काटे जाते थे, उसकी हंसी उड़ाई जाती थी और सब उसके भाषण
को हेय दृष्टि से देखते थे; परन्तु फिर भी गोल्डस्टीन का प्रभाव क
होता नजर नहीं आता था। हमेशा कोई न कोई उसके फन्दे

रहता था। एक दिन भी ऐसा नहीं गुज़रता था जबकि विचार यवक पुलिस उसके जासूसों और तोड़-फोड़ करने वाले आदमियों को पकड़ती न हो। उसके पास बहुत बड़ी गुप्त सेना थी, अगणित षड्यन्त्रकारी थे और वे सब राज्य को उलटने की सतत चेष्टा करते रहते थे। उसके आदमियों को 'ब्रदरहुड' की संज्ञा दी गई थी। यह भी अफवाह थी कि एक बड़ी भयंकर पुस्तक है जिसे गोल्डस्टीन ने लिखा है और यह पुस्तक गुप्त रूप से प्रचारित की जाती है। इसका कोई नाम नहीं है। उसे केवल 'पुस्तक' के नाम से ही लोग जानते थे। ब्रदरहुड या पुस्तक के संबंध में पार्टी का हरेक सदस्य, जहां तक सम्भव होता था, चर्चा करने से बचने का प्रयत्न करता।

दूसरे मिनट फिल्म चरम सीमा पर पहुंच गई थी। लोग अपनी-अपनी कुर्सियों पर उछल रहे थे, चिल्ला रहे थे और शोर मचाकर गोल्डस्टीन की आवाज़ को अपनी आवाज़ में डुबा देने का प्रयत्न कर रहे थे। बगल में बैठी स्त्री का चेहरा सुर्ख हो गया और उसका मुंह इस प्रकार बार-बार खुल और बंद हो रहा था जैसे पानी से बाहर लाकर छोड़ी गई किसी मछली का। ओ' ब्रायन का भारी चेहरा भी लाल हो गया था। पीछे बैठी घने और गहरे काले बालों वाली लड़की चिल्ला रही थी, 'सुअर! सुअर!! सुअर!!!' अकस्मात् उसने नई भाषा वाली मोटी डिक्शनरी उठाकर स्क्रीन पर दे मारी। वह गोल्डस्टीन की नाक पर लगकर नीचे गिर गई। टेलीस्क्रीन के पीछे से आवाज़ बराबर आती रही। एकाएक विन्स्टन ने अनुभव किया कि वह भी अन्य लोगों के साथ चिल्ला रहा है और अपने जूते से कुर्सी को बार-बार ठोकर मार रहा है। दो मिनट वाली उस घृणा-प्रचार फिल्म की विशेष बात यह नहीं थी कि उसमें चिल्लाने वालों के साथ आप भी शोर मचाएं, अपितु विशेषता यह थी कि आप बिना चीखे रह ही नहीं सकते थे। तीस सेकेंड बाद ही गम्भीरता समाप्त हो जाती थी। भय और क्रोध का भाव आपपर हावी हो जाता था। ऐसी इच्छा होती थी कि किसीको मार डाला जाए, हथौड़े से उसका मुंह कूट दिया जाए। ये भावनाएं बिजली की तरह उभर आती थीं और लोग विक्षिप्तों की तरह चिल्लाने लगते थे। यह घृणा और विध्वंस की इच्छा काल्पनिक थी और इसे किसी भी विषय या व्यक्ति की ओर मोड़ा जा सकता था। विन्स्टन को इस घृणा

से पैर तक भय के मारे कांप गया था। विन्स्टन को ध्यान आया कि हो न हो यह लड़की विचार नियंत्रक पुलिस की एजेंट हो। अब भी वह आसपास कहीं होगी, विन्स्टन के मन में बेचैनी, भय और उसके विरुद्ध घृणा का भाव बराबर बना रहता।

दूसरा आदमी ओ' ब्रायन था। वह अन्तरंग पार्टी का सदस्य था। वह किसी महत्त्वपूर्ण पद पर था जिसका उसे तनिक-सा आभास ही था। काली पोशाक में अन्तरंग पार्टी के सदस्य को आते देख चारों तरफ सन्नाटा छा गया। ओ' ब्रायन मोटा और लम्बे कद का था। उसकी गर्दन बड़ी मोटी थी। चेहरे से क्रूरता, परिहास और रूखापन-सा टपकता था। इस तरह की भाव-भंगिमा होते हुए भी उसके आचार में कुछ आकर्षण था। वह अपनी नाक पर चश्मा इस प्रकार रखता था जो सामने बैठे आदमी को सकपका देने के लिए काफी होता था। पिछले बारह वर्षों में लगभग दर्जन बार ही विन्स्टन ने ओ' ब्रायन को देखा था। विन्स्टन को ओ' ब्रायन का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक लगता था। इसका कारण केवल ओ' ब्रायन की परिष्कृत शिष्टता और पहलवानों जैसा शरीर ही नहीं था। उसे कुछ-कुछ यह भी आभास था कि ओ' ब्रायन राजनीतिक दृष्टि से अन्य पार्टी-उच्चाधिकारियों की भांति कट्टर

ही रहता और एक दिन भी ऐसा नहीं गुजरता था जबकि विचार
नियत्रक पुलिस उसके जासूसों और तोड़-फोड़ करने वाले आदमियो को
पकडती न हो। उसके पास बहुत बड़ी गुप्त सेना थी, असंख्य षड्यन्त्र-
कारी थे और वे सब राज्य को उलटने की सतत चेष्टा करते रहते थे।
उसके आदमियों को 'ब्रदरहुड' की संज्ञा दी गई थी। यह भी अफवाह
थी कि एक बड़ी भयकर पुस्तक है जिसे गोल्डस्टीन ने लिखा है और
वह पुस्तक गुप्त रूप से प्रचारित की जाती है। इसका कोई नाम नही
है। उसे केवल 'पुस्तक' के नाम से ही लोग जानते थे। ब्रदरहुड या
पुस्तक के सबध मे पार्टी का हरेक सदस्य, जहा तक सम्भव होता था,
चर्चा करने से बचने का प्रयत्न करता।

दूसरे मिनट फिल्म चरम सीमा पर पहुच गई थी। लोग अपनी-
अपनी कुर्सियो पर उछल रहे थे, चिल्ला रहे थे और शोर मचाकर
गोल्डस्टीन की आवाज को अपनी आवाज में डुबा देने का प्रयत्न कर
रहे थे। बगल मे बैठी स्त्री का चेहरा सुर्ख हो गया और उसका मुह इस
प्रकार बार-बार खुल और बद हो रहा था जैसे पानी से बाहर लाकर
छोड़ी गई किसी मछली का। ओ' ब्रायन का भारी चेहरा भी लाल हो
गया था। पीछे बैठी घने और गहरे काले बालों वाली लड़की चिल्ला
... 'सुअर! सुअर!! सुअर!!!' अकस्मात् उसने नई भाषा
...टी डिक्शनरी उठाकर स्क्रीन पर दे मारी। वह गोल्डस्टीन की
...र नीचे गिर गई। टेलीस्क्रीन के पीछे से आवाज बराबर
... एकाएक विन्स्टन ने अनुभव किया कि वह भी अन्य लोगों
... रहा है और अपने जूते से कुर्सी को बार-बार ठोकर मार
... उस घृणा-प्रचार फिल्म की विशेष बात यह
...ने वालों के साथ आप भी शोर मचाएं,
... आप बिना चीखे रह ही नहीं सकते थे। तीस
... हो जाती थी। भय और क्रोध का भाव
... ऐसी इच्छा होती थी कि किसीको मार
... दिया जाए। ये भावनाएं बिजली
... लोग विक्षिप्तों की तरह चिल्लाने लगते
... इच्छा काल्पनिक थी और इसे किसी भी
... जा सकता था। विन्स्टन को इस घृणा

और क्रोध का भाव गोल्डस्टीन के बजाय कभी पार्टी, तो कभी बड़े भाई और कभी विचार नियंत्रक पुलिस पर केन्द्रित होता दिखाई दिया। वह स्वभावतः गोल्डस्टीन से सहानुभूति करने लगता था, जो अकेला था और जिसे सबने बदनाम कर रखा था। किन्तु दूसरे ही क्षण उसे लगता कि गोल्डस्टीन के विरुद्ध जो कुछ भी कहा जा रहा है, वह सत्य है। ऐसे अवसरों पर उसके मन में बड़े भाई के विरुद्ध जो घृणा का भाव होता था, वह बड़े भाई के प्रति प्रशंसा के रूप में बदल जाता। बड़े भाई उसे अजेय, निर्भीक रक्षक, एशियाई डाकुओं के विरुद्ध खड़ी चट्टान-से लगते और गोल्डस्टीन अकेला एवं असहाय होते हुए भी तथा उसका अस्तित्व संदिग्ध होते हुए भी दुष्ट जादूगर-सा लगता।

कभी-कभी तो यह भी सम्भव होता है कि अपनी इच्छा से ही आप घृणा के पात्र को भी बदल दें। विन्स्टन ने अपनी घृणा का पात्र गोल्डस्टीन को न बनाकर अपने पीछे बैठी गहरे काले बालों वाली लड़की को बना लिया। उसके सामने स्पष्ट काल्पनिक दृश्य नाचने लगे। वह इस लड़की को रबड़ के कोड़े से इतना मारेगा कि वह मर जाएगी। वह उसे नंगा कर लकड़ी की सूली पर कस देगा और उसके सारे शरीर को तीरों से बेध देगा। वह उसके साथ बलात्कार करेगा और फिर उसका गला काट डालेगा। अब पहले से भी अधिक उसकी समझ में आ गया था कि वह इस लड़की से क्यों घृणा करता था। वह उससे घृणा करता था, क्योंकि वह सुन्दर थी, तरुण थी और काम की भावनाओं से रहित थी, क्योंकि वह उसे अपनी पर्यंकशायिनी बनाना चाहता, लेकिन वह ऐसा कभी नहीं कर सकेगा। उसकी पतली कमर, उसे ऐसा लगता था, अपनी बाँहों में लपेटने के लिए विन्स्टन को आमंत्रित करती थी, परन्तु वहां बंधी लाल पेटी उसके कौमार्य व्रत का बोध दिलाने वाली प्रतीक थी।

अब घृणा-प्रचार की उस फिल्म का चरम दृश्य दिखलाया जा रहा है। गोल्डस्टीन की आवाज बिलकुल भेड़ के मिमियाने जैसी हो गई थी और क्षण-भर बाद ही शकल भी भेड़ जैसी हो गई। इसके बाद भेड़ की शकल यूरेशियन सैनिक की शकल में खो गई। वह आगे बढ़ रहा था। उसकी मशीनगन आग उगल रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह दर्शकों पर चला रहा है और सामने की सीट में बैठे कुछ दर्शक सचमुच पीछे गए। तभी लोगों ने चैन की सांस ली अब दुश्मन की

शक्ल बड़े भाई के चित्र में खो गई। काले बालों, काली मूंछों और शक्तिशाली चेहरे से रहस्यपूर्ण शान्ति की आभा फूट पड़ती थी। पूरे पर्दे पर यह शकल छा गई थी। बड़े भाई क्या कह रहे थे यह कोई सुन नहीं पाया। शायद ढाढस बंधाने वाले कुछ शब्द थे। ऐसे शब्द जो रण-क्षेत्र के शोर में कहे जाते हैं, जो सुनाई तो नहीं पड़ते लेकिन जिनसे खोया साहस फिर लौट आता है। फिर बड़े भाई का चेहरा भी लुप्त हो गया और उसकी जगह ये तीन नारे पर्दे पर सामने आ गए :

युद्ध ही शान्ति है !

दासता ही स्वतन्त्रता है !

अज्ञानता ही शक्ति है !

परन्तु कई सेकण्डों तक पृष्ठभूमि में बड़े भाई का चेहरा बराबर बना रहा, जैसे दर्शकों की आंखों में वह चेहरा अब भी बसा हो। विन्स्टन की पंक्ति की कुरसियों पर बैठी औरत अब सामने वाली कुरसियों में से एक की पीठ पर झुक गई थी। इसके बाद उसने दोनों हाथ परदे की तरफ करके बुदबुदाते हुए कहा . "हे मेरे रक्षक !" यह कहने के बाद उसने अपने दोनों हाथों में मुंह छिपा लिया। स्पष्ट था कि वह कोई प्रार्थना कर रही थी।

इसी मौके पर सब लोग समवेत स्वर से एक प्रकार की सैनिक धुन में 'बड़े भाई, बड़े भाई' गाने लगे। आवाज काफी भारी थी। कोई तीस सेकेण्ड यह क्रम चला। यह धुन भावातिरेक की अवस्था में अक्सर गाई जाती थी। यह एक प्रकार से बड़े भाई की बुद्धिमानी और शान का कीर्तन-सा था। परन्तु इससे भी अधिक सम्भवत: यह आत्मसम्मोह की क्रिया थी जिसमें धुन के साथ कीर्तन करके मानसिक चेतना को भुला दिया जाता था। लेकिन विन्स्टन का उत्साह ठंडा पड़ गया था। फिल्म देखते समय तो वह अपने आपको रोक नहीं पाता था और गुल मचाने में शामिल हो जाता था। किन्तु इस कीर्तन की तो ध्वनि-मात्र से वह घबड़ा जाता था। फिर भी अन्य लोगों के साथ बोलता ही रहा था। अपनी भावनाओं का दमन, अपनी मुद्रा पर संयम और अन्य लोगों का अनुकरण करने की उसकी स्वाभाविक आदत हो गई थी। परन्तु सम्भवत: कुछ क्षणों के लिए उसकी आंखों में चमक-सी आ गई थी, उससे अन्दाज किया जा सकता था कि वह क्या सोच रहा है। और उसी

और क्रोध का भार गोल्डस्टीन के बजाय कभी पार्टी, तो कभी ब
और कभी विचार नियंत्रक पुलिस पर केन्द्रित होता दिखाई दिया
स्वभावतः गोल्डस्टीन से सहानुभूति करने लगता था, जो अकेला प
जिसे सबने बदनाम कर रखा था। किन्तु दूसरे ही क्षण उसे सम
गोल्डस्टीन के विरुद्ध जो कुछ भी कहा जा रहा है, वह सत्य है
अवसरों पर उसके मन में बड़े भाई के विरुद्ध जो घृणा का भाव
था, वह बड़े भाई के प्रति प्रशंसा के रूप में बदल जाता। बड़े भाई
अजेय, निर्भीक रक्षक, एशियाई डाकुओं के विरुद्ध खड़ी चट्टान-से
और गोल्डस्टीन अकेला एवं असहाय होते हुए भी तथा उसका अस्ति
संदिग्ध होते हुए भी दुष्ट जादूगर-सा लगता।

कभी-कभी तो यह भी सम्भव होता है कि अपनी इच्छा से ही
घृणा के पात्र को भी बदल दें। विन्स्टन ने अपनी घृणा का पात्र गो
स्टीन को न बनाकर अपने पीछे बैठी गहरे काले बालों वाली लड़की
बना लिया। उसके सामने स्पष्ट काल्पनिक दृश्य नाचने लगे। वह
लड़की को रबड़ के कोड़े से इतना मारेगा कि वह मर जाएगी। वह उ
नंगा कर लकड़ी की सूली पर कस देगा और उसके सारे शरीर को ती
में वेध देगा। वह उसके साथ बलात्कार करेगा और फिर उसका ग
काट डालेगा। अब पहले से भी अधिक उसको समझ में आ गया था
वह इस लड़की से क्यों घृणा करता था। वह उससे घृणा करता था
क्योंकि वह सुन्दर थी, तरुण थी और काम की भावनाओं से रहित थी
क्योंकि वह उसे अपनी पर्यंकशायिनी बनाना चाहता, लेकिन वह ऐस
कभी नहीं कर सकेगा। उसकी पतली कमर, उसे ऐसा लगता था, अपनी
बाहों में लपेटने के लिए विन्स्टन को आमंत्रित करती थी, परन्तु वहां
बंधी नीली पेटी उसके कौमार्य व्रत का बोध दिलाने वाली प्रतीक थी।

अब घृणा-प्रचार की उस फिल्म का चरम दृश्य दिखलाया जा रहा
है। गोल्डस्टीन की आवाज़ बिलकुल भेड़ के मिमियाने जैसी हो गई थी
और क्षण-भर बाद ही शकल भी भेड़ जैसी हो गई। इसके बाद भेड़ की
शकल यूरेशियन सैनिक की शक्ल में खो गई। वह आगे बढ़ रहा था।
उसकी मशीनगन आग उगल रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह दर्शकों
पर चला रहा है और सामने की सीट में बैठे कुछ दर्शक सचमुच पीछे
की तरफ झुक गए। तभी लोगों ने चैन की सांस ली जब दुश्मन की

बात सच [illegible] थी। [illegible] मानो [illegible]
था कि वास्तव [illegible] हुई भी या नहीं। इस प्रकार की घटना का
कोई पता तो होता ही नहीं था। उससे केवल यही मालूम हुआ कि वह
जान गया कि जिस प्रकार वह अन्दर ही अन्दर पार्टी का विरोधी है
ठीक उसी प्रकार अन्य लोग भी हैं। गुप्त षड्यन्त्र की अफवाह शायद
ठीक है। सम्भवतः गोल्डस्टीन की सचमुच कोई पार्टी है। परन्तु अनेक
गिरफ्तारियों, इकबाली बयानों और फाँसियों के बाद भी इस प्रकार
का दल बना रहेगा—ऐसा असम्भव ही जान पड़ता था। कभी उसे
विश्वास होता था और कभी नहीं होता था। कोई प्रमाण नहीं था।
हलकी-सी झलक मिलती थी जिसका कुछ अर्थ हो भी सकता था और
नहीं भी हो सकता था। कभी दो आदमियों की बातचीत सुनाई दे जाती
थी, कभी पाखानों की दीवारों पर कुछ लिखा दिखलाई पड़ जाता था,
कभी दो अजनबी मिलकर इस प्रकार हाथ उठाते थे जिससे पता लग
जाता था कि वे एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। परन्तु यह सब अनुमान-मात्र
ही था। बहुत सम्भव है, सब कपोलकल्पना ही हो। इसके बाद उसने
ओ' ब्रायन की ओर नहीं देखा और वह चुपचाप अपनी कोठरी में आकर
बैठ गया। एक या दो सेकेण्ड के लिए उनकी नजरें सदिग्धावस्था में एक

लापता होते थे। गायब आदमी का नाम हर रजिस्टर से मिटा दिया जाता था। ऐसा हर कागज मिटा दिया जाता जिसमें नाम-मात्र के लिए भी गायब आदमी का उल्लेख होता था। गायब आदमी के अस्तित्व से ही इन्कार कर दिया जाता था और फिर उसे भुला दिया जाता था। आप मार दिए जाते, कत्ल कर दिए जाते और इस सबके लिए एक ही वाक्य था, 'भाप बनाकर उड़ा दिया जाना'।

कुछ समय के लिए उसे दौरा-सा आ गया और वह उसी झोंक में लिखता चला गया :

'वे मुझे गोली मार देंगे, मुझे इसकी चिन्ता नहीं। वे मेरी गर्दन के पिछले हिस्से में गोली मारेंगे मुझे इसकी भी परवाह नहीं। बड़े भाई का नाश हो"'।'

वह कुर्सी पर निढाल होकर गिर गया। इसके एक क्षण बाद ही वह ज़ोर से चौंक पड़ा। तभी दरवाज़े पर थपथपाने की आवाज़ सुनाई दी।

आ गए ! वह चूहे की भांति चुप होकर बैठ गया। फिर थपथपाहट हुई। देर करना और भी खतरनाक होगा, उसने सोचा, उसका हृदय ज़ोरों से धक्-धक् कर रहा था। परन्तु मुंह पर आदतन कोई भाव नहीं था। वह उठा और भारी कदमों से दरवाज़े की ओर चला।

२

उसने लम्बी सांस ली और दरवाज़ा खोल दिया। दरवाज़ा खोलते ही उसका दम में दम आ गया। उसके सामने सफेद चेहरे की, उड़ते बालों वाली औरत खड़ी थी। उसके चेहरे पर झुर्रियां थीं।

'ओह कामरेड !' उसने सूखी और खरखरी आवाज़ में कहा, 'मुझे कुछ ऐसा लगा कि आप कमरे में लौट आए हैं। क्या आप मेरी रसोई में चलकर ज़रा नाली देख लेंगे ? वह रुक गई है, शायद कुछ फंस गया है उसमें'"'

यह श्रीमती पारसन्स थी—विन्स्टन के पड़ोसी की पत्नी। उसकी उमर कोई तीस वर्ष की होगी। लेकिन वह अपनी उमर से अधिक लगती थीं। उन्हें देखकर ऐसा लगता था कि उनके चेहरे की झुर्रियों में

पुलिस से भी अधिक पार्टी की स्थिरता पारसन्स जैसे व्यक्तियों पर ही निर्भर थी। पैंतीस वर्ष की अवस्था में भी वह यूथलीग नहीं छोड़ना चाहता था। वह जासूस का काम भी कानूनी अवधि से एक वर्ष अधिक करता रहा था। खेल-कूद की समितियों, सामुदायिक भ्रमणों, प्रदर्शनों, बचत अभियानों तथा अन्य स्वयंसेवा के कार्यों में वह सबसे आगे रहता था। वह बड़ी शान से मुंह में पाइप दबाए हुए बताता था कि पिछले चार वर्षों से एक भी शाम ऐसी नहीं गुजरी है जब वह सामुदायिक केन्द्र पर न गया हो। उसके शरीर से पसीने की बदबू बराबर आती रहती थी जिससे उसके श्रमपूर्ण जीवन का आभास मिल जाता था। यह बदबू उसके चले जाने के बाद भी वातावरण में छाई रहती थी।

'आपके यहां पेचकस है ?' विन्स्टन ने पूछा।

'शायद हो, श्रीमती पारसन्स एकदम निराश-सी हो गईं, 'बच्चों ने इधर-उधर...।'

कमरे में बच्चों के घुसते ही जूतों की और सैनिक धुन पर कंघा और कागज बजाने की आवाज फिर से आई। श्रीमती पारसन्स जिस औजार की आवश्यकता थी वह ले आईं। विन्स्टन ने बोल्ट खोलकर पानी निकल जाने दिया। इसके बाद पाइप में से बालों की गूंथ निकालकर फेंक दी जिसकी वजह से पानी रुक गया था। उसने अपने हाथ धोए और फिर बगल के कमरे में चला गया।

'अपने हाथ ऊपर उठाओ !' जंगलियों की तरह चिल्लाते हुए किसीने कहा।

एक खूबसूरत बच्चा खिलौने की पिस्तौल हाथ में लिए मेज के नीचे से निकल आया था और उसे धमका रहा था। उससे दो साल छोटी उसकी बहन भी हाथ में लकड़ी लिए वैसा ही इशारा कर रही थी जैसा उसका भाई। दोनों नीले निक्कर, भूरी कमीज पहने थे और लाल रूमाल बांधे थे। यह जासूसों की पोशाक थी। विन्स्टन ने हाथ ऊपर कर दिए, लेकिन बच्चों के रंग-ढंग में कुछ ऐसी बात थी जिससे लगता ... नहीं है।

...।' लड़का बोला, 'तुम्हारे विचार अपरा- ... जासूस हो। मैं तुम्हें भाप बनवा के उड़वा ... में भिजवा दूंगा।'

हुम, नकली राइफल के साथ सैनिक अभ्यास, बड़े भाई की स्तुति—यह सब उन्हें शानदार खेल-सा लगता था। उनकी सारी भयंकरता, राज्य के शत्रुओं, विदेशियों, तोड़ फोड़ करने वालों, अपराधी विचार रखने वालों के विरुद्ध होती थी। शायद ही कोई ऐसा सप्ताह व्यतीत होता हो जब टाइम्स में इस आशय की एक न एक खबर न छपती हो कि किस प्रकार कुछ पार्टी-विरोधी बातें सुनकर किसी बच्चे ने अपने मां-बाप को पुलिस के हवाले कर दिया। ऐसे बच्चों को 'वीर बालक' की उपाधि दी जाती थी।

उसकी गरदन का दर्द धीरे-धीरे दूर हो गया। उसने अपनी कलम उठा ली और सोचने लगा कि क्या वह कुछ और भी लिख सकता है। अकस्मात् उसे ओ'ब्रायन का फिर ध्यान आ गया।

वर्षों पूर्व—सम्भवतः सात साल पहले उसने सपने में देखा था कि वह एक बिलकुल अंधेरे कमरे में चल रहा है और उसके बगल में बैठे किसी आदमी ने कहा था, 'अब हम लोग दुबारा ऐसी जगह मिलेंगे, जहां अंधेरा न होगा।' यह बात बड़ी शांतिपूर्वक कही गई थी। आज्ञा जैसा उसमें कोई भाव नहीं था। वह रुका नहीं था और चलता चला गया था। सबसे अजीब बात तो यह थी कि उस सपने में उन शब्दों का उसपर कोई असर नहीं हुआ था। परन्तु बाद में उसने अनुभव किया था, वे शब्द उसने ओ'ब्रायन के कण्ठस्वर में सुने थे।

विन्स्टन ने आज सवेरे ओ'ब्रायन की आंखों में जो चमक देखी थी उसके बाद भी वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि वह आदमी उसका मित्र है या शत्रु।

टेलीस्क्रीन से आने वाली आवाज अकस्मात् रुक गई। बिगुल बजने की स्पष्ट ध्वनि वातावरण में गूंज गई। इसके बाद टेलीस्क्रीन पर कोई कह रहा था :

'सुनिए, कृपया ध्यान से सुनिए!! मलाबार से यह समाचार अभी-अभी मिला है। दक्षिण भारत में हमारी सेनाओं ने विजय प्राप्त कर ली है। मैं सरकारी तौर पर यह बात कह रहा हूं कि अब युद्ध समाप्त होने में अधिक विलम्ब नहीं है। यह समाचार अभी-अभी मिला है।'

विन्स्टन ने मन ही मन कहा, अब कोई खराब समाचार मिलने

जाता है। इसके बाद हुआ भी वही। पहले तो यूरेशियन सेना के हताहतों की लम्बी-चौड़ी सख्या बतलाई गई, फिर घोषणा की गई कि आगामी सप्ताह से चॉकलेट का राशन तीस ग्राम से घटाकर बीस ग्राम कर दिया जाएगा।

विन्स्टन को फिर डकार आई। शराब का नशा उतर रहा था। उसपर खुमारी-सी छा रही थी। विन्स्टन खिड़की की ओर चला गया। अब फिर उसकी पीठ टेलीस्क्रीन की ओर थी। बाहर अब भी ठडक थी। मौसम साफ था। कहीं दूरी पर राकेट गिरने की गूजती हुई आवाज सुनाई पडी। हर सप्ताह आजकल लन्दन मे बीस या तीस राकेट गिर रहे थे।

उसे ऐसा लग रहा था कि यह समुद्र की तलहटी के किसी जगल मे घूम रहा है। वह दानवो की दुनिया में है और स्वय भी दानव बन गया है। इस बात का क्या प्रमाण था कि एक भी जीवित मनुष्य उसकी ओर था ? यह जानने का उसके पास क्या साधन था कि पार्टी की सत्ता सर्वदा नही बनी रहेगी ? उत्तरस्वरूप उसको मत्रालय की इमारत पर ये तीन नारे फिर दिखलाई पड गए

युद्ध ही शान्ति है !
स्वतन्त्रता ही दासता है !
अज्ञान ही शक्ति है !

उसने पच्चीस सेंट का एक सिक्का जेब से निकाला। सिक्के पर भी वे ही नारे छोटे-छोटे अक्षरो मे लिखे थे। दूसरी तरफ बड़े भाई की शकल थी। आप कहीं जाइए, सिक्को से, टिकटो से, किताबो की जिल्दों से, पोस्टरो और सिगरेट पैकेटो के कागजो से—हर जगह से बड़े भाई की शक्ल आपको घूरती नजर आती थी। सोने-जागने, खाते-पीते, काम करते, घर-बाहर, स्नानागार मे या पलग पर हर जगह वे ही आंखें थीं। उनसे पीछा नही छूटता था। आपका अपना कुछ भी नही था—केवल मस्तिष्क के नन्हे-से आन्तरिक क्षेत्र को छोडकर।

वह सोच रहा था—यह डायरी आखिर वह किसके लिए लिख रहा है ? भविष्य के लिए—अतीत के लिए; ऐसे युग के लिए, जो कल्पनामात्र ही है। उसके सामने मौत नही—अस्तित्व का ही जड़मूल से उन्मूलन है। डायरी को जलाकर राख कर दिया जाएगा और उसे भाप बनाकर

उड़ा दिया जाएगा। जो कुछ उसने लिखा है उसे केवल विचार नियंत्रक पुलिस डायरी नष्ट करने के पूर्व पढ़ेगी। इसके बाद उसकी स्मृति तक शेष नहीं रहेगी। आप भविष्य के लिए क्या कर सकते हैं? विशेष कर उस समय जब आपका नामोनिशान तक नहीं छोड़ा जाए, आपका अनामी सन्देश तक न लिखा रहने दिया जाए?

टेलीस्क्रीन ने चौदह (दिन के दो) बजाए। अब दस मिनट के अन्दर उसे वापस लौट जाना है। ढाई बजे उसे दफ्तर में काम पर होना चाहिए।

घड़ी के घंटे सुन उसे फिर साहस हो आया था। एकांत में वह भूत की तरह सत्य बात कह रहा था पर उसकी वह बात सुनने वाला कोई न था; लेकिन उसे लग रहा था, जब तक वह अपनी बात कहता जाएगा, वह कड़ी, अतीत से भविष्य की ओर ले जाने वाली कड़ी, टूटेगी नहीं। वह मेज पर गया। उसने दवात में कलम डुबोया और लिखा :

'भविष्य या अतीत को—उस वक्त को जब विचारों की स्वतन्त्रता होगी, जब मनुष्य मनुष्य से भिन्न मत भी रख सकेगा—जब सत्य का अस्तित्व बना रह सकेगा और जो कर दिया जाएगा उसे मिटाया न जा सकेगा।

'एकरूपता के युग से, एकान्त के युग से, बड़े भाई के युग से और द्वैध-विचारों के युग से—सबका अभिनन्दन।'

वह सोच रहा था कि वह मर चुका है। वह सोच रहा था, अब उसके विचार व्यवस्थित रूप से दिमाग में आ रहे हैं। अब उसने निर्णयात्मक कदम उठा लिया है। हर कार्य का परिणाम उस कार्य ही में सन्निहित होता है।

अब चूंकि उसने अपने-आपको मृत मान लिया था, इसलिए अब उसके लिए यह जरूरी था कि वह जितने दिन सम्भव हो जिए। उसकी दो उंगलियों में स्याही लग गई थी। स्याही के ये दाग फंसा सकते थे। मंत्रालय में कोई भी उसकी उंगलियों में से ये दाग देखकर सोच सकता था कि वह भोजन-मध्यान्तर में क्या लिखता रहा था और क्यों लिख रहा था? लिखने के लिए उसने पुराने किस्म के कलम का उपयोग क्यों किया? और फिर वह शकालु व्यक्ति सम्बन्धित अधिकारियों को सूचित ... । उसने बाथरूम में जाकर साबुन से मलकर ... —रेतने वाला कागज था। उसके सगाने

यह वह सपना था, जिसमें स्वप्न की सारी विशेषताएं थीं और यह उनके बौद्धिक जीवन का अंग बन गया था। जागने पर नये-नये विचार उसके दिमाग में आते थे। विन्स्टन जानता था कि तीस वर्ष पूर्व उसकी माँ और बहन का देहान्त अत्यन्त दुखान्त परिस्थितियों में हुआ। अब वैसी मौत नहीं हो सकती। उसका खयाल था कि दुखान्त घटनाएं अतीत की वस्तु हैं। उस युग की जब व्यक्ति का कुछ अपना निजी जीवन था, प्रेम था, मित्रता थी और परिवार का एक सदस्य दूसरे सदस्य की मदद के लिए कारण जाने बिना सहायता करने के लिए तैयार रहता था। आज वह बात सम्भव नहीं है। आज भय था, घृणा थी, पीड़ा थी, परन्तु मानवीय भावनाओं की गरिमा नहीं थी, किसीको किसीके लिए गहरा क्लेश नहीं होता था।

सहसा उसे लगा कि वह ग्रीष्म की संध्या को हरी घास के मैदान पर खड़ा है। उसपर डूबते सूरज की किरणें पड़ रही हैं। उसने इस दृश्य की कल्पना इतनी बार की थी कि अब उसे यह सन्देह होने लगा था कि यथार्थत: उसने उक्त दृश्य देखा भी था या नहीं! वह जाग्रत् अवस्था में उसे सोने का देश कहता था। सड़क पर दोनों ओर दूर तक फलों के वृक्ष थे। इधर-उधर छोटे-मोटे टीले थे। हलकी हवा में पेड़ों की टहनियां ऐसी हिलती नजर आती थीं जैसे किसी रमणी की केशराशि वायु के झोंके से उड़ रही थी। कुछ दूरी पर हालांकि दिखलाई नहीं पड़ रहा था, कल-कल करती हुई मंथर गति से कोई नदी बहती जा रही थी। इसके आसपास झीलों में बतखें तैरती दिखती थीं।

गहरे काले बालों वाली युवती उसकी ओर आती-सी लगती थी। क्षण-भर ही में उसे लगता कि उस युवती ने अपने कपड़े फाड़ डाले हैं और उन्हें उपेक्षित भाव से एक ओर फेंक दिया है। युवती की त्वचा कोमल, चिकनी और शुभ्र है। उसके कपड़े उतार फेंकने के ढंग से लगता था कि उसने बड़ी शिष्टता और लापरवाही से वर्तमान संस्कृति और सभ्यता की सारी परम्पराओं को नष्ट कर डाला है। उसे लगता था कि सारी वर्तमान विचार-व्यवस्था, बड़े भाई और पार्टी को इसी प्रकार की साधारण क्रिया से बिलकुल नष्ट-अस्तित्वहीन किया जा सकता था। विन्स्टन जागा तो उसके मुंह पर शेक्सपियर का नाम था।

टेलीस्क्रीन से सीटी बज रही थी। यह सीटी इसी प्रकार तीस

सेकेण्ड तक बजती रही। सवा सात बजे थे। दफ्तर जाने वाले लोगों के लिए उठने का समय था। विन्स्टन बिस्तर से उठा। वह नंगा था। पार्टी के साधारण सदस्यों को वर्ष में तीन हजार वस्त्र-कूपन मिलते थे। पाजामे लेने में छः सौ कूपन खर्च हो जाते थे। उसने निकर और बनियान उठा ली। ये कपड़े कुरसी पर पड़े थे। तीन मिनट बाद व्यायाम का कार्यक्रम शुरू होने वाला था। दूसरे ही क्षण उसे खांसी का दौरा उठ आया। उसे सुबह उठते ही खांसी का यह दौरा प्रायः प्रतिदिन उठ आता था। खांसी से उसका दम इतना घुट गया कि उसे लेट जाना पड़ा। कई बार गहरी सांस लेने पर उसका दम वापस लौट सका। खांसी से उसकी नसें फूल गई थीं। टखने की नस वाला फोड़ा खुजला रहा था।

'तीस से चालीस की आयु वाले लोग,' एक जनानी आवाज़ टेली-स्क्रीन से चीखती-सी आई, 'तीस से चालीस की आयुवाले लोग अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो जाएं।'

विन्स्टन उछलकर टेलीस्क्रीन के सामने आ खड़ा हुआ। टेलीस्क्रीन में एक तरुण युवती पहलवानी पोशाक और खिलाड़ियों के जूते पहने खड़ी थी।

'हाथ झुकाइए और फैलाइए।' वह बोली, 'सब लोग मेरा अनुकरण करें। एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार! कामरेड आइए, आइए मेरा साथ दीजिए। ज़रा तेज़ी से। एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार!'

अभी खांसी के दौरे का दर्द विन्स्टन भुला नहीं पाया था। वह सपने भी पूरी तरह नहीं भूला था, किन्तु व्यायाम की तालमय गति के कारण उसका ध्यान उस तरफ से हटा। वह मशीन की तरह अपने हाथ आगे-पीछे फेंक रहा था। और अपने मुंह पर ऐसा भाव बनाए था जैसे उसे व्यायाम में आनन्द आ रहा हो, क्योंकि ऐसा भाव रखने में ही खैर थी। परन्तु वह अपने बचपन की याद भी करता जा रहा था। यह बड़ा कठिन था। उसे सन् १९५० के पहले की कोई बात साफ-साफ याद नहीं थी। बड़ी-बड़ी घटनाएं उसे याद थीं लेकिन उनका एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं था। बीते जीवन के वातावरण का ध्यान अवश्य आ जाता था। बीच-बीच में ऐसा अधकाल आ जाता था जिसके बारे में उसे कुछ भी याद नहीं पड़ता था। उस समय हर चीज़ भिन्न थी। देशों के नाम

यह वह सपना था, जिसमें स्वप्न की सारी विशेषताएँ थीं और यह उनके बौद्धिक जीवन का अंग बन गया था। जागने पर नये-नये विचार उसके दिमाग में आते थे। विन्स्टन जानता था कि तीस वर्ष पूर्व उसकी माँ और बहन का देहान्त अत्यन्त दुखान्त परिस्थितियों में हुआ। अब वैसी मौत नहीं हो सकती। उसका खयाल था कि दुखान्त घटनाएँ अतीत की वस्तु है। उस युग की जब व्यक्ति का कुछ अपना निजी जीवन था, प्रेम था, मित्रता थी और परिवार का एक सदस्य दूसरे सदस्य की मदद के लिए कारण जाने बिना सहायता करने के लिए तैयार रहता था। आज वह बात सम्भव नहीं है। आज भय था, घृणा थी, पीड़ा थी, परन्तु मानवीय भावनाओं की गरिमा नहीं थी, किसीको किसीके लिए गहरा क्लेश नहीं होता था।

सहसा उसे लगा कि वह ग्रीष्म की सन्ध्या को हरी घास के मैदान पर खड़ा है। उसपर डूबते सूरज की किरणें पड़ रही हैं। उसने इस दृश्य की कल्पना इतनी बार की थी कि अब उसे यह सन्देह होने लगा था कि यथार्थतः उसने उक्त दृश्य देखा भी था या नहीं! वह जाग्रत् अवस्था में उसे सोने का देश कहता था। सड़क पर दोनों ओर दूर तक फलों के वृक्ष थे। इधर-उधर छोटे-मोटे टीले थे। हलकी हवा में पेड़ों की टहनियां ऐसी हिलती नजर आती थी जैसे किसी रमणी की केशराशि वायु के झोंके से उड़ रही थी। कुछ दूरी पर हालांकि दिखलाई नहीं पड़ रहा था, कल-कल करती हुई मंथर गति से कोई नदी बहती जा रही थी। इसके आसपास झीलों में बतखें तैरती दिखती थीं।

गहरे काले बालों वाली युवती उसकी ओर आती-सी लगती थी। क्षण-भर ही में उसे लगता कि उस युवती ने अपने कपड़े फाड़ डाले हैं और उन्हें उपेक्षित भाव से एक ओर फेंक दिया है। युवती की त्वचा कोमल, चिकनी और शुभ्र है। उसके कपड़े उतार फेंकने के ढंग से लगता था कि उसने बड़ी शिष्टता और लापरवाही से वर्तमान संस्कृति और सभ्यता की सारी परम्पराओं को नष्ट कर डाला है। उसे लगता था -- कि सारी वर्तमान विचार-व्यवस्था, बड़े भाई और पार्टी को -
की साधारण क्रिया से बिलकुल नष्ट [illegible]
विन्स्टन जागा तो उसके मुंह पर शेक्सपियर [illegible]

टेलीस्क्रीन से सीटी बज रही थी।

सेकेण्ड तक बजती रही। सवा सात बजे थे। दफ्तर जाने वाले लोगों के लिए उठने का समय था। विन्स्टन बिस्तर से उठा। वह नंगा था। पार्टी के साधारण सदस्यों को वर्ष में तीन हजार वस्त्र-कूपन मिलते थे। पाजामे लेने में छः सौ कूपन खर्च हो जाते थे। उसने निकर और बनियान उठा ली। ये कपड़े कुरसी पर पड़े थे। तीन मिनट बाद व्यायाम का कार्यक्रम शुरू होने वाला था। दूसरे ही क्षण उसे खांसी का दौरा उठ आया। उसे सुबह उठते ही खांसी का यह दौरा प्रायः प्रतिदिन उठ आता था। खांसी से उसका दम इतना घुट गया कि उसे लेट जाना पड़ा। कई बार गहरी सांस लेने पर उसका दम वापस लौट सका। खांसी से उसकी नसें फूल गई थी। टखने की नस वाला फोड़ा खुजला रहा था।

'तीस से चालीस की आयु वाले लोग,' एक ज़नानी आवाज़ टेली-स्क्रीन से चीखती-सी आई, 'तीस से चालीस की आयुवाले लोग अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो जाएं।'

विन्स्टन उछलकर टेलीस्क्रीन के सामने आ खड़ा हुआ। टेलीस्क्रीन मे एक तरुण युवती पहलवानी पोशाक और खिलाड़ियों के जूते पहने खड़ी थी।

'हाथ झुकाइए और फैलाइए।' वह बोली, 'सब लोग मेरा अनुकरण करें। एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार! कामरेड आइए, आइए मेरा साथ दीजिए। ज़रा तेज़ी से। एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार!'

अभी खासी के दौरे का दर्द विन्स्टन भुला नही पाया था। वह सपने भी पूरी तरह नही भूला था, किन्तु व्यायाम की तालमय गति के कारण उसका ध्यान उस तरफ से हटा। वह मशीन की तरह अपने हाथ आगे-पीछे फेंक रहा था। और अपने मुह पर ऐसा भाव बनाए था जैसे उसे व्यायाम मे आनन्द आ रहा हो, क्योंकि ऐसा भाव रखने में ही खैर थी। परन्तु वह अपने बचपन की याद भी करता जा रहा था। यह बड़ा कठिन था। उसे सन् १९५० के पहले की कोई बात साफ-साफ याद नही थी। बड़ी-बड़ी घटनाएं उसे याद थीं लेकिन उनका एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध नही था। बीते जीवन के वातावरण का ध्यान अवश्य आ जाता था। बीच-बीच मे ऐसा अंधकाल आ जाता था जिसके बारे में उसे कुछ भी याद नही पड़ता था। उस समय हर चीज़ भिन्न थी। देशो के नाम

और उनके नक्शे भिन्न थे। उदाहरण के लिए पुराने जमाने में जिस देश का नाम इंग्लैण्ड या ब्रिटेन था उसे अब एयरस्ट्रिप नंबर एक कहा जाता था। परन्तु प्राचीन काल में भी शायद लन्दन को लन्दन ही कहा जाता।

विन्स्टन को यह याद था कि पुराने काल में उसका देश अक्सर युद्ध करता था, लेकिन शांति-काल भी होता था और काफी लम्बा होता था। उसके बचपन में, जब एक हवाई हमला हुआ, तो उसके कारण सभी लोग आश्चर्य में पड़ गए थे। सम्भवतः यह उस समय की बात है जब कॉलचेस्टर पर अणुबम गिरा था। उसे हवाई हमले की बात तो याद नहीं थी लेकिन उसे यह अवश्य खयाल था कि उसके पिता उसका हाथ पकड़कर उसे नीचे, और नीचे, और नीचे ले गए थे। जमीन के नीचे वे घुमावदार सीढ़ियों से उतरे थे। उतरते-उतरते वह इतना थक गया था कि रोने लगा था और उसकी वजह से सबको रुककर थोड़ा सुस्ताना पड़ा था। उसकी मां उनके पीछे, बहुत पीछे चली आ रही थी, कुछ सोती-सी, ऐसी जैसे सपने में चल रही हो। अन्त में वे भूगर्भ रेलवे के प्लेटफार्म आ गए थे, जहां बड़ा शोर मच रहा था।

लगभग उसी समय से युद्ध बराबर चलता रहा था। युद्ध का एक ही रूप रहा हो, सो बात नहीं थी। उसके बचपन में, कई महीनों तक सड़कों पर लड़ाई चलती रही थी। कुछ लड़ाइयों के दृश्य तो उसे अब तक याद थे। परन्तु सम्पूर्ण काल का इतिहास लिखना असम्भव था। कारण, किसी भी तरह का कोई लिखित शब्द इस विषय पर उपलब्ध ही नहीं था—जो कुछ सामग्री उपलब्ध थी वह सब वर्तमान राजनीतिक स्थिति के सम्बन्ध में ही थी। इस समय अर्थात् सन् १९८४ में ओशनिया की लड़ाई यूरेशिया से हो रही थी। ईस्ट एशिया से मैत्री थी। किसी भी सार्वजनिक सभा या निजी बातचीत में कभी कोई इससे भिन्न बात कहता ही नहीं था। लेकिन विन्स्टन जानता था कि अभी पिछले चार वर्षों से ओशनिया यूरेशिया से युद्ध कर रहा था। परन्तु इसके पूर्व ईस्ट एशिया से लड़ाई थी और यूरेशिया से मित्रता थी।

पार्टी का कहना था कि यूरेशिया से ओशनिया की कभी दोस्ती नहीं रही। परन्तु वह, विन्स्टन स्मिथ, जानता था कि अभी चार वर्ष पूर्व [illegible] मित्र था। परन्तु उसके ज्ञान को पुष्ट करने का कोई प्रमाण ना [illegible] उसे उसकी स्मृति थी और उससे यह आशा की जाती थी

बताना था कि सबसे पहले सन् १९६० और १९७० के बीच बड़े भाई का नाम सुनाई पड़ा था। परन्तु निश्चय से कुछ कहना असम्भव था। पार्टी के इतिहास में इनको क्रांति का नेता और इसका रक्षक बताया गया था और बताया जाता था कि शुरू से ही बड़े भाई पार्टी के इतने बड़े नेता थे जितने आज हैं। परन्तु कभी-कभी कोई झूठ फिर भी बाहर निकल सकते थे। उदाहरण के लिए पार्टी की किताबों में लिखा था, हवाई जहाज का आविष्कार पार्टी ने किया। परन्तु यह झूठ था। उसे याद था कि हवाई जहाज उसके बचपन में भी थे। परन्तु आप कुछ भी प्रमाणित नहीं कर सकते।

'स्मिथ !' टेलिस्क्रीन से एक कर्कशा की जैसी आवाज चीखी। '६०७९ स्मिथ डब्ल्यू ! हां आप ! जरा नीचे झुकिए, कृपा कर। आप इससे कहीं अच्छी तरह व्यायाम कर सकते हैं। आप कोशिश नहीं कर रहे हैं। और नीचे। अब ठीक है कॉमरेड। अब आराम से खड़े हो जाइए। सब लोग आराम से खड़े हो जाएं। अब मुझे देखिए।'

विन्स्टन के सारे शरीर से गरम-गरम पसीना निकल रहा था। चेहरे पर अब भी कोई भाव नहीं था। हताश कभी मत दिखाई पड़िए। कभी मुनमुनाइए मत। आंखों से प्रकट हुआ एक भाव मौत को निमंत्रण दे सकता था। वह देख रहा था। शिक्षिका ने अपने हाथ सिर के ऊपर उठा लिए थे। इसके बाद वह झुकी और उसने पैरों का अंगूठा छू लिया। इस व्यायाम को उसने बड़ी दक्षता और सफाई से किया।

'इस तरह कॉमरेड ! मैं चाहती हूं आप इस तरह यह व्यायाम करें। फिर मुझे देखिए। मैं उनतालीस वर्ष की हूं और मेरे चार बच्चे हैं। अब देखिए।' वह फिर झुकी। 'देखिए, कैसे मेरे घुटने झुक रहे हैं। आप सब चाहें तो इसी तरह कर सकते हैं।' उसने सीधे खड़े होते हुए कहा, 'पैंतालीस वर्ष से कम आयु वाला हर आदमी अपने पैर के अंगूठे छू सकता है। हम सबको मोर्चों पर जाकर लड़ने का मौका तो नहीं मिल सकता, परन्तु हम सब शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ तो रह सकते हैं। देश के उन सैनिकों को याद करिए जो मलाबार मोर्चे पर लड़ रहे हैं ! तैरते हुए किलों के नाविकों का स्मरण करिए। उन्हें किन मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। अब फिर कोशिश करिए। अब पहले से बहुत अच्छे, कॉमरेड ! बहुत अच्छे !' शिक्षिका ने विन्स्टन को बिना घुटने झुकाए

पर के अंगूठे छू लेने पर उत्साहित करते हुए कहा। वह ऐसा कई वर्षों में पहली बार कर पाया था।

४

विन्स्टन ने धीरे से, इतने धीरे से कि पास लगी टेलीस्क्रीन तक भी उसकी आवाज़ न पहुंच सके, ठंडी आह भरते हुए दिन का काम शुरू किया। उसने सामने रखा लेखनयंत्र (स्पीकराइट) अपने पास खींच लिया। चश्मा लगा लिया और लेखनयंत्र को रूमाल से झाड़कर साफ किया। उसकी मेज के दाहिनी ओर ट्यूब से निकले हुए गोले पड़े थे। उन्हें खोलकर उसने उनमें रखे कागज़ निकाले।

दफ्तर के जिस कमरे में वह बैठता था उस कमरे में तीन छेद थे। लेखनयंत्र की दाहिनी ओर लिखित सन्देशों का छिद्र था। बाईं ओर अखबारों के लिए कुछ बड़े मुंह वाला छेद था। बगल की दीवार में विन्स्टन से एक हाथ से भी कम दूरी पर एक और छेद था जिसमें तार लगे थे। आखिरी छेद रद्दी कागज़ों को नष्ट करने के लिए था। ऐसे हज़ारों छेद पूरी इमारत के हज़ारों कमरों में थे। कमरों से बाहर बरामदों में भी थे। हर रद्दी कागज़ इसमें डाल दिया जाता था। डालते ही कागज़ उड़ता हुआ उन अगनी भट्टियों में पहुंच जाता था जो इमारत में नीचे कहीं थीं।

विन्स्टन ने गोले में से निकले कागज़ों को देखा। हरएक में दो पंक्तियां थीं। इनमें नई भाषा के अनेक शब्द थे। मंत्रालय के नोटों में इसी तरह की भाषा चलती थी। सन्देश इस प्रकार थे

टाइम्स १७ ३ ८४ ब०भा० भाषण अशुद्ध रिपोर्ट अफ्रीका ठीक करो।

टाइम्स १९.१२ ८३ भविष्योक्ति बाई पी चौथा क्वार्टर ८३ अशुद्ध

तक कोई चीज़ बना ही रहता था और न [illegible]
अखबार तक जोड़ा भी [illegible] न हुआ हो। हर आदमी जानता था कि
ओशनिया की भाषा में [illegible] [illegible] रही थी। हर प्रकार
के उत्पादन की बड़ी [illegible] थी। हर वस्तु वाली [illegible] में भी [illegible]
जिसमें बने तक ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता था।

इस लम्बे हॉल में एक भी खिड़की नहीं थी। हॉल में बैठने के लिए कमरों की दो पंक्तियां थीं। टेलिस्क्रीन में बोलने की तथा कागज़ों की आवाज़ बराबर आ रही थी। हॉल में बैठने वाले लोगों में से दर्जन से भी अधिक ऐसे व्यक्ति थे जिनके नाम तक विन्स्टन को नहीं ज्ञात थे। हालांकि वह उनको प्रतिदिन बरामदे में आता-जाता देखता और दो मिनट वाली घृणा-फिल्म में उनको हाथ-पैर फेंकते तथा तरह-तरह की मुद्राएं बनाते भी देखता था। इसके बगल वाली अधेड़ आयु की स्त्री समाचारपत्रों से केवल उन लोगों के नाम प्रतिदिन छांटती रहती थी जिनको भाप बनाकर उड़ा दिया गया था। प्रतिदिन उसका यही काम था। जो आदमी इस प्रकार गायब हो जाते थे उनका कोई भौतिक अस्तित्व भी शेष नहीं रखा जाता था। उस औरत का पति भी कुछ वर्ष पूर्व इसी प्रकार समाप्त कर दिया गया था। कुछ दूर एम्पिलफोर्थ नाम का आदमी कविताओं में संशोधन किया करता था। रिकार्ड विभाग का यह हॉल छोटा-सा भाग था। ऊपर, नीचे, आगे, पीछे असंख्य कर्मचारी तरह-तरह के कामों में लगे थे। बड़े-बड़े प्रेस थे, उपसंपादक थे, टाइप

निपटा दिया। फिल्म देरी आने के बाद जब विन्स्टन काम पर वापस लौटा तो उसने नई भाषा की डिक्शनरी उठा ली और अपना चश्मा पोंछने के बाद दिन का मुख्य कार्य करने जुट गया।

दफ्तर का अधिकांश कार्य अंततः जटिल दिनचर्या का अंग था, किन्तु कुछ कार्य ऐसे भी थे जो इतने नाजुक होते थे कि उनके करने में वह ऐसा डूब जाता था जैसे कोई किसी गणित की समस्या को हल करने में अपना आपा खो देता है। इन कार्यों में 'इंगसोक' के सिद्धान्तों का गहरा ज्ञान तो आवश्यक होता ही था, साथ ही इसकी जानकारी भी जरूरी होती थी कि पार्टी आपसे क्या कहलवाना चाहती है, यह आप समझें। विन्स्टन इस प्रकार का काम करने में बड़ा चतुर था। बहुधा उससे टाइम्स के सम्पादकीय तक को शुद्ध कराया जाता था। पहले जो सन्देश उसने अलग उठाकर रख दिया था, अब विन्स्टन ने उसे खोला। वह इस प्रकार था :

टाइम्स ३. १२. ८३ ब० भा० दिवसादेश ठीक नहीं अस्तित्वहीन व्यक्ति पूरा लिखो, ऊपर दिखलाओ।

पुरानी या स्पष्ट भाषा में इसी सन्देश को इस तरह लिखा जाता :

'बड़े भाई के दिवसादेश की रिपोर्ट ३ दिसम्बर, १९८३ के टाइम्स के अंक में ठीक नहीं छपी है। इसमें अस्तित्वहीन व्यक्ति की चर्चा है। इसे दुबारा लिखो और अपने ऊपर के अधिकारियों के पास देखने के लिए भेजो।'

विन्स्टन ने सम्बन्धित लेख पढ़ा। इसमें एफ०एफ० सी०सी० नाम की संस्था के कार्यों की तारीफ की गई थी। यह संस्था तैरते किलों के नाविकों को सिगरेट तथा अन्य प्रकार की सामग्री सप्लाई करती थी। अन्तरंग पार्टी के कॉमरेड विदर्स की इस लेख में विशेष प्रशंसा की गई थी। इनको द्वितीय वर्ग का विशेष सेवा-सम्मान-चक्र प्रदान किया गया था।

तीन मास बाद एफ० एफ० सी० सी० का विघटन कर दिया गया। कारण बतलाया नहीं गया। यह अनुमान था कि विदर्स और उसके साथियों की सरकार की निगाह में कोई इज्जत नहीं रह गई थी। परन्तु पत्रों पर टेलीस्क्रीन में इसकी कोई चर्चा नहीं थी। यह स्वाभाविक था। राजनीतिक अपराधियों पर मुकदमा नहीं चलाया जाता था और ... रूप से उनकी कोई चर्चा नहीं की जाती थी। शुद्धीकरण का

मुकदमे, जिनमें हजारों व्यक्ति फंसे होते थे, कई सालों में एकाध बार होता था। इनपर राजद्रोह का विचार-अपराध का मामला सार्वजनिक रूप से चलाया जाता था और उनसे स्वीकारोक्ति कराके उन्हें मार डाला जाता था। परन्तु ऐसा कभी-कभी होता था—वर्षों में एक बार। सामान्यतः पार्टी जिनसे रुष्ट होती थी, वे लोग बस गायब हो जाते थे और फिर उनके बारे में कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता था। लोगों को आभास तक नहीं हो पाता था कि उनका हुआ क्या। माता-पिता के अलावा विन्स्टन की अपनी जान-पहचान के तीस आदमी समय-समय पर गायब हो चुके थे।

विन्स्टन ने क्लिप से अपनी नाक धीरे से खुजलाई। सामने के कमरे में कॉमरेड टिलोटसन अपने माइक में बोलता चला जा रहा था। विन्स्टन सोच रहा था शायद टिलोटसन भी इसी काम में जुटा था। उसका अनुमान संभवतः ठीक ही था क्योंकि ऐसा कठिन और महत्त्वपूर्ण कार्य यदि किसी कमेटी को सौंपा जाता तो स्पष्ट हो जाता था कि जालसाजी की जा रही है। बहुत सम्भव था, इस मसौदे का तैयार करने में एक दर्जन से भी अधिक आदमी जुटे हों। इसके बाद फिर पार्टी का एक उच्च अधिकारी सब मसौदों को पढ़कर उनमें से एक छांट लेगा या चुने मसौदों से अपना विवरण तैयार कर लेगा और फिर इस प्रकार तैयार किया गया झूठा विवरण छापकर सत्य बना दिया जाएगा।

विन्स्टन को पता नहीं था कि विदर्स को क्यों पदच्युत किया गया था। संभवतः भ्रष्टाचार या दक्षता के अभाव की शिकायत रही हो। या बड़े भाई ने किसी लोकप्रिय नेता से पिण्ड छुड़ाया हो। विदर्स या उसके किसी निकटतम साथी में द्रोहात्मक प्रवृत्तियां देखी गई हों। या उसे केवल इसलिए मार दिया गया हो कि इस प्रकार निरन्तर शुद्धीकरण करते रहना पार्टी की व्यवस्था का अंग है। संदेश में विदर्स के बारे में एक ही संकेत था। वह था, लेख में अस्तित्वहीन व्यक्तियों की चर्चा है, अर्थात् विदर्स मारा जा चुका है, जीवित नहीं है। विदर्स मर चुका था। वह अस्तित्वहीन था—वह कभी नहीं था। विन्स्टन ने सोचा [illegible] के भाषण की बातें उलट देने से ही काम नहीं चलेगा।
—इसमे [illegible] विषय की चर्चा की जाए।
[illegible] जिसमे राजद्रोहियों

और विचार मतावलंबियों की निन्दा ही निन्दा हो। परन्तु यह बहुत पुरानी बात हो जाती। इसके विपरीत किसी मोर्चे पर विजय की बात या नवीं तीन वर्षीय योजना में किसी सफलता की चर्चा से रिपोर्टों में बहुत अधिक परिवर्तन करने की आवश्यकता पड़ जाती थी। इस समय विशुद्ध कल्पना की आवश्यकता थी। सहसा उसके दिमाग में कॉमरेड ओगिल्वी नाम का एक पात्र आया। विन्स्टन ने सोचा, कॉमरेड ओगिल्वी के संबंध में वह लिखेगा कि अभी हाल ही की लड़ाई में वह किस प्रकार वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। कभी-कभी भाषणों में बड़े भाई पार्टी के किसी तुच्छ सदस्य की चर्चा कर बैठते और पूरे भाषण में उसीकी प्रशंसा करते और बताते कि अपने जीवन-काल में तथा मौत के बाद वह कॉमरेड किस प्रकार सभी पार्टी-सदस्यों का आदर्श बना हुआ है। आज वह कॉमरेड ओगिल्वी की याद करेंगे। यह सच था कि इस नाम का कोई आदमी न था। परन्तु कुछ छपी पंक्तियाँ और कुछ जाली चित्र उसे ऐसा आदमी बना देंगे जो कभी था।

विन्स्टन ने लेखनयंत्र अपनी ओर खींचा और बड़े भाई की शैली में बोलना शुरू किया। यह शैली सैनिक तथा अध्यापक की—दोनों शैलियों का मिश्रण था। इसमें पहले सवाल किया जाता था और फिर तुरन्त उसका जवाब दिया जाता था।

कॉमरेड ओगिल्वी ने तीन वर्ष की आयु में तीन को छोड़कर सारे खिलौने छोड़ दिए। जो खिलौने उन्होंने चुने थे—वे थे, ढोल, छोटी मशीनगन और हैलीकॉप्टर का नमूना। छह वर्ष की आयु में (उनके लिए एक वर्ष आयु घटा दी गई थी) वह बाल-जासूसों के सरदार बन गए। नौ वर्ष की अवस्था में वह छोटे जासूस दल के नेता थे। ग्यारह वर्ष की आयु में उन्होंने अपने चचा को राजद्रोहात्मक बातें बनाते सुनकर उन्हें विचार पुलिस के हवाले कर दिया था। सत्रह वर्ष की आयु में वह सेक्स विरोधी लीग के जिला संयोजक बन गए। उन्नीस साल की आयु में उन्होंने ऐसा हथगोला बनाया जिसे शान्ति मंत्रालय ने उपयोग के लिए स्वीकार कर लिया। जब इसका पहली बार प्रयोग किया तो एक ही हथगोले से इकत्तीस यूरेशियन बंदी सैनिक मारे गए थे। तेईस वर्ष की आयु में वह वीरगति को प्राप्त हुए। वह तब भारतीय महासागर

पर हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे तो शत्रु के जेट विमानों ने उनका पीछा किया। उनके पास महत्वपूर्ण कागज थे। वह एक मशीनगन सहित कागजों को जेब में रखे हैलीकॉप्टर से समुद्र में कूद पड़े। उनकी मौत सबके लिए ईर्ष्या की वस्तु है। बड़े भाई ने कॉमरेड ओगिलवी की एकाग्र सेवाओं की प्रशंसा की। वह शराब नहीं पीते थे। सिगरेट छूते नहीं थे। एक घण्टा व्यायाम के अतिरिक्त उनका कोई मनोरंजन नहीं था। चिरकुमार रहने का उन्होंने व्रत ले रखा था। उनका विश्वास था कि परिवार के साथ पार्टी की चौबीसों घंटे सेवा नहीं की जा सकती। बातचीत का एक ही विषय उनके पास था और वह थे 'इगसोस' के सिद्धान्त। जीवन का एक ही लक्ष्य था—यूरेशियन सेना की पराजय, शत्रु के गुप्तचरों, विध्वंसकों, विचार-अपराधियों और राजद्रोहियों की तलाश तथा उनको सजा दिलवाना।

पहले विन्स्टन ने सोचा कि विशेष सेवा का चक्र कॉमरेड ओगिलवी को दिला दिया जाए। परन्तु बाद में यह सोचकर कि इससे आगे कुछ अंकों में बहुत-से आवश्यक परिवर्तन करने पड़ सकते हैं, उसने ऐसा नहीं किया।

जिस कॉमरेड ओगिलवी की एक घंटे पूर्व किसीने कल्पना भी नहीं की थी वह अब वहां साकार भरा था। उसे लगा कि मृत को आप ज़िन्दा कर सकते हैं लेकिन जीवितों को जीवन नहीं दे सकते। कॉमरेड ओगिलवी का अभी कोई अस्तित्व नहीं था, परन्तु अब वह शालमैन या जूलियस सीज़र की भांति ही ज़िन्दा रहेगा।

५

यह कैन्टीन का हॉल था। इसकी छत बड़ी नीची थी। यह हॉल जमीन के नीचे था—तहखानेनुमा। लंच के लिए लोग लाइन में खड़े थे। धीरे-धीरे 'क्यू' खिसक रहा था। कमरा भरा था। बड़ा शोर हो रहा था। शोरबे की गंध पर फिर भी विजय-मदिरा की भाप का अनुभव हो रहा था। कमरे में दूसरी ओर 'बार' था। 'बार' क्या था, दीवार में छेद था। दस सेण्ट का सिक्का डाल देने से एक मग भरकर शराब मिल जाती थी।

विन्स्टन के पीछे से किसीने कहा, 'ओ, मैं तुम्हें ही तो देख रहा था।'

विन्स्टन ने घूमकर देखा। उसका दोस्त था—साइम। वह रिसर्च विभाग में था। दोस्त कहना तो ठीक नहीं होगा। आजकल दोस्त नहीं होते थे। कॉमरेड होते थे। कुछ कॉमरेड ऐसे होते थे जिनका साथ अन्य कॉमरेडों की अपेक्षा आप अधिक पसन्द करते थे। साइम भाषा-विज्ञान का ज्ञाता था। वह नई भाषा की डिक्शनरी के ग्यारहवें संस्करण का सम्पादन करने वाली टीम का सदस्य था। कद और आकार में वह विन्स्टन से भी छोटा था। उसके बाल काले और लम्बे थे। आंखों से दुःख और विक्षोभ भी कभी-कभी चमक उठता था। वैसे उसकी दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण लगती थी। यह आंखों से प्रकट था। वह देखता तो लगता था कि चेहरे से मन के भाव पढ़ रहा है।

'मैं पूछ रहा था, तुम्हारे पास फालतू ब्लेड है कोई?' उसने प्रश्न किया।

'एक भी नहीं।' विन्स्टन ने जल्दी से उत्तर दिया। इसमें अपराध की भावना छिपी थी, 'मैं चारों तरफ तलाश कर आया। एक भी नहीं मिलता।'

हर आदमी को ब्लेडों की तलाश ही रहती थी। उसके पास दो नये ब्लेड थे, लेकिन वह उन्हें छिपाए था। कई महीनों से ब्लेडों का अकाल पड़ा हुआ था। कोई न कोई आवश्यक वस्तु बहुधा पार्टी की दुकान पर नहीं मिलती थी। कभी बटन नहीं मिलता था, तो कभी रफू करने के लिए ऊनी तागा। कभी जूतों के फीते नहीं मिलते थे तो कभी कोई और चीज। आजकल रेजर ब्लेडों का अभाव था। खुले बाजार में बहुत दौड़धूप और पूछताछ के बाद एकाध ब्लेड कहीं मिल जाता था।

झूठ बोलते हुए उसने कहा, 'मैं एक ही ब्लेड से पिछले छः हफ्तों से दाढ़ी घिस रहा हूं।'

सामने हटके में धक्के के साथ आगे बढ़े। काउण्टर के किनारे पर रखे ढेर से दोनों ने एक-एक 'ट्रे' उठा ली। यह धातु की थी और ऐसी गंदी थी कि उसकी चिकनाहट तक दूर नहीं हुई थी।

'कल बंदियों को जो फांसी दी गई थी, क्या तुम देखने गए थे

तुम ?' साइम ने पूछा।

विन्स्टन ने कुछ उदासीन भाव से कहा, 'मैं कार्यव्यस्त था। अब फिल्म देख लूंगा।'

'फिल्म देखने में तो उतना मज़ा नहीं आ सकता।' साइम ने कहा।

साइम की आंखें बराबर विन्स्टन के चेहरे की पड़ताल कर रही थीं। विन्स्टन को ऐसा प्रतीत हुआ कि साइम कह रहा हो—मैं तुम्हें जानता हूं। मैं जानता हूं, तुम फांसी का दृश्य देखने क्यों नहीं गए। बौद्धिक स्तर पर साइम भी बड़ा पार्टी-भक्त था। वह बड़े सन्तोष से शत्रु के गांवों पर हैलीकॉप्टरों द्वारा किए गए हमलों का विवरण बतलाता था। विचार-अपराधियों के मुकद्दमों तथा उनके इकबाली बयानों की चर्चा करता था। वह यह भी बतलाता कि प्रेम मन्त्रालय के तहखानों में अपराधियों को किस प्रकार मौत के घाट उतारा जाता था। विन्स्टन ने अपना सिर ज़रा मोड़ लिया जिससे साइम उसकी आंखों में आंखें डालकर मन की बात निकालने की कोशिश न करे।

साइम ने दृश्य की याद करते हुए कहा, 'फांसी का दृश्य देखने में इस बार बड़ा मज़ा आया। मेरा ख्याल है अपराधियों के पैर नहीं बांधने चाहिए। इससे मज़ा नहीं आता। मुझे उनका पैर फटकारना बड़ा अच्छा लगता है। अन्त में उनकी जीभ नीली होकर बाहर निकल आती है। यह भी मुझे अच्छा लगता है।'

'अगला आदमी!' सफेद कपड़े का 'एप्रन' पहने हुए तथा हाथ में चमचा लिए हुए काउण्टर के दूसरी तरफ खड़े मजदूर ने चिल्लाकर कहा।

विन्स्टन और साइम ने अपनी-अपनी ट्रे आगे कर दी। लंच की निर्धारित वस्तुएं 'ट्रे' पर गिरने लगीं। रोटी का सख्त टुकड़ा, गुलाबी और भूरा-सा 'स्टू', पनीर का टुकड़ा, बिना दूध की कॉफी और सैकरीन की एक टिकिया।

'वह, वहां टेलीस्क्रीन के नीचे एक मेज़ खाली पड़ी है,' साइम ने कहा, 'रास्ते में शराब भी ले लेंगे।'

शराब बिना हैण्डल के प्यालों में मिली। भीड़ चीरते वे मेज़ तक पहुंचे। इसके बाद 'ट्रे' खाली करके उन्होंने उसकी सारी चीजें मेज़ पर रख लीं। मेज़ पर एक कोने में कोई 'स्टू' का प्याला छोड़ गया था।

गया। और इसका नतीजा था कि वेटर भागती आती थी। विन्स्टन ने अपनी शराब का मग उठाया। एक क्षण उसे देख अपने-आपको तैयार किया। इसके बाद पूरी शराब एक सांस में पी गया। तेल जैसी शराब पीने के बाद हमेशा की तरह इस बार भी उसकी आंखों में आंसू बह निकले। कुछ देर बाद उसने अनुभव किया, वह भूखा है। अब उसने 'स्टू' चम्मच से पीना शुरू किया। बीच-बीच में गोश्त के टुकड़े भी आते जा रहे थे। कुछ देर दोनों में कोई नहीं बोला।

'डिक्शनरी का काम कैसा चल रहा है?' विन्स्टन ने पूछा।

'चल रहा है, धीरे-धीरे। डिक्शनरी का ग्यारहवां संस्करण निश्चयात्मक है।' साइम ने कहा, 'यह अंतिम संस्करण है। अब नई भाषा का वास्तविक स्वरूप निखर रहा है। हमारा काम समाप्त होने पर तुम जैसे आदमियों को यह नई भाषा पुनः सीखनी होगी। पर तुम सोचते होंगे, हमारा काम नये शब्द बनाना है। परन्तु वस्तुतः बात ऐसी नहीं है। हम शब्दों को नष्ट कर रहे हैं। बीसियों, सैकड़ों शब्द रोज काटे जा रहे हैं। हम भाषा के शब्द-भंडार को न्यूनतम कर देंगे। ग्यारहवें संस्करण में एक भी ऐसा शब्द नहीं मिलेगा जो सन् २०५० के पूर्व बेकार हो सकेगा।'

उसने जल्दी-जल्दी रोटी के कई ग्रास खाए और उनको गले से नीचे उतार लेने के बाद अध्यापकों के ढंग से फिर बोलना शुरू किया। उसके काले चेहरे पर चमक आ गई थी। वह ऐसा हो गया था जैसे सपने में बोल रहा हो।

[illegible] नष्ट करना अच्छी बात है। क्रिया और विशेषणों में [illegible] है। वे तो काटे ही जा रहे हैं। हम अब संज्ञाओं [illegible]। पर्यायवाची शब्दों को ही नहीं, हम उन शब्दों को [illegible] विपरीत अर्थ देते हैं। ऐसे शब्द का क्या लाभ है [illegible] अर्थ देता हो। प्रत्येक शब्द का उलटा शब्द [illegible] है। अच्छा या भला कह देने से काम चल [illegible]। बहुत अच्छा, या शानदार कहना है तो इसके [illegible] चल सकता है। अन्त में अच्छे या बुरे [illegible] केवल छः शब्द रह जाएंगे। और वस्तुतः [illegible] समझ रहे हो न?—बेशक यह

'आइडिया' बड़े भाई का ही था।'

बड़े भाई का नाम सुनते ही विन्स्टन को हरारत-सी हो आई। परन्तु इसके साथ ही साइम ने यह भी देख लिया कि उसकी बातों में विन्स्टन उत्साहपूर्वक भाग नहीं ले रहा है।

'विन्स्टन, तुम नई भाषा की पृष्ठभूमि भली भांति समझ नहीं पाए हो।' उसने उदास होकर कहा, 'आजकल नई भाषा में लिखते हुए तुम तथा अन्य सब पुरानी भाषा में ही सोचते हैं। 'टाइम्स' में छपी तुम्हारी चीज़ों को मैंने पढ़ा है। वे अच्छी हैं, लेकिन वे सब पुरानी भाषा में सोची गई बातों के नई भाषा में अनुवाद हैं। अभी तुम मन ही मन पुरानी भाषा से ही लिपटे हो। पुरानी भाषा बिल्कुल अनिश्चित है और उसमें तरह-तरह के अर्थ देने वाले शब्द हैं जिनका प्रयोग अर्थ की दृष्टि से संदिग्ध होता है। तुम अभी शब्द-संहार का सौन्दर्य नहीं अनुभव कर पाए हो। क्या तुम यह नहीं जानते हो कि नई भाषा ही एकमात्र संसार की ऐसी भाषा है जिसके शब्द प्रतिवर्ष घटते जा रहे हैं?'

निस्सन्देह, विन्स्टन यह नहीं जानता था। वह केवल मुस्करा दिया था। वह बोलना नहीं चाहता था। साइम ने अपनी रोटी का एक कौर और दांत से काट लिया और उसे चबाता हुआ बोला, 'क्या तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आती कि नई भाषा का उद्देश्य ही विचार-शक्ति को सीमित कर देना है? अन्ततः हम विचार-अपराध या मानसिक अपराध को सर्वथा असंभव कर देंगे। जब शब्द ही नहीं होंगे तो कोई विचार कैसे करेगा और जब विचार-शक्ति ही नष्ट हो जाएगी तो मानसिक अपराधों का होना भी असम्भव हो जाएगा। हर शब्द का एक ही अर्थ होगा। यह अर्थ निश्चित कर दिया जाएगा और उसके व्यंजनात्मक अर्थों को बिलकुल नष्ट कर दिया जाएगा और भुला दिया जाएगा। यह प्रक्रिया हमारे और तुम्हारे मरने के बाद भी चलती रहेगी। हर वर्ष शब्दों की संख्या घटती जाएगी और उसी तरह विचार-शक्ति भी क्षीण होती जाएगी। अन्ततः क्रांति पूर्ण होगी जब नई भाषा पूर्ण हो जाएगी। 'इंगसोक नई भाषा है और नई भाषा ही 'इंगसोक'। क्या तुम्हारे दिमाग में कभी भी यह बात आई है कि सन् २०५० तक एक भी ऐसा आदमी जीवित नहीं होगा जो हमारे संवाद की भाषा को समझ सकेगा?'

'केवल'—विन्स्टन कहते-कहते एकदम रुक ग
यह कहने जा रहा था, 'केवल मजदूरों को छोड़क
र चुप हो गया कि कहीं उसका यह कथन पार्टी-वि
गए। फिर भी साइम ने जान लिया कि वह क्या क

'मजदूर पेशा लोग आदमी थोड़े ही हैं,' उसने
सन् २०५० तक पुरानी भाषा का सारा ज्ञान
नकाल का सारा साहित्य नष्ट कर दिया जाएग
पियर, मिल्टन, बायरन आदि की कविताएं केवल
दल सकेंगी। उनकी कविताओं का तत्व भी बद
ाहित्य भी बदल जाएगा। नारे भी बदल जाएं
से हम विचार कहते हैं, वैसी कोई चीज ही नहीं
ा अर्थ है, सोचना बन्द कर दिया जाए—सोचन
ही है।'

तभी विन्स्टन के मन में यह भाव आया कि अब
ी इनी-गिनी ही रह गई हैं। वह जल्दी ही मारा जाए
ा से ज्यादा अकल काम में लाता है। जरूरत से ज्य
चता है और जरूरत से ज्यादा स्पष्ट बोलता है। पा
पसन्द नहीं करती। एक दिन वह गायब हो जाएग
ही लिखा है।

विन्स्टन ने अपनी रोटी और पनीर को खत्म कर
द वह खिसककर कॉफी पीने लगा।

साइम कुछ क्षणों के लिए चुप हो गया था। व
रत की कोई छोटी तलाश कर रहा था।

निस्सन्देह, साइम मौत के घाट उतार दिया जाएग
ाग में फिर यह ख्याल आया। उसे यह ख्याल था
ा। वह जानता था कि साइम उसे पसन्द नहीं करता
रते ही उसे निस्सन्देह विचार-अपराधी किसी भी स
ता था, फिर भी साइम के लिए उसे दुःख हो रहा
म कुछ खराबी अवश्य थी। आप यह नहीं कह स
-भवन नहीं था या उसमें कट्टरता नहीं थी। व

पर हर्षित होता था, वह पार्टी से दगा करने वालो से घोर घृणा करता था. हमेशा नई से नई खबर उसे मालूम होती थी, ऐसी सूचनाएं भी जो साधारण पार्टी के सदस्यो को नहीं मिलतीं। परन्तु फिर भी ऐसा लगता था कि वह कुछ बदनाम है। वह ऐसी बातें कह देता था जिनका मुह से न निकलना ही बेहतर होता। उसने बहुत-सी किताबें पढ़ रखी थी। वह चेस्टनट कैफे जाता था। यह चित्रकार और संगीतज्ञों के बैठने-उठने की जगह थी। चेस्टनट कैफे जाना कोई गैर कानूनी नहीं था, परन्तु वहा जाना अपशकुन समझा जाता था। वृद्ध, निन्दित पार्टी-नेता मारे जाने के पूर्व उसी कैफे मे जाया करते थे। कभी-कभी गोल्डस्टीन भी देखा गया था। वह वर्षों—शायद दशको पूर्व की बात थी। साइम का दुर्भाग्य उसे स्पष्ट दीख रहा था।

साइम ने सिर उठाकर कहा, 'वह पारसन्स आ रहा है।'

विजय भवन में पारसन्स विन्स्टन का पडोसी था। वह भीड़ काट-कर उनकी ही तरफ आ रहा था। मध्यम कद का वह मोटा आदमी था। उसके बाल श्वेत थे और चेहरा मेढको जैसा था। पैंतीस वर्ष की उम्र मे भी उसकी गर्दन और कमर पर मास बढता जा रहा था। परन्तु वह चलता तेजी से था और उसके चलने से कुछ लडकपन भी प्रकट होता था। उसको देखकर ऐसा लगता था कि छोटा लड़का बड़ा हो गया है। वह अक्सर निकर तथा कमीज पहनता था, विशेष रूप से सामुदायिक भ्रमण या ऐसे ही किसी अन्य शारीरिक व्यायाम के अवसर पर। उसने दोनों व्यक्तियों मे 'हलो हलो' किया और मेज पर बैठ गया। उसके मेज पर बैठते ही पसीने की तेज बदबू विन्स्टन की नाक मे घुस गई। उसके लालिमापूर्ण चेहरे पर पसीने की बूदें झलक रही थी। साइम ने एक कागज निकाल लिया था। इसमे एक लम्बी शब्द-सूची थी। हाथ मे स्याहीदार पेंसिल लिए वह इसी शब्द-सूची पर विचार कर रहा था।

पारसन्स ने विन्स्टन को चिकोटी काटते हुए कहा, 'जरा देखो भाई को, भोजन के समय भी काम मे जुटे हैं। अरे भई, क्या पढ़ रहे हो? क्या मेरे दिमाग से परे की बात है? स्मिथ, भाई मुझे तुमसे एक चन्दा वसूल करना है, इसीलिए मैं तुम्हारे पीछे पड़ा हू।'

'कौन-सा चन्दा,' विन्स्टन ने पर्स निकालने के लिए अपनी जेब मे

हाथ डाला। हर माह वेतन का चौथाई हिस्सा चन्दों में निकल ज
था। ये इतने अधिक थे कि उनको याद रखना भी मुश्किल था।

'घृणा सप्ताह के लिए घर-घर आकर यह चन्दा इकट्ठा कि
रहा है। हम शानदार प्रदर्शन की पूरी तैयारी कर रहे हैं। यदि वि
भवन में सड़क के अन्य सब भवनों की अपेक्षा सबसे अधिक झण्डे न
तो मुझे दोष न देना। तुमने दो डालर देने का वादा किया था।'

विन्स्टन ने पर्स निकालकर दो डालर के गन्दे नोट पारसन
हवाले किए। पारसन्स ने उनको रखकर अपनी नोट-बुक में
लिया।

'मैंने सुना,' पारसन्स ने कहा, 'मेरे लड़के ने उस दिन तुम्हारे
मार दी। मैंने उसकी अच्छी तरह पिटाई की है। मैंने उससे कह
है कि यदि फिर उसने ऐसी हरकत की तो मैं उससे गुलेल छीन लू

'मेरा ख्याल है, वह फांसी देखने न जा सकने के कारण ना
था।' विन्स्टन ने कहा।

'ठीक है। ऐसा तो होना ही चाहिए। दोनों बच्चे बड़े ही शर
हैं। वे हमेशा जासूसों और युद्ध की बातें करते रहते हैं। पिछले
वार को मेरी लड़की ने, जानते हो क्या किया? वह बर्कहैम्पस्टीड
दल के साथ घूमने गई थी। उसने दो अन्य लड़कियों के साथ एक
नबी का पीछा किया। दो घण्टों तक वह जंगलों में उसके पीछे घू
रही। ऐमरशाम पहुंचकर तीनों ने उस आदमी को पुलिस के हवाले
दिया।'

'ऐसा उन्होंने क्यों किया?' विन्स्टन ने हैरान और परेशान है
पूछा। पारसन्स ने विजय-गर्व से कहा, 'मेरी बच्ची ने यह जान लिय
कि वह शत्रु का गुप्तचर है। शायद उसे पैराशूट से गिरा दिया
था। वह आदमी अजीब ढंग के जूते पहने था। ऐसे जूते पहने उसने
किसीको नहीं देखा था इसलिए लड़की के मन में शक पैदा हो ग
हो न हो यह विदेशी हो, यह सोचकर लड़की ने उसे पुलिस के ह
कर दिया। सात साल की लड़की के लिए इतना बहुत है, क्यों?'

'आदमी का क्या हुआ?' विन्स्टन ने पूछा।

'मुझे नहीं मालूम। लेकिन मुझे आश्चर्य न होगा यदि अब
वह....' राइफल तानने का इशारा करते हुए पारसन्स ने मुंह से

चलाने और घोड़ा दबाने की आवाज़ की।

'बहुत ठीक।' साइम ने कागज से बिना अपनी आँखें उठाए हुए कहा।

'ठीक है, हम लोग खतरा नही मोल ले सकते,' विन्स्टन ने सहमत होते हुए कर्तव्य का पालन किया।

'आजकल लड़ाई चल रही है।' पारसन्स ने कहा।

बात की पुष्टि के रूप में, ऐसा लगा, टेलीस्क्रीन पर ज़ोर से बिगुल बजने की आवाज़ हुई। टेलीस्कीन सिर पर ही था।

'कॉमरेड,' किसी तरुण कण्ठ ने कहा, 'ध्यान से सुनिए! बड़ी शानदार खबर है। हमने उत्पादन की लड़ाई जीत ली है। पिछले साल उपभोग्य वस्तुओ का जो उत्पादन हुआ उससे प्रकट होता है कि जीवन-यापन का स्तर बीस प्रतिशत बढ गया है। आज ओशनिया-भर मे कारखानो और दफ्तरो से निकलकर सड़को पर मजदूरों ने प्रदर्शन किए। इनमे नये तथा सुखमय जीवन के लिए बडे भाई के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई थी। ये कुछ आकडे हैं। खाद्य सामग्री—'

'हमारा नया सुखमय जीवन'—इधर इन शब्दों का प्रयोग समृद्धि मत्रालय बहुत करता रहा था। पारसन्स घोषणा को आख बन्द कर मूर्तिवत् सुन रहा था। ऐसा लगता था कि नीरसता की साक्षात् प्रतिमा है। वह आंकडो को तो समझ नही पाता था, परन्तु उन्हे सुनकर ही सन्तोष कर लेता था। अब उसने आखे खोल ली और अपनी जेब से एक गन्दा पाइप निकाल लिया। इसमे आधी से भी अधिक जली तम्बाकू पहले से ही भरी हुई थी। तम्बाकू सप्ताह मे केवल सौ ग्राम मिलती थी, इसलिए कभी भी पाइप को ऊपर तक तो भरना सम्भव ही नही था। विन्स्टन विक्टरी सिगरेट पी रहा था। सिगरेट को वह बडी सावधानी से सीधा पकड़े था। अन्यथा तम्बाकू के नीचे गिर जाने का खतरा था। राशन कल से पहले मिलने वाला नही था और उसके पास अब केवल चार सिगरेटें ही बची थीं। उसने आसपास के शोर मे अपना ध्यान खींचकर वे आकडे सुनने का प्रयत्न किया जो टेलीस्क्रीन पर सुनाए जा रहे थे।

लम्बे-चौडे आंकडे टेलीस्क्रीन से अब भी झर रहे थे। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष अधिक खाद्य सामग्री, अधिक कपड़ा, अधिक फर्नीचर,

बैठा एक आदमी कॉफी पी रहा था। उसकी छोटी-छोटी आँखें बार-बार कैन्टीन के हर कोने में जा रही थीं। वह टोह की सन्देह की निगाहों से देख रहा था। पार्टी ने शारीरिक स्वास्थ्य को बहुत महत्व दिया था, किन्तु लगभग हर आदमी का कद छोटा रंग काला और स्वभाव चिड़-चिड़ा होता जा रहा था।

समृद्धि मन्त्रालय की घोषणा बिगुल बजकर समाप्त हो गई। अब हल्का संगीत बज रहा था। पार्सन्स ने आंकड़ों की वर्षा के बाद उत्साहपूर्वक अपनी आँखें खोलीं और मुँह से पाइप बाहर निकाल लिया।

ज्ञानवानों की भाँति सिर हिलाते हुए उसने कहा 'इस वर्ष समृद्धि मन्त्रालय ने निश्चय ही अच्छा काम किया है। - क्यों स्मिथ, तुम्हारे पास एकाध ब्लेड तो फालतू नहीं होगा?'

'मेरे पास एक भी ब्लेड नहीं है। मैं पुराने ब्लेड से ही पिछले छः सप्ताह से काम चला रहा हूँ।'

'अच्छा-अच्छा। कोई बात नहीं। मैंने सोचा, पूछ लेने में क्या हर्ज है?'

'सॉरी!' विन्स्टन ने कहा।

पता नहीं क्यों विन्स्टन को श्रीमती पार्सन्स की याद आ गई। उनके उड़ते हुए बाल तथा झुर्रियों से भरी धूल वाला चेहरा फिर उसके सामने आ गया। दो साल के भीतर ही ये बच्चे अपनी माँ को विचार-पुलिस के हवाले कर देंगे। और श्रीमती पार्सन्स को समाप्त कर दिया जाएगा। साइम को भी समाप्त कर दिया जाएगा। विन्स्टन का भी यही हाल होगा। ओ'ब्रायन भी मार डाला जाएगा। इसके विपरीत पार्सन्स जैसे आदमी कभी नहीं मारे जाएँगे। वह गहरे काले घने बालों वाली लड़की भी नहीं मारी जाएगी। ऐसा लगता था कि उसे तुरन्त ज्ञात हो जाता था कि कौन मारा जाएगा और कौन नहीं।

तभी वह अपने विचार-स्वप्न से जाग उठा। दूसरी मेज वाली लड़की थोड़ी-सी घूम गई थी और उसकी तरफ देख रही थी। यह वही काले बालों वाली लड़की थी। वह बगल से कटाक्षपात कर रही थी। जिस क्षण दोनों की आँखें मिलीं लड़की तुरन्त दूसरी ओर देखने लगी।

विन्स्टन की पीठ पर पसीना आ गया। उसके हृदय में भयानक डर समा गया। थोड़ी ही देर में वह भय दूर भी हो गया। परन्तु वह

जब वह इस कौन्द के बारे में सोच रहा था [illegible]
रुकी हुई थी। निश्चयस्वरूप वेश्याओं के पास जाना मना नहीं था, परन्तु
कभी कभी साहस करके यह नियम तोड़ भी दिया जाता था। [illegible]
खतरा था लेकिन इसमें जीवन और मृत्यु का सवाल नहीं था। वेश्या के
साथ पकड़े जाने पर बेगार शिविर में पांच साल बिताने पड़ सकते थे।
उससे अधिक नहीं। शर्त यही थी कि आपने अन्य कोई अपराध न किया
हो। वैसे यह काम बड़ा आसान भी था। गरीबों की बस्तियों में ऐसी
स्त्रियां भरी पड़ी थीं जो अपने शरीर को हमेशा बेचने को तैयार रहतीं
थीं। अप्रत्यक्ष पार्टी वेश्यागमन को प्रोत्साहित भी करती थी क्योंकि
अधिकारी समझते थे कि जो भावनाएं दबाई नहीं जा सकतीं उनको
दिमाग से बाहर निकालने का यह प्रोत्साहन सरल साधन है। शर्त यही
है कि इसका कोई दीर्घकालीन परिणाम न हो और इसमें लोगों को कोई
आनन्द न आवे। दूसरे इस बारे में निम्नवर्ग की मजदूर औरतें ही हों।
पार्टी-सदस्यों के बीच कोई यौन सम्बन्ध नहीं होने चाहिए। यह अक्षम्य
अपराध था।

पार्टी का यही लक्ष्य नहीं था कि स्त्री-पुरुषों के बीच ऐसे सम्बन्ध
स्थापित न हो पाएं जिससे वे एक-दूसरे पर जान देने के लिए तैयार हो
जाएं, बल्कि यथार्थ उद्देश्य यह था कि संभोग कर्म में कोई आनन्द ही न
रह जाए। विवाह के प्रत्येक प्रस्ताव को पहले एक कमेटी से स्वीकृत
कराना पड़ता था। यदि इस कमेटी को जरा भी यह पता लग जाता था
कि जोड़ा एक-दूसरे के सौन्दर्य से प्रभावित है तो विवाह की अनुमति
नहीं दी जाती थी। एक ही आधार पर अनुमति मिलती थी और
वह था : पार्टी की सेवा के लिए हम सन्तति उत्पन्न करना चाहते
हैं। संभोग को हेय दृष्टि से देखा जाता था। ऐसे ही जैसे एनिमा
से पेट साफ करने के कर्म को। परन्तु स्पष्ट रूप से यह सब नहीं
कहा [illegible]। यह बात बचपन से हर पार्टी-सदस्य के दिमाग में बार-
[illegible] से घुमाई जाती थी। तरुणों की सेक्स विरोधी लीग

करती थी। परन्तु फिर भी हर दिन उसने ये सौगन्ध की शिकायत की एक
उसका यह भय आकर घेर लेता। सौभाग्यवश, कोई बच्चा नहीं हुआ।
अन्त में वह हारकर प्रयत्न न करने के लिए राजी हो गई। और ये
इसके बाद वे अलग हो गए।

विन्स्टन ने बहुत धीरे से सांस ली। उसने फिर कलम उठाई और
लिखा :

'वह बिस्तर पर गिर पड़ी। इसके बाद बिना किसी प्रारम्भिक औप-चारिकता के उसने अपने कपड़े हटा दिए। मैं...'

एकाएक उसे यह दृश्य याद हो आया। मन्द रोशनी, खटमल और सस्ते सेन्ट की महक और गुलाब की किसी गंध उसकी नाक में प्रवेश कर गई। उसका हृदय पराजय और पार्टी के विरुद्ध विद्रोह की भावना से अभिभूत हो गया। उसे लगा कि पार्टी ने अपनी सम्मोहन शक्ति से कैथराइन के श्वेत शरीर को बर्फ की तरह जमा दिया है। ऐसा क्यों होता है? क्यों याद ही नहीं, उसे यहां आने के लिए क्यों मजबूर किया जाता है? वह अपनी पत्नी को क्यों नहीं अपने साथ रख सकता? पार्टी की सभी स्त्रियां एकसमान ही थीं। बचपन के वातावरण द्वारा, खेलों और शीतल जल द्वारा, स्कूल में दिए जाने वाली शिक्षा द्वारा सेक्स-विरोधी भावनाएं सदियों के दिलों में भरी जाती थीं। ऐसी ही बात की शिक्षा जासूसी की ट्रेनिंग देने वाली संस्थाओं में युव लीग में भी दी जाती। व्याख्यानों, परेडों, गीतों, नारों, सैनिक धुनों द्वारा भी इस स्वाभाविक भावना का दमन किया जाता। उसका ख्याल था कि कुछ स्त्रियां अवश्य ही अपवाद होंगी। परन्तु मन नहीं मानता था। उनमें से एक भी गर्भवती होने योग्य नहीं थी। पार्टी चाहती भी यही थी। और वह क्या चाहता था, 'वह चाहता था कि वह इस दीवार को तोड़ दे। चाहे प्रेम हो या न हो। यदि एक बार भी संभोग सफलतापूर्वक हो जाता तो वह वस्तुतः पार्टी के विरुद्ध विद्रोह के बराबर था।

लेकिन अभी शेष कथा भी लिखनी थी। उसने लिखा :

'मैंने जरा लैम्प तेज किया। मैंने उसकी शकल जब रोशनी में देखी तो—'

उसने लैम्प के प्रकाश में देखा कि वह औरत बुढ़िया थी। पेंट की वजह से वह वास्तविकता पहले नहीं देख पाया था। सफेद बाल भी

दौरा रहे थे। कहीं-कहीं। उसका मुंह थोड़ा-सा सूज गया था। उसमें एक भी दांत नहीं था। उसने जल्दी-जल्दी लिखा :

'मैंने प्रकाश में देखा कि वह काफी बुढ़िया थी। कम से कम पचास बरस की। फिर भी मैंने अपना उद्देश्य पूरा किया ही।'

उसने अपनी उंगलियों से पलकें दबा लीं। अन्ततः उसने लिख ही डाला था। परन्तु लिखने से भी क्या फर्क पड़ता है। इस इलाज से काम नहीं हुआ। वह अब भी ज़ोर-ज़ोर से बकना चाहता था।

७

अब कोई आशा है (विन्स्टन ने लिखा) तो वह सर्वहारा वर्ग में ही है।

यदि कोई आशा थी तो मज़दूर या सर्वहारा वर्ग से ही थी। ओशनिया की पचासी प्रतिशत आबादी मज़दूरों की थी। यही बहुसंख्यक तथा दलित समाज पार्टी को नष्ट कर सकता था। पार्टी की सत्ता को अन्दर से नहीं उलटा जा सकता था। पार्टी के अन्दर यदि उसके दुश्मन हों, तो भी वे एक नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं थे। यदि ब्रदरहुड नाम की संस्था जैसी कोई चीज़ हो तो भी उसके सदस्य एक स्थान पर दो या तीन से अधिक संख्या में एकत्र नहीं हो सकते थे। आंखों से देखने का ढंग, ज़रा तेज़ आवाज़, कभी-कभी मुंह से निकला अस्फुट शब्द भी विद्रोह मान लिया जाता था। यदि मज़दूरों को किसी प्रकार जगा दिया जाए तो उन्हें किसी प्रकार का षड्यंत्र रचने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। उन्हें तो केवल उबल पड़ना है और अपने-आपको इस तरह हिलाना है जिस तरह घोड़ा अपनी पीठ हिलाकर मक्खियों को भगा देता है। देर या सबेर ऐसा होना ही था। और अब तक…?

पार्टी का दावा था कि उसने मज़दूर वर्ग का पूंजीपतियों से उद्धार किया था। पूंजीपति उन्हें भूखा मारते थे, उन्हें चाबुकों से पीटते थे, औरतों से कोयले की खानों में काम लेते थे। सच यह था कि वे अब भी कोयला-खानों में काम करती थीं। उनके बच्चों को आठ वर्ष की आयु में ही कारखानेदारों को बेच दिया जाता था। द्वैध विचार सिद्धान्तों के अनुसार इसके साथ ही पार्टी मज़दूरों को यह भी सिखाती थी कि मज-

असम्भव है। उसने श्रीमती पारसन्स से बच्चों की इतिहास की पुस्तक पढ़ने के लिए मांग ली थी। इसका एक अंश उसने कापी में नकल करना शुरू किया।

प्राचीन काल में (पुस्तक में लिखा था), स्वर्णक्रान्ति के पूर्व, लन्दन आज की तरह सुन्दर नहीं था। लन्दन बड़ा गन्दा और अंधेरी बस्तियों का शहर था। इसमें लोगों को पेट भर भोजन मिलना भी दूभर था। सैकड़ों, हजारों व्यक्ति नंगे पैर—बिना जूतों के घूमते थे। बहुतों को रहने के लिए कोई घर तक न था। तुम्हारे बराबर के बच्चों को दिन में अपने निर्दयी मालिकों के लिए बारह-बारह घंटे काम करना पड़ता था। यदि बच्चे तनिक भी धीरे काम करते थे तो उनकी कोड़ों से खबर ली जाती थी। खाने को सूखी रोटी के टुकड़े और पानी के सिवा कुछ नहीं मिलता था। ऐसी भयानक दरिद्रता में कुछ लोगों के पास बड़े-बड़े और सुन्दर महलों जैसे मकान थे। इसमें धनिक वर्ग के लोग रहते थे। इनके पास अपने काम के लिए तीस-तीस नौकर होते थे। ये मालिक बहुत मोटे और बदसूरत होते थे। इनके चेहरे से दुष्टता प्रकट होती थी। इनमें से एक की तसवीर सामने के सफे पर छपी है। यह आदमी लम्बा कोट पहने है। इसे फ्रॉक कोट कहा जाता था। यह एक टोपी भी पहने है। इसे टॉप हैट कहते थे। यह पूंजीपतियों की वर्दी थी। उनके सिवा इस पोशाक को अन्य कोई नहीं पहनता था। संसार की सारी जायदाद इन्हीं पूंजीपतियों के कब्जे में थी। उनके वर्ग के लोगों को छोड़ दुनिया का हर आदमी उनका गुलाम था। सारी जमीन, सब मकान, सारे कारखाने और सारा रुपया उनके कब्जे में था। यदि कोई भी उनकी आज्ञा मानने से इन्कार करता तो वे उसे जेलखाने में बंद करा देते थे या वे उसे काम से हटा देते थे और भूखा मार डालते थे। साधारण आदमी को पूंजीपति के सामने पहले झुकना पड़ता था और सलाम करना पड़ता था। तभी वह बोल सकता था। उनके सामने जाने के पहले अपनी टोपी उतारनी पड़ती थी और कुछ कह सकने के पूर्व 'श्रीमान' कहना पड़ता था। पूंजीपतियों का सरदार 'राजा' कहलाता था। और'''।

आगे जो कुछ था उसे विन्स्टन जानता था। अब लम्बी बाहों का चोगा पहनने वाले पादरियों का जिक्र होगा, इसके बाद जजों की चर्चा होगी। शेयरों तथा अन्य बातों की चर्चा होगी। आप कैसे बतला सकते

गलत या सही नहीं कहा जा सकता था। ये ऐसी बातें थीं जिनका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं था। न इधर न उधर। बहुत संभव था कि इतिहास की पुस्तकों की सारी बातें कपोल कल्पना हों। पूंजीपति किसी भी औरत के साथ सो सकता है—ऐसा कोई कानून विन्स्टन को याद नहीं पड़ता था। वह 'टॉप हैट' जैसी किसी टोपी के बारे में भी नहीं जानता था।

हर बात, हर तथ्य पर कुहासा छाया था। मिथ्या महासत्य का रूप धारण कर चुकी थी। उसके पास एक ही ऐसा प्रमाण था जिससे जाल-साजी सिद्ध की जा सकती थी। वह उस कागज को काफी देर तक अपनी मुट्ठी में दबाए रहा था। सन् १९७३ में, हां वह सन् १९७३ ही रहा होगा, और जो भी हो, लगभग इसी समय कैथराइन उससे अलग हुई थी। परन्तु वास्तविक बात सात या आठ वर्ष के पूर्व की थी।

बात सन् १९६५ के आसपास की है। यह वह समय था जब शुद्धी-करण का बड़ा अभियान शुरू हुआ था। इस अभियान में क्रान्ति के वास्तविक नेताओं को सदैव के लिए समाप्त कर दिया गया। सन् १९७० के आसपास उनमें से कोई बाकी नहीं रहा था। अपवाद यदि कोई था तो वह बड़े भाई थे। शेष को या तो क्रान्ति-द्रोही ठहरा दिया गया था या प्रतिक्रान्तिवादी। गोल्डस्टीन भाग गया था और छिपा था। यह कोई नहीं जानता—कहां। कुछ नेता तो लापता हो गए थे। अधिकांश को सार्वजनिक रूप से मुकद्दमा चलाकर फांसी दे दी गई थी। इन मुकद्दमों में सबने अपने बयानों में अपराध स्वीकार कर लिए थे। अन्त में जो बचे थे, वे थे, आरोन्सन, जोन्स और रदरफोर्ड। सन् १९६५ के आसपास गिरफ्तारियां हुई थीं। तभी ये तीनों भी पकड़े गए थे। जैसा अकसर होता है, वे अकस्मात् लापता हो गए और पता नहीं एक, सवा बरस कहां रहे। इस बीच कोई नहीं जानता वे कहां रहे। इसके बाद अकस्मात् उनको सबके सामने पेश किया गया और सार्वजनिक रूप से उनसे अपना अपराध स्वीकार कराया गया। उन्होंने बतलाया कि वे दुश्मनों के एजेण्टों से मिलते थे (उन दिनों भी यूरेशिया से युद्ध चल रहा था)। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने सरकारी रुपये का गबन किया है। पार्टी-सदस्यों की हत्याएं कराई हैं। बड़े भाई के नेतृत्व के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा और ऐसे विध्वंसक कार्य किए हैं जिनसे हजारों-लाखों आदमी मारे गए। इसके बाद उन्हें माफ कर दिया गया, पार्टी में

फिर रस लिया गया। उन्हें रियायती और पर महत्त्वपूर्ण पद दिए ग
गरम ने वास्तव थोथे थे। तीनों ने 'टाइम्स' में बड़े-बड़े लेख लिखे
इन लेखों में उन्होंने अपनी दगा-बाजी के कारण बतलाए और इन्हें
बाद पार्टी के लिए ... अपने आपको सुधारेंगे।

रिहाई के कुछ दिन बाद तीनों को विन्स्टन ने चेस्टनट ट्री कैफे में
देखा था। वह कितनी कुरता और कितने भय से उनको तिरछी निगाहों
से बार-बार देखता था, यहाँ विन्स्टन को याद हो आता। वे तीनों आयु में
उससे कहीं अधिक थे। वे पुरानी दुनिया की यादगार-सी लगते थे।
पार्टी के प्रारम्भिक दिनों का शूरवीरता की याद उन्हें देखकर आ जाती
थी। गुप्त युद्ध और गृहयुद्ध के संघर्ष की ... भी उनके चेहरे से झलकती
थी। अब बड़े भाई का नाम भी लोगों ने नहीं सुना था, वे तेरा तब से
प्रसिद्ध थे। तारीखें और सन् उसे याद नहीं था। परन्तु अब वे गद्दार
थे, अपराधी थे, शत्रु थे, अछूत थे और निश्चित था कि एक या दो वर्ष
के भीतर उनको समाप्त कर दिया जाएगा। एक बार जो आदमी थिंकर-
पुलिस के हाथ पड़ गया, वह फिर अपनी जान बचा नहीं पाया। वे उन
लाशों की तरह लग रहे थे जिन्हें कब्र वापस भेजा जाना था।

उनके सबसे पास की मेजों पर कोई नहीं बैठा था। ऐसे आदमियों
के आसपास भी देखा जाना बुद्धिमत्ता नहीं थी। उनके सामने लौंग से
सुगंधित शराब के गिलास रखे थे। चेस्टनट कैफे में मिलनेवाली शराब की
यही विशेषता थी। तीनों में से रदरफोर्ड के व्यक्तित्व से ही विन्स्टन सबसे
अधिक प्रभावित हुआ। रदरफोर्ड किसी समय बड़ा प्रसिद्ध व्यंग्य-चित्रकार
था। उसके व्यंग्य-चित्रों ने क्रान्ति के पूर्व और उसके दौरान जनमत तैयार
करने में बड़ी मदद दी थी। अब भी कभी-कभी 'टाइम्स' में उसके कार्टून छप
जाते थे। वे रंग-ढंग से उसके पहले के व्यंग्य-चित्रों की नकल प्रतीत होते
थे। इन चित्रों से ऐसा लगता था कि भूतकाल में लौटने की बराबर और
अनवरत चेष्टा की जा रही है, जिसके सफल होने की कोई आशा नहीं है।
लम्बा-चौड़ा, देवों-सा शरीर, चिकने बाल और फूले हुए होंठ। किसी
समय वह बड़ा ही सबल रहा होगा। अब उसकी वह विशाल काया
दुर्बल हो रही थी, निढाल होती जा रही थी। हर तरफ से गिरी पड़
रही है, ऐसा लगता था। ऐसा लग रहा था कि जैसे आँखों के सामने
कोई पहाड़ टूटकर गिरा जा रहा है।

पन्द्रह बजे (दिन के तीन) का एकान्त वक्त था। विन्स्टन को याद नहीं आ रहा था कि उस वक्त वह कैसे कैफे में आ गया था। कैफे करीब-करीब बिलकुल खाली पड़ा था। टेलीस्क्रीन से कोई [illegible] तीनों आदमी, चुपचाप कोने में अपनी मेज पर बैठे [illegible] शराब के ताजे गिलास भर-भरकर ला रहा था। उनके [illegible] पर शतरंज की बाजी बिछी थी लेकिन [illegible] नहीं [illegible] और तभी, शायद आधे मिनट के लिए टेलीस्क्रीन में कुछ हो [illegible] -संगीत की धुन बदल गई। इसके बाद किसीने गाना शुरू किया :

"चेस्टनट के विशाल वृक्ष के नीचे
मैंने तुम्हें बेचा और तुमने मुझे
वहां पड़े हैं वे और यहां पड़े हैं हम
चेस्टनट के विशाल वृक्ष के नीचे।"

परन्तु वे तीनों अपने स्थान से हिले भी नहीं। लेकिन रदरफोर्ड की तरफ दुबारा विन्स्टन ने देखा तो उसे पता लगा कि रदरफोर्ड की आंखों में आंसू भर आए थे। तभी अत्यन्त भयभीत भाव से, यह बिना जाने कि भय किस कारण हुआ, विन्स्टन ने देखा कि आरोन्सन और रदरफोर्ड दोनों की नाकें टूटी हुई हैं।

कुछ ही दिनों बाद वे फिर पकड़ लिए गए। कहा गया कि रिहाई के बाद से ही वे नये-नये षड्यन्त्र रचने लगे थे। दूसरे मुकदमे में उन्होंने अपने सारे नये और पुराने अपराध स्वीकार कर लिए। उनको फांसी दी गई और उनके इस तरह मारे जाने के बाद भावी सन्तति की चेतावनी के लिए उनके अन्त की कथा इतिहास में लिख दी गई। इसके कोई पांच वर्ष बाद संभवतः सन् १९७३ में एक दिन विन्स्टन के पास कुछ कागज आए। वह जब उन्हें खोलकर देख रहा था तो उसे एक ऐसा कागज मिला जो कुछ कागजों में मिलाकर रख दिया गया था और उसके बारे में किसीको कुछ याद नहीं रहा था। खोलते ही कागज की विशेषता विन्स्टन की समझ में आ गई। दस वर्ष पहले के टाइम्स का यह अधफटा पृष्ठ था। यह ऊपर का हिस्सा था, जिसमें तारीख भी छपी थी। इसमें न्यूयार्क के एक पार्टी-जलसे का चित्र था। इस सामूहिक चित्र के बीच में नेताओं की जगह तीन व्यक्ति थे—जोन्स, आरोन्सन और रदरफोर्ड। इसमें कोई गलती नहीं हो सकती थी क्योंकि चित्र में

पन्द्रह बजे (दिन के तीन) का एकान्त वक्त था। विन्स्टन को याद नहीं आ रहा था कि उस वक्त वह कैसे कैफे में आ गया था। कैफे करीब-करीब बिलकुल खाली पड़ा था। टेलीस्क्रीन से कोई [illegible] तीनों आदमी, चुपचाप कोने में अपनी मेज [illegible] शराब के ताजे गिलास भर-भरकर ला [illegible] शतरंज की बाजी बिछी थी लेकिन [illegible] नहीं [illegible] और थी, शायद आधे मिनट के लिए टेलीस्क्रीन [illegible] संगीत की धुन बदल गई। इसके बाद किसीने गाना शुरू किया —

"चेस्टनट के विशाल वृक्ष के नीचे
मैंने तुम्हें बेचा और तुमने मुझे
वहां पड़े हैं वे और यहांपड़े हैं हम
चेस्टनट के विशाल वृक्ष के नीचे।"

परन्तु वे तीनों अपने स्थान से हिले भी नहीं। लेकिन रदरफोर्ड की तरफ दुबारा विन्स्टन ने देखा तो उसे पता लगा कि रदरफोर्ड की आंखों में आंसू भर आए थे। तभी अत्यन्त भयभीत भाव से, यह बिना जाने कि भय किस कारण हुआ, विन्स्टन ने देखा कि आरोन्सन और रदरफोर्ड दोनों की नाकें टूटी हुई हैं।

कुछ ही दिनों बाद वे फिर पकड़ लिए गए। कहा गया कि रिहाई के बाद से ही वे नये-नये षड्यन्त्र रचने लगे थे। दूसरे मुकदमे में उन्होंने अपने सारे नये और पुराने अपराध स्वीकार कर लिए। उनको फांसी दी गई और उनके इस तरह मारे जाने के बाद भावी सन्तति की चेतावनी के लिए उनके अन्त की कथा इतिहास में लिख दी गई। इनसे कोई पांच वर्ष बाद संभवतः सन् १९७३ में एक दिन विन्स्टन के पास कुछ कागज आए। वह जब उन्हें खोलकर देख रहा था तो उसे एक ऐसा कागज मिला जो कुछ कागजों में मिलाकर रख दिया गया था और उसके बारे में किसीको कुछ याद नहीं रहा था। खोलते ही कागज की विशेषता विन्स्टन की समझ में आ गई। दस वर्ष पहले के टाइम्स का यह अधफटा पृष्ठ था। यह ऊपर का हिस्सा था, जिसमें तारीख भी छपी थी। इसमें न्यूयार्क के एक पार्टी-जलसे का चित्र था। इस सामूहिक चित्र के बीच में नेताओं की जगह तीन व्यक्ति थे—जोन्स, आरोन्सन [illegible]। इसमें कोई गलती नहीं हो सकती थी क्योंकि चित्र [illegible]

उसने बच्चों के इतिहास की पुस्तक उठा ली। उसके मुखपृष्ठ पर बड़े भाई का चित्र था। वे सम्मोहनात्मक आँखें उसकी आँखों में घूर रही थीं। ऐसा लगता था कि कोई ज़बर्दस्त बोझा आपके सिर पर लदा था। आपकी खोपड़ी में वह बोझा घुसा आ रहा है। आपके विश्वासों को वह छिन्न-भिन्न किए दे रहा है। वह आपको अपना तरह विवेक को देने के लिए बाध्य कर रहा है। अन्त में पार्टी आपसे कहेगी दो और दो पांच होते हैं और आपको मानना पड़ेगा। अपने अनुभव को मत मानो। पार्टी का दर्शन या बाह्य यथार्थता कुछ नहीं है। सामान्य विवेक का होना अपराध है। आखिर आप कैसे जानते हैं कि दो और दो चार होते हैं? या गुरुत्वाकर्षण शक्ति कार्य करती है? या अतीत अपरिवर्तनीय है?

पार्टी का कहना था कि आँखों और कानों का सबूत मत मानो सहसा उसका हृदय डूबने लगा। उसने अनुभव किया कि वह पार्टी के अपार शक्ति के आगे कुछ नहीं कर सकेगा। बहस में पार्टी के बुद्धिवादी सदस्य ऐसे तर्क देंगे जिनका उत्तर देना तो दूर, वह उनको समझ भी नहीं सकेगा। फिर भी उसका पक्ष सही है। वे गलत हैं और वह सही। सत्य की रक्षा करनी होगी। भौतिक संसार का अस्तित्व है। उसके कानून नहीं बदलते। पत्थर कठोर होते हैं। पानी गीला होता है। जो चीज़ें किसी सहारे से नहीं टिकी होतीं वे नीचे गिर जाती हैं। यह सोचते हुए विन्स्टन ने अपनी कापी में लिखा :

'दो और दो चार होते हैं, यह [illegible] स्वतन्त्रता है। यदि यह अधिकार मिल जाता है [illegible] जाएंगे।'

|

विन्स्टन सड़क पर आ [illegible] मुन रहा कॉफी की खुशबू—असली [illegible] नहीं, तैरती हुई घुस गई। विन्स्टन अनिच्छापूर्वक [illegible]। कुछ क्षणों के लिए वह अपने शैशव के अर्धविस्मृत संसार में उड़कर पहुंच गया इसके बाद दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ आई। इसके साथ ही जिस प्रकार सहसा खुशबू आई थी, उसी प्रकार वह खो भी गई।

विन्स्टन पर अपने-आपको बचाते हुए नज़र डाली। उनकी निगाहों में जिज्ञासा थी। इस सड़क पर पार्टी की नीली वर्दी साधारण बात नहीं थी। पुलिस के गश्ती दस्ते रोक सकते थे। 'क्या हम आपके कागज़ देख सकते हैं कॉमरेड? आप यहां क्या कर रहे हैं? आपने दफ्तर कब छोड़ा? क्या आपके घर जाने का यह दैनिक मार्ग है?'—आदि-आदि। ऐसा कोई नियम नहीं था कि आप असामान्य मार्गों से होकर न गुज़रें, परन्तु विचार नियन्त्रक पुलिस को पता चल जाए तो वह आप-पर निगाह रखने लगेगी।

अकस्मात् सारी सड़क में हलचल मच गई। चारों तरफ से चेतावनी दी जाने लगी। सब लोग मकानों के अन्दर दौड़ते हुए खरगोशों की भांति घुसने लगे। एक जवान औरत विन्स्टन के सामने कूदकर सड़क पर आई और बाहर खेलते हुए बच्चे को घसीटकर फिर दरवाज़े के अन्दर घुस गई। उसने अपनी छाती पर पड़े एप्रन में बच्चे को लपेट लिया था। यह सब आंख झपकते हो गया। इसी समय काला सूट पहने एक आदमी बगल की गली से दौड़ता हुआ विन्स्टन की ओर आया और आकाश की ओर संकेत करने लगा।

'स्टीमर!' उसने चिल्लाते हुए कहा, 'देखिए! तुरन्त मुंह के बल लेट जाइए।'

राकेट बमों को कुछ लोग स्टीमर कहते थे। विन्स्टन तुरन्त मुंह के बल लेट गया। मज़दूर जब भी ऐसी चेतावनी देते थे तो उनकी आशंका हमेशा सही होती थी। उन्हें पता नहीं कैसे, राकेट बमों के आने की खबर कुछ सेकेंड पहले ही लग जाती थी। कहा यह जाता था कि राकेट आवाज़ से भी अधिक तेज़ चलते थे। एकाएक ज़ोरों का शोर हुआ और फुटपाथ तथा सड़क कांपने लगी। कुछ चूरा-सा बरसकर उसकी पीठ पर गिर पड़ा। जब वह उठा तो उसे लगा कि पास की खिड़की का शीशा चूर-चूर हो गया और उसीका चूरा उसकी पीठ पर गिरा है। यह शीशा खिड़की में लगा था।

यह चलता रहा। आगे दो सौ मीटर की दूरी पर सड़क के आस-पास के मकानों को बम ने नष्ट कर दिया था। आकाश में काले धुएं का बादल-सा बन गया था। और पास मलबा पड़ा था जिसके चारों ओर आदमी खड़े थे। मलबे में दबी उसे रक्त से लथपथ एक कोई लम्बी चीज़

अब वह जिस गली में था वह मुड़कर पहाड़ी के नीचे चली गई थी। उसे ख्याल आ रहा था कि वह आसपास कहीं आ चुका है और अब मुख्य मार्ग दूर नहीं है। तभी कुछ लोगों के चिल्लाने की आवाज़ आई। वह सीढ़ियों के करीब-करीब था जिनके नीचे कुछ दुकानदार बासी सब्ज़ी बेच रहे थे। तब विन्स्टन को याद आया कि वह कहाँ है। यह गली मुख्य सड़क से मिलती थी और मुख्य सड़क पर आकर पांच मिनट से भी कम चलने पर उस कबाड़ी की दुकान आती थी जहां से उसने कापी खरीदी थी। उसी दुकान के कुछ आगे से उसने कलम और स्याही की बोतल खरीदी थी।

वह एक क्षण सीढ़ियों पर ठिठककर खड़ा हो गया और सोचने लगा। गली के दूसरी ओर शराब की दुकान थी जिसकी खिड़कियों पर धूल जमी थी। उसने जल्दी-जल्दी गली पार की।

तभी उसके विचारों का क्रम-भंग हो गया। वह रुक गया और इधर-उधर देखने लगा। वह एक तंग गली में था। इधर-उधर कुछ अंधेरी दुकानें और मकान थे। उसके सिर पर धातु के तीन गोले टंगे थे। उनपर ऐसा लगता था कि मुलम्मा किया हुआ था। उसे ख़याल आया कि वह कहां पर था। यह वही दुकान थी जहां से उसने कापी खरीदी थी।

उसकी नस-नस में भय समा गया। उसने कापी खरीदकर ही कोई कम अपराध नहीं किया था। उसने कसम खाई थी कि अब वह इस दुकान के पास कभी नहीं जाएगा। परन्तु वह विचारों में खोया यहां चला आया था। हालांकि इक्कीस (रात के नौ) बजे थे, परन्तु दुकान अब भी खुली थी। उसने सोचा कि उसकी तरफ बाहर फुटपाथ पर लोगों का ध्यान दुकान के अन्दर रहने से अधिक आकृष्ट होगा। यह सोचते हुए वह अन्दर घुस गया। पूछे जाने पर वह कह सकता था कि रेज़र ब्लेड लेने आया था।

दुकानदार ने टंगा हुआ तेल का लैम्प जला दिया था। रोशनी साफ नहीं थी। दुकानदार की उमर साठ साल थी। वह दुर्बल था, और उसकी कमर झुक गई थी। नाक लम्बी थी। उसके बाल सफेद हो गए थे लेकिन भौंहें अब भी खिचड़ी थीं। उसका चश्मा, चलने का ढंग तथा उसकी मखमल की जैकट से अन्दाज़ होता था कि वह पढ़ना-

लिखना भी जानता है। शायद वह मार्गदर्शक रहा था या संगीतकार। उसकी आवाज़ कोमल थी। उसका उच्चारण भी अन्य मज़दूरों की अपेक्षा गाढ़ था।

दुकानदार ने घुसते ही कहा, 'मैंने आपको फुटपाथ पर ही पहचान लिया था। आपने ही तो पिछले कागज की वह कापी खरीदी थी। वैसा कागज—ओह, वैसा कागज तो अब पिछले पचास वर्ष से नहीं बना है।' इसके बाद चश्मे के ऊपर से देखते हुए उसने कहा, 'क्या आपकी कोई विशेष सेवा कर सकता हूं? या आप वैसे ही घूमते-घूमते चले आए हैं?'

विन्स्टन ने टालते हुए कहा, 'मैं इधर से गुज़र रहा था। अन्दर धसा आया। कोई खास चीज़ तो नहीं चाहता।'

'ठीक है।' दुकानदार ने कहा, 'मैं नहीं समझता कि मैं आपकी ज़रूरत पूरी कर पाऊंगा। देखिए न! दुकान खाली पड़ी है। मैं आपको बताता हूं, अब यह व्यापार ही खत्म हो जाने वाला है। कोई मांग नहीं है और स्टाक भी नहीं है। फर्नीचर और चीनी के बर्तन और कांच की चीज़ें, सब धीरे-धीरे टूट गई हैं। धातु की चीज़ें भी गला दी गई हैं। बरसों हो गए मैंने पीतल का मोमबत्तीदान नहीं देखा।'

यह छोटी दुकान अब भी भरी थी किन्तु एक भी मूल्यवान वस्तु उसमें नहीं थी। चलने-फिरने को भी बहुत कम जगह थी। तस्वीरों के काठ के फ्रेम भरे पड़े थे। इनपर बड़ी धूल जमी थी। इधर-उधर नटों और बोल्टों की ट्रे पड़ी थी। पुराने चाकू तथा कुछ अन्य औज़ार पड़े थे। टूटी घड़ियां थीं। इसी तरह का और भी कूड़ा-करकट भरा पड़ा था। एक मेज़ पर कुछ और चीज़ें थीं। सुनहले काम का सुंघनीदान, खुले डिब्बे तथा अन्य ऐसी चीज़ें। विन्स्टन ने उस मेज़ की तरफ जाते हुए एक गोल, चिकनी तथा चमकती हुई चीज़ देखी। उसने उसे उठा लिया।

यह कांच का टुकड़ा था—एक तरफ मुड़ा हुआ और दूसरी तरफ चौरस, बिलकुल अर्धवृत्ताकार लगता था। इसमें अजीब-सी कोमलता थी। ऐसी कोमलता जैसी वर्षा के जल में होती है। कांच बनाने की विधि और उसके रंग दोनों से यही बात प्रकट होती थी। उसके बीच में अजीब-सा गुलाबी धब्बा था जो कांच के अर्धवृत्ताकार होने के कारण

बड़ा-सा दिखलाई पड़ता था। यह धब्बा देखकर उसे गुलाब के फूल या समुद्री हवा निरीक्षण करने के यन्त्र की याद आ गई।

'यह क्या है ?' विन्स्टन ने खुश होते हुए पूछा।

'यह मूंगा है। भारतीय महासागर में मिला होगा। मूंगों को पहले लोग इसी तरह के कांच में रखते थे। ये सौ वर्ष या इससे भी अधिक पुराना होगा।'

'बड़ा सुन्दर है।' विन्स्टन ने कहा।

'बड़ा सुन्दर है।' दुकानदार ने भी प्रशंसा करते हुए कहा, 'लेकिन आजकल ऐसी चीज़ों की तारीफ करने वाले हैं ही कहां ?' उसने खोलते हुए कहा, 'चूंकि आपको पसन्द आ गया है और आप इसे खरीदना चाहेंगे, इसलिए मैं चार डालर में ही आपको दे दूंगा। एक ज़माना था, जब इसके आठ पौंड मिल जाते थे। आजकल ऐसी चीज़ों की भी परवाह कौन करता है ?'

विन्स्टन ने तुरन्त चार डालर देकर कांच-मूंगे को जेब में रख लिया। विन्स्टन उसके सौन्दर्य से इतना प्रभावित नहीं हुआ था जितना इस बात से कि वह उस बीते युग की यादगार है, जिसके बारे में वह जानने को इतना अधिक उत्सुक है। उसके आकर्षण का एक कारण यह भी था कि उसका कोई उपयोग न था। परन्तु जिस ज़माने में यह बनाया गया होगा, उस ज़माने में अवश्य ही यह कागज़ दबाने के काम आता होगा, यह अनुमान उसने लगा लिया था। वह भारी तो काफी था, किन्तु सौभाग्यवश उसकी जेब ज़रूरत से ज्यादा फूली नहीं दिखलाई पड़ रही थी। ऐसी चीज़ का किसी पार्टी-सदस्य के पास मिलना सन्देहजनक था। वही क्या, कोई भी पुरानी तथा उपयोगिताहीन वस्तु का होना सन्देह का कारण बन सकता था। बुड्ढा दुकानदार चार डालर पाकर बहुत खुश हो गया था। वह तीन या शायद दो डालर भी इस चीज़ के स्वीकार कर लेता।

'ऊपर एक और कमरा है। यदि आप देखना चाहें तो मैं रोशनी कर दूं।' दुकानदार ने कहा, 'उसमें अधिक सामान तो नहीं है। कुछ चीज़ें हैं।'

उसने दूसरा लैंप जला लिया और कमर झुकाए सीधी चली गई ऊपर जानेवाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। ज़ीना पुराना था। पतले-से

रास्ते से होकर विन्स्टन भी दुकानदार के पीछे-पीछे ऊपर चला। कमरे का दरवाजा सड़क की तरफ न होकर उलटी तरफ एक हाते के सामने था। कमरे में फर्नीचर लगा था, जैसे कोई अब भी रहता हो। जमीन में गलीचे का टुकड़ा बिछा था। दीवार पर एक-दो तस्वीरें टंगी थीं। आतिशदान के पास एक आरामकुर्सी भी पड़ी थी। पुराने ढंग की घड़ी, जिसमें १२ तक ही अंक लिखे थे, टिक-टिक कर रही थी। खिड़की के नीचे गद्देदार पलंग था जिसपर उस समय भी बिस्तर बिछा हुआ था। यह पलंग कमरे का एक-चौथाई हिस्सा घेरे था।

वृद्ध दुकानदार ने कहा, 'पत्नी के मरने तक हम लोग यहीं रहते थे। अब मैं धीरे-धीरे फर्नीचर बेच रहा हूं। वह पलंग बड़ा खूबसूरत है, परन्तु शर्त यही है कि आप इसके खटमल पहले नष्ट कर दें। यह भारी भी बहुत है।'

वह लैम्प ऊंचा उठाए था, जिससे सारा कमरा प्रकाशमान रहे। उस प्रकाश में वह कमरा बड़ा आकर्षक प्रतीत हो रहा था। विन्स्टन के दिमाग में सहसा यह बात आई कि कमरा कुछ डालर प्रति सप्ताह किराये पर लिया जा सकता है। शर्त यही है कि वह ऐसा खतरा उठाने को तैयार हो जाए। यह बहुत ही खतरनाक विचार था और इसको दिमाग से तुरन्त ही निकाल दिया जाना ही उचित है। फिर भी उसके मस्तिष्क में अपने पूर्व-संस्कारवश कुछ स्मृतियां जाग उठीं। इस कमरे में बैठने पर उसे ऐसा लगा कि वह बड़ा आराम अनुभव करेगा। वह सोच रहा था, 'वह आतिशदान के समीप पड़ी आरामकुर्सी पर बै होगा। आग पर चाय का पानी केटली में उबल रहा होगा। वह त्रि - कुल एकान्त में होगा। बिलकुल सुरक्षित। उसे कोई देख नहीं रहा होगा। कोई आवाज पीछा नहीं कर रही होगी। कोई शोर नहीं होगा। गुनगुनाती हुई केटली तथा घड़ी की टिक-टिक के अलावा और कोई आवाज तक न होगी।' उसके मुंह से निकल गया :

'यहां टेलीस्क्रीन नहीं है?'

'आह!' दुकानदार ने कहा, 'मैंने ऐसी कोई चीज नहीं लगवाई। बहुत खर्च पड़ता है। और फिर मुझे इसकी जरूरत भी महसूस नहीं हुई। एक छोटी मेज है, परन्तु इसका उपयोग करने के लिए आपको कुछ कंकड़ नीचे लगाने होंगे।'

दूसरे कोने में एक छोटी-सी किताबों की आलमारी थी। उसमें रद्दी के अलावा कुछ नहीं था। मजदूरों के मोहल्लों में भी किताबों को खोजकर उसी प्रकार नष्ट किया गया था जिस प्रकार अन्य स्थानों में। ओशनिया भर में सन् १६६० से पहले प्रकाशित किसी भी पुस्तक की प्रति मिलनी कठिन थी। पलग के सामने तथा आतिशदान के दूसरी ओर रोजवुड के फ्रेम में जडी हुई तस्वीर के सामने बुड्ढा लैम्प लिए हुए खड़ा था।

'और अब यदि आप पुरानी किस्म की तसवीरों मे रुचि रखते हों तो—' दुकानदार ने कहा।

विन्स्टन पास आ गया और तसवीर देखने लगा। एक अण्डाकार भवन था जो लोहे से उभारा गया था। इस इमारत की खिड़कियां चौकोर थीं, इमारत के सामने मीनार थी, इसके चारों ओर रेलिंग भी थी। पीछे की तरफ एक मूर्ति भी थी। विन्स्टन कुछ देर इसे देखता रहा। उसे मूर्ति देखकर खयाल आया कि उसने ऐसी कोई चीज देखी अवश्य है, परन्तु स्पष्ट रूप से कुछ भी याद न आया।

'इस तसवीर का फ्रेम दीवार मे जड़ा है। लेकिन आप चाहेंगे तो मैं इसे निकाल दूगा,' बुड्ढे ने कहा।

'मैं इस इमारत को पहचानता हू,' विन्स्टन ने कहा, 'यह इमारत 'न्याय भवन' के सामने की सड़क के बीचोबीच थी। अब तो केवल खड-हर मात्र रह गया है।'

'बिलकुल ठीक है। अदालती इमारत के बाहर। इसपर बम गिराए गए थे'' सन्'''ओह ! वर्षों पूर्व। यह चर्च था। इस चर्च का नाम सेंट क्लीमेंट्स डेन था।' वह थोड़ी क्षमा-सी मागता हुआ मुस्कराया। उसे लगा कि वह कोई हास्यास्पद-सी बात कह रहा है।

विन्स्टन सोचने लगा, यह चर्च किस शताब्दी मे निर्मित हुआ होगा। लन्दन की किसी भी इमारत की प्राचीनता का निश्चय करना बडा कठिन होगा। कोई बडी आकर्षक इमारत हो, और वह नई-सी दिखलाई पड़ती हो, बस उसीके लिए कह दिया जाता था कि यह क्रांति के बाद बनाई गई है। पुरानी इमारतो को मध्ययुग की कह दिया जाता है। शताब्दियो के पूजीवाद से कोई भी लाभ नहीं हुआ था। और न कोई जनोपयोगी चीज ही इस पूजीवादी युग में बनी थी। वास्तुकला

[illegible] अन्दर का हिस्सा
से भी [illegible] चाहता था। [illegible] के सब
[illegible] मूर्तियां, [illegible] के [illegible]
[illegible] इसे
भी नहीं [illegible] सकता था। [illegible] बहुत ही [illegible]
किया गया था।

'मुझे यह कभी नहीं मालूम हो सका कि यह चर्च था,' उसने कहा।

'बहुत से चर्च अब भी हैं,' वृद्ध ने कहा, 'परन्तु इनको अब दूसरे कामों में लाया जा रहा है।

'सेंट मार्टिन्स अब भी है। यह [illegible] से है। [illegible] की ओर देखती है, [illegible] बाहर है। इस भवन में [illegible] का [illegible] त्रिकोना है। इसके सामने खम्भे हैं। बड़ी-बड़ी सीढ़ियां हैं।'

विन्स्टन इस अन्दर का अच्छी तरह जानता था। यह अब अजायब-घर था। इसमें अब प्रचार की वस्तुएं रखी जाती थीं।—[illegible] बमों के नमूने, तैरते किला के नमूने, शत्रु के अत्याचारों के मोम से बनाए गए नमूने आदि।

विन्स्टन ने वह तसवीर नहीं खरीदी। हाथ के पेपरवेट से भी अधिक इस तसवीर का पास होना खतरनाक था। घर तो उसे ले ही नहीं जाया जा सकता था। यह तभी सम्भव था जब तसवीर को फ्रेम से निकाल लिया जाता। परन्तु वह कुछ मिनट और खड़ा रहा। इस बीच उसने वृद्ध से और बातें कीं। उसे पता लगा कि बुड्ढे का नाम वीक्स नहीं था, जैसा कि दुकान के सामने लगे बोर्ड से प्रतीत होता था। उसका नाम चारिंगटन था। वह तीस साल से यह दुकान चला रहा था। वह बोर्ड पर लिखे नाम को इस बीच बराबर हटाने की सोच रहा था, लेकिन वह यह कर नहीं पाया था।

वह मि० चारिंगटन से विदा लेकर चल दिया। सीढ़ियों पर वह अकेला ही उतरा जिससे वृद्ध उसे सड़क पर जाते न देख पाए। उसने निश्चय किया था कि उचित समय, लगभग एक महीने बाद वह फिर दुकान पर आएगा। तब फिर एक दिन सामुदायिक केन्द्र न जाने के [illegible] सन्देह न होगा। सबसे बड़ी गलती उसने यह हुई थी [illegible] खरीदने के बाद फिर यहां चला आया था और यह [illegible] प्रयत्न नहीं किया कि इस दुकान के मालिक का

यह कोई शारीरिक भय की बात भी नहीं और [illegible] था। शारीरिक श्रम का विचार भी असहनीय था। इसके अतिरिक्त वह अभी [illegible] प्रतीत होती थी, जैसे ही लगती भी थी। अगर वह आत्महत्या की प्रत्यक्ष चेष्टा करता। उसने सोचा कि वह भागता हुआ [illegible] बैठ जाना जाए और जब तक वह बन्द नहीं हो जाए तब तक वहाँ रहे जिससे उसे कम से कम आत्मिक [illegible] तो मिल जाएगा। परन्तु यह भी असम्भव था। एक अजीब निष्क्रियता-सी उभर आ गई थी। वह अन्त से पहले पर पहुँच जाना चाहता था और मकान में पहुँचकर सोना चाहता था।

जब वह अपने फ्लैट पर पहुँचा तो दाईन (रात के दस) बज चुके थे। बत्तियाँ साढ़े तेईस (साढ़े ग्यारह) बजे बुझा दी जातीं। वह रसोई में गया और उसने एक चाय की प्याली भरकर शराब पी। इसके बाद खाने की मेज पर आकर बैठ गया। उसने डायरी निकाल ली। परन्तु एकदम उसे खोला नहीं। टेलीस्क्रीन से कोई नारी-कंठ पतली आवाज में कोई देशभक्ति का गीत गा रहा था। वह संगमरमर की जिल्द के डायरी के कवर को एकटक देखता रहा। वह कोशिश कर रहा था कि टेलीस्क्रीन की आवाज उसके दिमाग से निकल जाए और उससे वह तंग न हो।

वे लोग गिरफ्तार रात को करते थे। उचित यह होता है—वे पकड़ें, उसके पूर्व ही आत्महत्या कर ली जाए। निस्सन्देह कुछ लोग ऐसा ही करते थे। बहुत-से लोग तो आत्महत्या के कारण ही लापता हो जाते थे। परन्तु आत्महत्या करना भी कठिन था। क्योंकि किसी भी प्रकार का हथियार या जहर मिलना बिलकुल असम्भव था।

उसने डायरी खोली, यह जरूरी हो गया था कि कुछ लिखा जाए। टेलीस्क्रीन पर गाने वाली स्त्री अब कोई दूसरा गीत गाने लगी थी। उसकी आवाज सिर पर ऐसे लग रही थी जैसे दिमाग में काँच के टुकड़े घुसे जा रहे थे। हा उसने ओ'ब्रायन के सम्बन्ध में सोचने का [illegible] जिसके लिए वह डायरी लिख रहा था। परन्तु कुछ भी [illegible] वह यह सोचने लगा कि विचार-पुलिस अब उसे [illegible], तब उसका क्या होगा? यदि वे पकड़ते ही मार [illegible] चिन्ता की बात नहीं थी। मरना है यह तो गिरफ्तार

होते ही आदमी सोच लेता था। लेकिन मरने के पहले इकबाली बयान का झंझट था। जमीन पर लोट-लोटकर दया की भीख मांगनी पड़ती थी। टूटी हड्डियां चटकती थीं। टूटे दांत दुखते थे और जहां से सिर के बाल उखाड़ लिए जाते थे वहां खून बहने के बाद जम जाता था और वह हिस्सा बुरी तरह दुखता था। यदि मरना ही है तो यह सब कष्ट क्यों? अपने जीवन के कुछ दिन या सप्ताह क्यों और कम न कर लिए जाएं? जासूसों की नजर से कोई भी नहीं बचा था और कोई भी ऐसा नहीं था जिसने अपने गुनाहों का इकबाल न किया हो। एक बार मानसिक अपराध करने के बाद फिर यह निश्चित हो जाता था कि अमुक तारीख तक आप मार डाले जाएंगे। फिर भी यह भय, आतंक, जो कुछ भी नहीं बदल सकता था, भविष्य के गर्भ में क्यों छिपा था?

उसने पहले की अपेक्षा अधिक सफलता से ओ'ब्रायन की कल्पना कर ली। ओ'ब्रायन ने उससे क्या नहीं कहा था: 'अब हम वहां मिलेंगे जहां बिलकुल अंधेरा न होगा।' वह जानता था कि इसका क्या मतलब था या उसका खयाल था कि वह इसका मतलब समझता था। परन्तु टेलीस्क्रीन से धिक्कार की भांति निकलने वाली आवाज ने उसे आगे नहीं सोचने दिया।

सवेरे का वक्त था। कोई दस या ग्यारह बजे होंगे। विन्स्टन अपने दफ्तर के कमरे से शौचालय जाने के लिए बाहर निकला।

बरामदा रोशनी से जगमगा रहा था। सामने की ओर से एक व्यक्ति आता हुआ विन्स्टन को दिखलाई दिया। कुछ और पास आने पर विन्स्टन ने देखा कि आने वाला व्यक्ति और कोई नहीं वही लड़की थी। कबाड़ी की दुकान के पास रात के अंधेरे में उनकी मुलाकात हुए चार दिन बीत चुके थे। और पास आने पर विन्स्टन ने देखा कि लड़की के हाथ में पट्टी बंधी है और वह पट्टी उसके गले में भी लटकी है। दूर से यह पट्टी इसलिए नहीं दिखलाई पड़ रही थी क्योंकि पट्टी के कपड़े का रंग भी वही था जो उसकी वर्दी का। संभवतः, उसका हाथ उपन्यासों के कथानक तैयार करने वाली मशीन में आ गया था। गल्प विभाग में इस तरह की दुर्घटना बहुधा हो जाया करती थी।

उन दोनों के बीच की दूरी कोई चार मीटर थी, जब सहसा लड़की ठोकर खाकर मुह के बल गिर पड़ी। उसके मुह से एक दर्दभरी चीख निकल गई। अवश्य ही वह अपने घायल हाथ के बल गिरी होगी। विन्स्टन उसके पास पहुंचकर रुक गया। अब वह घुटनों के सहारे उठ बैठी थी। उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया था। परन्तु मुह के आसपास का भाग नित्यप्रति की अपेक्षा कहीं अधिक लाल था। वह एक दृष्टि से उसकी तरफ देख रही थी। लड़की की निगाह में दर्द से अधिक भय था।

विन्स्टन के हृदय में अजब-सा भाव उत्पन्न हुआ। उसके सामने वह दुश्मन था जो उसे मार डालना चाहता था। उसके सामने एक मानव था जो पीड़ाग्रस्त था और जिसके हाथ की हड्डी भी शायद गई थी। वह स्वयमेव उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ चुका था।

ट हाथ के बल गिर जाने पर विन्स्टन को ऐसा लगा जैसे स्वयं

उसका अंग दुख उठा है।

'क्या चोट लग गई ?' उसने पूछा।

'कुछ नहीं ! मेरा हाथ थोड़ी देर में ठीक हो जाएगा।'

वह ऐसे बोल रही थी जैसे उसका दिल बड़ी तेजी से धड़क रहा हो।

'कोई हड्डी और तो नहीं टूट गई ?'

'नहीं, मैं ठीक हू। थोड़ी देर के लिए बड़ा तेज दर्द हुआ था।'

जो हाथ ठीक था, वह उसने बढ़ा दिया। विन्स्टन ने उसका हाथ पकड़कर खड़े होने में मदद की। वह अब प्रकृतिस्थ हो रही थी और पहले से ठीक लग रही थी।

'कोई खास बात नहीं हुई,' उसने बात खत्म करते हुए कहा, 'कलाई में लग गई है। धन्यवाद कॉमरेड।' इसके बाद वह उसी दिशा में बढ़ गई जिस तरफ उसे जाना था। उसके चलने की गति से कोई यह अन्दाज भी नहीं लगा सकता था कि अभी-अभी कुछ हुआ भी था। पूरे काण्ड में कोई आधे मिनट से अधिक समय नहीं लगा था। अपने हृदय के भावों को चेहरे पर न आने देने की उनकी स्वाभाविक आदत पड़ गई थी और इस समय तो वे बिलकुल टेलीस्क्रीन के सामने खड़े थे। परन्तु इतने पर भी क्षणभर के लिए ही सही, आश्चर्य का भाव उनके चेहरे पर अवश्य आया था, उन दो या तीन सेकेण्डों में ही, जितनी देर में उसने उठने के लिए लड़की को सहारा दिया था, उसने विन्स्टन के हाथ में एक कागज सरका दिया था। उसने यह काम इरादतन किया था, ऐसा विन्स्टन को नहीं लगा। उसने शौचालय में घुसते ही उसे अपनी जेब में डाल लिया। कागज का वह टुकड़ा बहुत छोटा-सा था। गोल किया हुआ था, पेशाब करते हुए उसने जेब में ही उगलियों से खोल लिया। उसमें अवश्य ही कोई सन्देश होगा। एक क्षण के लिए उसकी इच्छा हुई कि पानी वाली कोठरी में जाकर कागज को जेब से निकालकर पढ़ ले। परन्तु यह बहुत बड़ी बेवकूफी थी, यह उसे मालूम था। कुछ जगहें ऐसी थीं जहां कि टेलीस्क्रीनों पर हर वक्त नजर रखी जाती थी।

वह अपने दफ्तर वाले कमरे में चला गया। वहां जाकर उस कागज के टुकड़े को उसने मेज पर पड़े कागजों के ढेर में डाल दिया। इसके बाद चश्मा लगाकर लेखनयंत्र उसने अपने सामने खींच लिया। 'पांच मिनट' उसका दिल धड़क रहा था, 'पांच मिनट बाद'। सौभाग्यवश जो काम

गई कर रहा था, बस साधारण सा था। कुछ मोर्चों पैर का
अंतिम रूप देने की आवश्यकता नहीं थी।

कागज पर जो भी लिखा हो, उसका कुछ न कुछ राजनै
महत्व होगा। पर ये अस्वाभाविक प्रतीत हो रही थी। पर
लड़की अवश्य ही विचार-नियंत्रण पुलिस की एजेंट है, औ
समझ नहीं पा रहा कि विचार-पुलिस ने अपना सन्देश देने
पद्धति क्यों चुनी ? सम्भवतः इसका कोई कारण है। श
शायद कोई गलती की गई हो, भुलावा गया हो, आत्महत्या
आदेश दिया गया हो या फिर कोई अन्य प्रकार का जाल बि
हो। दूसरी सम्भावना यह थी कि यह सन्देश किसी गु
आया हो और इसका विचार-पुलिस से कोई सम्बन्ध न
परन्तु वह अपने इस विचार को बराबर दबाने का यत्न कर
शायद 'ब्रदरहुड' नाम की गुप्त संस्था का कोई न कोई सम्मि
होगा। निस्सन्देह यह विचार सर्वथा निर्मूल था, परन्तु जब से
का टुकड़ा उसके हाथ में थमाया गया था, तब से ही बार-बार
उसके दिमाग में आ रहा था। कुछ मिनट बाद उसे एक अ
आया और वह शायद ज्यादा ठीक था। उसकी बुद्धि कह र
मौत का सन्देशा है, परन्तु उसे ऐसा नहीं लग रहा था। उसकी
पूर्ण आशाएं बढ़ रही थीं, दिल जोरों से धड़क रहा था और व
नाई से लेखनयंत्र के माइक में आंकड़े बोलते हुए वह अपनी आ
कांपने से रोक पा रहा था।

इसके बाद उसने काम करके सारे कागज इकट्ठे किए औ
नल में डालकर वापस कर दिया। अब तक आठ मिनट गुज़र
उसने अपनी नाक पर आए चश्मे को ठीक किया। धीरे से
भरी और अगला काम हाथ में लिया। इसके ऊपर ही वह
थी। चिट पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था :

'मैं तुमसे प्रेम करती हूं।'

कुछ सेकेण्डों के लिए वह उसे पढ़कर स्तब्ध हो गया। उ
भी ख्याल न आया कि वह उस अपराध के सबूत को रद्दी कागज
में डालकर जला दे। उसकी इच्छा हुई, वह कागज को दुब
हालांकि वह उसका खतरा जानता था। उसे ... नहीं

कि छोटी-छोटी बातों में अपने लिए खतरा पैदा करना कोई बुद्धिमानी
नहीं है। साढ़े तेईस (रात के साढ़े ग्यारह) बजे वह घर पहुंचकर बिस्तर
पर लेट पाया। जब तक चुप रहे तब तक वह रात के अंधेरे में टेलीस्क्रीन
की पहुंच के बाहर था। इस अंधेरे में वह लगातार सोच सकता था।

अब व्यावहारिक समस्या थी। उस लड़की से कैसे सम्पर्क स्थापित
किया जाए और कैसे मिला जाए ! अब वह इस सम्भावना पर विचार
नहीं करना चाहता था कि वह लड़की किसी प्रकार का जाल बिछा
रही है। जब उस लड़की ने वह चिट उसे थमाई थी तो जो मानसिक
द्वन्द्व का भाव उसके चेहरे पर था, उससे अन्दाज किया जा सकता था कि
कोई षड्यंत्र नहीं था। वह अवश्य ही मन ही मन बहुत डर गई होगी।
केवल पांच, पांच रात पूर्व ही वह इसी लड़की का पत्थर से सिर फोड़
देना चाहता था, लेकिन अब उसके दिमाग में इस बात का ध्यान भी नहीं
आ रहा था। वह उसके तरुण और नग्न यौवन की कल्पना कर रहा था,
जो उसने स्वप्न में देखा था। वह उसे पहले बिलकुल मूर्ख समझता था।
वह समझता था कि उसके दिमाग में घृणा और मिथ्या बातों का पोखर
भरा होगा। अकस्मात् उसे ध्यान आया कि वह कहीं उसके हाथ से न
निकल जाए। यह सोचते ही उसे हरारत-सी हो आई। परन्तु मिलने की
समस्या बड़ी ही टेढ़ी थी। जिधर भी मुह करिए टेलीस्क्रीन सामने था।
वह उससे बातचीत करने के तरह-तरह के उपाय सोच रहा था। वह
हर उपाय पर गौर कर रहा था।

आज सवेरे जैसे वे मिले थे, वैसी बात, स्पष्ट था, दुबारा नहीं हो
सकती थी। यदि वह रिकार्ड विभाग में होती तो उससे मिलना अपेक्षा-
कृत आसान था। परन्तु कथा विभाग के सम्बन्ध में उसका ज्ञान बहुत
कम था। वह किसी बहाने से भी वहां नहीं जा सकता था। यदि वह यह
जान जाता कि वह कहां रहती है, काम पर कब आती है, तो रास्ते में
आते-जाते मिलने की कोई योजना बनाई जा सकती थी। परन्तु घर
जाते हुए उसका पीछा करना सुरक्षित नहीं था। इसका कारण यह था
कि उसे प्रतीक्षा करनी पड़ती, अर्थात् मंत्रालय के सामने इधर-उधर
चक्कर काटने पड़ते। उससे अन्य लोगों का ध्यान उसकी ओर अवश्य
जाता। डाक से पत्र भेजने का तो सवाल ही नहीं उठता। नियमानुसार
. . . को डाकखाने में खोलकर पढ़ लिया जाता था। बहुत

सब मौत पर मिलते हैं। [illegible] करने के लिए बड़ी [illegible] है।
उसके [illegible] हाथ खुली थी। इसके [illegible] की [illegible]
[illegible] हो, उसको [illegible] देखा था [illegible] था। इसके [illegible]
को [illegible] हुआ वह उस लड़की का [illegible] नहीं जानता था।
[illegible] में उसके [illegible] कैंटीन है। यदि वह
किसी [illegible] और [illegible] बीच में हो [illegible]
के हुए, [illegible] और [illegible]
[illegible] के [illegible] की [illegible] हैं।

इसके बाद एक सप्ताह [illegible] बेचैनी में बीता। दूसरे दिन वह लड़की उस समय तक कैंटीन में आई ही नहीं जब तक वह चलने के लिए उठ नहीं खड़ा हुआ। सीटी बज चुकी थी। लड़की की ड्यूटी शायद बदल गई थी। वे एक-दूसरे के पास से बिना नज़र डाले गुजर गए। तीसरे दिन वह अपने साथियों के साथ थी। इसके बाद लगातार तीन दिन तक वह आई ही नहीं। उसका शरीर तथा दिमाग दोनों ही बुरी तरह दुःखी थे। उसे उठना, चलना, फिरना, बात करना, मिलना, जुलना सभी कुछ दुख भरा लग रहा था। नींद में भी वह उसकी कल्पना से मुक्त नहीं हो सकता था। इन दिनों डायरी उसने छुई भी नहीं। उसे मालूम ही नहीं था कि उस लड़की का क्या हुआ। शायद उसे मार डाला गया था। या उसने गलतवश स्वयं ही आत्महत्या कर ली थी। या उसे ओशेनिया के दूसरे कोने पर भेज दिया गया हो।

अगले दिन वह दिखलाई पड़ गई। उसका हाथ गर्दन में पड़ी पट्टी से बाहर था। कलाई पर थोड़ा प्लास्टर अवश्य था। बड़ी मुश्किल से बात करने की इच्छा पर वह काबू पा सका। इसके बाद कई दिन उसे बात करने का मौका भी हाथ लगा। जब वह कैंटीन में आया तो उसने देखा कि वह दीवार से दूर एक मेज पर अकेली बैठी है। काफी सवेरा था और भीड़ अधिक नहीं थी। क्यू धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। जब वह ट्रे लेकर मेज की ओर चला तो भी वह अकेली थी। वह बिलकुल सामान्य भाव से उसकी मेज पर बैठने के लिए आगे बढ़ा। दो सेकेंड बाद वह उसके पास पहुंच जाता, तभी उसके पीछे किसीने उसे आवाज दी, 'स्मिथ!' सुनहले बालों वाला, बेवकूफ-सा दीखने वाला विलशर नाम का युवक उसे अपने पास की एक खाली मेज पर बुला रहा था।

'समय ?'

'उन्नीस बजे।' (सात बजे सन्ध्या)

'अच्छी बात है।'

ऐम्पिलफोर्थ विन्स्टन को नहीं देख पाया और दूसरी मेज़ पर बैठ गया। लड़की ने जल्दी-जल्दी अपना लंच समाप्त किया और चल दी। विन्स्टन सिगरेट पीता बैठा रहा। अपनी बात खत्म कर लेने के बाद फिर वे नहीं बोले। उन्होंने एक-दूसरे को यथासम्भव देखा भी नहीं।

विन्स्टन विक्टरी स्क्वायर में समय के पूर्व ही पहुंच गया था। वह उस स्मारक के चारों तरफ घूमता रहा जिसके शीर्ष पर बड़े भाई की शकल थी। यह शकल दक्षिण की ओर देख रही थी। सड़क पर उसी स्मारक के सामने घोड़े पर एक मूर्ति बैठी थी। यह मूर्ति ओलिवर क्रामवेल की बतलाई जाती थी। सात बजकर पांच मिनट हो गए किन्तु वह लड़की नहीं आई। विन्स्टन के मन में फिर वही पुराना डर उभर आया। शायद उसने अपना विचार बदल दिया है और इसीलिए नहीं आई है। वह धीरे-धीरे उत्तर की तरफ चला गया और सेण्ट मार्टिन चर्च को मन ही मन पहचानकर खुश होने लगा। तभी उसने देखा कि लड़की स्मारक के सबसे नीचे वाले हिस्से में खड़ी है। वह कोई पोस्टर पढ़ने का बहाना कर रही थी। जब तक और लोग न पहुंच जाएं तब तक उसके समीप जाना खतरनाक था। चारों ओर टेलीस्क्रीन लगे थे। तभी लोगों के चिल्लाने और भारी-भरकम ट्रकों के चलने की आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ बाईं ओर से आ रही थी। अकस्मात् सब लोग स्क्वायर के पार सड़क की ओर दौड़ने लगे। लड़की भी स्मारक के कोने पर बने शेरों के सहारे मुड़कर भीड़ में मिल गई। विन्स्टन भी पीछे-पीछे भागा। दौड़ते-भागते हुए उसने किसीके मुंह से सुना कि यूरेशियन सैनिक-बन्दियों का एक जत्था गुज़र रहा है।

स्क्वायर के दक्षिणी भाग में पहले ही भीड़ जमा थी। सामान्यतः, विन्स्टन भीड़ के एक कोने में कहीं खड़ा हो जाया करता था, लेकिन इस बार धक्के मारता और धक्के खाता वह भीड़ के बीचोबीच घुस गया। शीघ्र ही वह लड़की के पास पहुंच गया। वह अब लड़की के बराबर खड़ा था। दोनों एक-दूसरे से कंधे सटाए खड़े थे और एकटक सामने देख रहे थे।

ट्रकों की एक लम्बी पंक्ति धीरे-धीरे गुज़र रही थी। हर ट्रक के कोने पर कठोर मुद्रा में लगातार संगीनें ताने थे। उनके पास छोटी मशीनगन थी। यहाँ भी हरी वर्दी में पीले वर्ण के बहुत-से सैनिक बैठे थे। वे उदास थे और उनके चेहरों से ऐसा लगता था कि वे मंगोलियन हैं। वे ट्रकों के अन्दर से ओरों को ताक रहे थे। कभी-कभी कोई ट्रक उछलता तो वहीं सैनिकों के पैरों में पड़ी बेड़ियाँ खनक उठतीं। एक-एक करके अनेकों ट्रक भी आगे निकल गए। विन्स्टन जानता था कि सैनिक कैदी ट्रक में हैं, लेकिन वह उनको कुछ-कुछ देर बाद देख रहा था। लड़की का कंधा और कोहनी तक का हाथ उसकी बगल तक छिपा हुआ था। उसके गाल विन्स्टन के इतने निकट थे कि वह उनकी उष्णता का अनुभव कर रहा था। बहुत जल्दी ही लड़की ने बात शुरू कर दी। पहले की भाँति निश्चित स्वर से बिना होंठ हिलाए उसने अपनी बात इस तरह कही कि विन्स्टन तो सुन ले लेकिन इसके बाद उसकी आवाज़ भीड़ तथा ट्रकों के आने-जाने के शोर में डूब जाए।

'क्या तुम मेरी आवाज़ सुन पा रहे हो ?'

'हाँ।'

'रविवार को तीसरे पहर खाली हो ?'

'हाँ।'

'तो ध्यान से सुनो। यह याद रखना। पेडिंग्टन स्टेशन जाना...'

सैनिक भाषा में उसने संक्षेप में वह रास्ता बतला दिया जहाँ से उसे जाना था। आधे घंटे की रेल-यात्रा के बाद स्टेशन से बाहर आना और बाईं तरफ मुड़ जाना। दो किलोमीटर पैदल चलना, एक फाटक मिलेगा खुला हुआ, मैदान पर एक पगडंडी दिखलाई देगी, फिर घास के बीच से एक पगडंडी जाती दिखलाई पड़ेगी; झाड़ियों के बीच भी यहीं पगडंडी गई है, फिर एक सूखा पेड़ मिलेगा। इसपर काई जमी है। ऐसे लग रहा था जैसे सारा नक्शा उसके दिमाग में था।

'यह सब याद रहेगा ?' उसने अन्त में पूछा।

'हाँ !' विन्स्टन ने उत्तर दिया।

१०॥ ँ मुड़िए, फिर दाहिने और फिर बायें। फाटक पर साकल

है। वक्त ?'

'कोई पन्द्रह (दिन के तीन) बजे। शायद कुछ इन्तजार करना पड़े। मैं दूसरे रास्ते से पहुंचूगी। अच्छा, आपको यह सब याद रहेगा न ?'

'हां।'

'तो अब मेरे पास से जितनी जल्दी हो सके हट जाइए।'

उसे यह कहने की आवश्यकता नहीं थी। परन्तु एक क्षण के लिए भीड़ से उनका निकलना, हिलना भी मुश्किल था। ट्रक अभी भी गुजर रहे थे। लोगों का मन अभी तृप्त नहीं हुआ था। पहले तो कुछ लोगों ने कुछ शोर मचाया, इसमें पार्टी-सदस्य ही अधिक थे, परन्तु बाद में यह शोर बन्द हो गया। भीड़ में उत्सुकता का भाव ही अधिक था। विदेशियों को, चाहे वे यूरेशिया के हों या ईस्टएशिया के, अजब जानवर समझा जाता था। इन्हें बन्दियों के अलावा अन्य किसी भी रूप में ओशनिया के लोग देख ही नहीं पाते थे। केवल उनकी झलक ही मिलती थी। लोगों को यह भी नहीं ज्ञात होता था कि अन्तत उनका क्या होता था। हा, इतना जरूर मालूम था कि इनमें से कुछ को युद्धोपराधी घोषित करके फांसी दे दी जाती थी। अन्य लापता हो जाते थे। शायद उनसे श्रम-शिविरों मे बेगार ली जाती थी। मगोल चेहरों के बाद अब यूरोपियनों जैसे चेहरे आने लगे थे। ये गन्दे थे, थके थे और सबकी दाढ़िया बढ़ी हुई थीं। गालों की हड्डिया उभर आई थीं। कभी वे विन्स्टन की आंखों में आखें डालकर देखते थे, इसके बाद तुरन्त उनकी आंखें हट जाती थीं। अन्तिम ट्रक में एक वृद्ध था। इसके हाथ की कलाइयां एक-दूसरे पर सामने रखी थीं। ऐसा लगता था कि इस प्रकार हाथ पर हाथ रखने का उसे अभ्यास पड गया है। अब समय आ गया था कि विन्स्टन और लड़की एक-दूसरे से विदा ले लेते। परन्तु अन्तिम क्षण, जब वे अलग होने वाले ही थे, तभी उसका हाथ विन्स्टन के हाथ के पास आया और विन्स्टन ने महसूस किया कि उसका हाथ थोड़ा-सा दबा।

हाथ में हाथ कोई दस सैकेण्ड रहा होगा। परन्तु उसे लगा कि वे दोनों युगों से एक-दूसरे का हाथ पकड़े हैं। उसे लड़की के हाथ की हर उंगली का ज्ञान है। उसने उसकी लम्बी उंगलियों को स्पर्श किया। श्रम से कठोर हुई हथेलियों को अनुभव किया। कलाई के नीचे के कोमल मांस को छुआ। तभी उसे याद आया कि वह यह नहीं जानता कि उसकी

आंखें कैसी हैं ? अत्यन्त सूखी थीं, परन्तु बाहर बालों वाले लोगों की आंखें बहुधा नीली ही होती हैं। पीछे मुड़कर उसे विन्स्टन की दुर्बलता होती। वे हाथ पकड़े थे, परन्तु भीड़ में कोई देख नहीं सकता था। वे धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे। विन्स्टन के दिमाग में अब लड़की की आंखें नहीं बल्कि उस बूढ़ी बन्दी की आंखें घूम रही थीं।

२

विन्स्टन धूप-छाया में होता हुआ गली से गुजर रहा था। जहां पेड़ नहीं होते थे, वहां वह धूप में चल रहा था। पेड़ों के नीचे उसके बाईं तरफ घास का मैदान झीना-सा था, जहां नीले फूलों के पौधे थे। हवा त्वचा का चुम्बन-सा लेती प्रतीत हो रही थी। दो मई थी। जंगल के मध्य भाग से कहीं से कबूतरों के जोड़े की गुटरगूं की आवाज आई।

वह कुछ जल्दी आ गया था। यात्रा में कोई कठिनाई नहीं हुई। प्रकटतः यह लड़की इतनी अनुभवी थी कि उसने विन्स्टन को साधारण भय का अनुभव भी नहीं होने दिया। विन्स्टन ने सोचा कि सुरक्षित स्थान तलाश करने का भार उसपर छोड़ा जा सकता है। वैसे तो लन्दन और गांव दोनों जगह एक-सा ही खतरा था। परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में कम से कम टेलीस्क्रीन नहीं थे। परन्तु इधर-उधर छिपे माइक्रोफोन अवश्य हो सकते थे। इनमें ध्वनि ग्रहण करके सुनी जा सकती थी और आवाज पहचानकर आपको पकड़ा जा सकता था। दूसरे, अकेले यात्रा करना भी सुरक्षित नहीं था, क्योंकि ऐसा करने पर दूसरों का ध्यान आकृष्ट होता था। सौ किलोमीटर के दायरे में आने-जाने के लिए पासपोर्ट को तसदीक नहीं कराना पड़ता था। परन्तु कभी-कभी पुलिस के गश्ती दस्ते स्टेशन पर मिल जाते थे। यदि वे किसी पार्टी-सदस्य को देख लेते तो उससे पासपोर्ट देखने को मांगते और तरह-तरह के सवाल पूछते थे। परन्तु कोई गश्ती पुलिस का आदमी नहीं दिखलाई पड़ा और साथ ही उसने यह भी जान लिया कि उसका कोई पीछा भी नहीं कर रहा। गरमियां थीं। ट्रेनें मजदूरों से भरी थीं। वे सब छुट्टी मनाने की मुद्रा में थे। काठ की बनी बेंचों वाले कम्पार्टमेंट में बैठकर उसने यात्रा की। वह डिब्बा एक मजदूर परिवार से भरा था। उसमें पोपले मुंह

वाली दासी से लेकर दूध पीता बच्चा तक शामिल था। वे लोग अपने सम्बन्धी के यहां जा रहे थे। इसके साथ ही, विन्स्टन को उन्होंने यह भी बतलाया कि वे लोग वहां वाले बाजार में मक्खन भी खरीदेंगे।

वहां कच्ची सड़क कुछ और चौड़ी हो गई थी। जैसा कि उसने बताया था, पगडंडी सामने थी। इसपर शायद पशु ही आते-जाते थे। यह पगडंडी सीधी झाड़ियों में चली गई थी। उसके पास घड़ी नहीं थी। लेकिन पन्द्रह अभी नहीं बजे थे। नीले फूलों के पौधे इतने अधिक थे कि उनको पैरों के नीचे आने से बचाना कठिन हो गया था। वह झुककर कुछ फूल तोड़ने लगा। उसने सोचा, आने पर वह लड़की को फूलों का गुच्छा भेंट करेगा। कुछ ही देर में बड़ा-सा गुच्छा बन गया। अभी वह ठीक से फूल सूंघ भी नहीं पाया था कि उसकी पीठ के पीछे से एक आवाज आई जिसे सुनते ही उसका खून सूख गया। परन्तु वह फूल बटोरता रहा। यही ठीक था। शायद वह लड़की ही हो। या शायद उसका पीछा ही किया जा रहा हो। पीछे देखने का मतलब अपने को दोषी सिद्ध करना था। वह एक के बाद एक फूल तोड़ता रहा। तभी उसके कन्धे पर हल्के से किसीने हाथ रखा।

उसने सिर उठाया। वह लड़की ही थी। उसने सिर हिलाकर चुप रहने का संकेत किया। इसके बाद वे झाड़ियों से होकर जंगल की तरफ बढ़ गए। स्पष्ट था कि वह उससे पहले भी इस जगह आ चुकी थी। वह गड्ढों से ऐसे बचती चली जा रही थी, जैसे उसका यह अभ्यास हो पड़ गया हो। विन्स्टन पीछे था। उसके हाथ में फूलों का गुच्छा था। वह कूदती-फांदती, झाड़ियों को पार करती जा रही थी क्योंकि कहीं-कहीं रास्ता भी नहीं था। विन्स्टन उसके पीछे चलता हुआ अब एक ऐसी जगह आ गया था जो एक छोटा-सा घास का मैदान था और चारों तरफ पेड़ों से घिरा था।

'लो, आ गए।' उसने कहा।

वह अभी उससे कई कदम की दूरी पर खड़ा उसे देख रहा था। अभी तक उसका यह साहस नहीं हो रहा था कि वह उस लड़की के पास जाए।

वह कह रही थी, 'मैं सड़क पर इसलिए कुछ नहीं बोलना चाहती थी कि कहीं कोई माइक न छिपा हो। मेरा ख्याल तो नहीं है कि वहां

कोई नाटक होगा, लेकिन हो सकता है। ऐसी दशा में वे गुप्त ढूंढ़
आसानी पहचान सकते हैं। यहां हम सुरक्षित हैं।'

'हां, इन पेड़ों को देखो।' वे छोटे-छोटे थे। उन्हें कभी काट दिया गया था और अब उनके कटे हुए तनों से शाखें फूट रही थीं। अब उनों का वन फिर तैयार हो रहा था। इनमें से एक भी वृक्ष अभी कलाई से अधिक मोटा नहीं था। 'यहां ऐसी कोई बड़ी चीज नहीं है, जहां माइक छिपाया जा सके। दूसरे मैं यहां पहले भी आ चुकी हूं।' वे केवल बातचीत कर रहे थे। अब वह पहले से अधिक पास आ गया था। वह बिलकुल सीधी उसके सामने खड़ी थी। उसके गालों पर मुस्कान की कुछ व्यंग्यात्मक थी, जिसमें यह भाव था कि वह इतना सुस्त क्यों है। नीले फूल जमीन पर बिखर गए थे। वे अपने ही आप हाथ से छूट गए। विन्स्टन ने उसका हाथ पकड़ लिया।

'क्या तुम मानोगी?' उसने कहा, 'मैं अभी तक यह भी नहीं जानता था कि तुम्हारी आंखों की पुतलियों का रंग कैसा है?' वे भूरी थीं। हल्की-भूरी और उनमें थोड़ी-सी श्यामलता भी थी। उसने अब यह देख लिया था।

'अब तुमने मुझे भली भांति देख लिया न? क्या अब भी तुम मुझे पसन्द करती हो?'

'हां।'

'मैं उन्तालीस वर्ष का हूं। मेरी एक पत्नी है। मैं उससे अलग नहीं हो सकता। मेरे टखने पर ऐसा फोड़ा है, जो कभी अच्छा नहीं होता। मेरे पांच दांत नकली हैं।'

'मुझे इसकी कोई फिक्र नहीं है।'

अगले क्षण ही, पता नहीं कैसे, वह उसकी बाहों में थी। पहले तो उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह उसके आलिंगन-पाश में सच-मुच बंधी है। उसका यौवनपूर्ण शरीर उससे बिलकुल चिपका था। उसके घने काले बाल उसके मुह पर छाए थे। और हां, सचमुच उसने अपना मुह ऊपर उठा लिया था और वह उसके लाल होंठों का चुम्बन ले रहा था। उसने अपनी बाहे विन्स्टन के गले में डाल दी थीं। अब विन्स्टन ने उसे नीचे लिटा दिया। उसने इसका कोई विरोध नहीं किया। वह जो चाहे कर सकता था। परन्तु उसे निकटता के अतिरिक्त

अन्य कोई अनुभूति ही नहीं हो रही थी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। परन्तु निश्चलता की अनुभूति के साथ उसे कुछ गर्वानुभूति हो रही थी। अब लड़की उठ बैठी थी। उसके बालों में नीले फूल लग गए थे। उनको उसने झाड़ दिया। वह उसके सहारे से बैठ गई और अपनी बाहें उसने विन्स्टन की कमर में डाल दीं

'कोई बात नहीं प्रियतम ! जल्दी नहीं है। अभी बहुत वक्त है। परन्तु यह स्थान कितना गुप्त है ? नहीं क्या ? मैं एक बार लड़कियों के एक दल के साथ जब भ्रमण के लिए आई तो खो गई। तभी मैंने यह स्थान खोजा था। यदि कोई इधर आए तो हम उसके पैरों की आवाज़ सौ मीटर दूर से सुन सकेंगे।'

'तुम्हारा नाम क्या है ?' विन्स्टन ने पूछा।

'*जूलिया। और मैं तुम्हारा नाम जानती हूं—विन्स्टन, विन्स्टन स्मिथ।*' उसने जवाब दिया।

'तुमको मेरा नाम कैसे पता लगा ?'

'मैं तुमसे अधिक, और अच्छी तरह बातों का पता लगा सकती हूं, प्रियतम ! बताओ मेरे एक कागज़ पर यह लिखकर देने के पूर्व कि 'मैं तुमसे प्रेम करती हूं' तुम मेरे बारे में क्या सोचते थे ?'

वह उससे झूठ नहीं बोलना चाहता था। उसने कहा, 'मैं तुमसे घृणा करता था। मैं तुम्हारे साथ बलात्कार कर तुम्हें मार डालना चाहता था। दो सप्ताह पूर्व तो मैं पत्थर से तुम्हारा सिर फोड़ देने की बात सोच रहा था। सच बताऊं ! मैं तुम्हें विचार-पुलिस से संबन्धित समझता था।'

*जूलिया बड़े आनन्दपूर्वक ढंग से हंस रही थी। वह इसे अपने छद्म-*वेश की प्रशंसा मान रही थी।

'तुम सोचते होगे कि मैं पार्टी-भक्त सदस्य हूं। वाणी और आचरण से एकदम शुद्ध। मेरे दिमाग में सिवा झण्डों, जुलूसों, नारों और खेलों और सामुदायिक भ्रमणों के अलावा कुछ नहीं रहता। और तुम सोचते होंगे कि मौका मिलते ही मैं तुम्हें विचार-अपराधी घोषित कर मरवा डालूंगी !'

'हां, कुछ इसी तरह की बातें मेरे दिमाग में थीं। आजकल बहुत-सी लड़कियां ऐसा करती हैं, यह तो तुम जानती हो।'

'यह सब इसकी वजह से है,' कहते हुए तरुण सेक्स लीग की कमर-पट्टी उतारकर जूलिया ने पेड़ की डाल पर फेंक दी। कमर पर हाथ पड़ते ही उसे जेब का ख्याल आया और उसने जेब में हाथ डालकर चॉक्लेट निकाली। चॉकलेट के दो टुकड़े करके आधा उसने विन्स्टन को दे दिया। हाथ में लेने के पूर्व सुगन्ध से ही विन्स्टन समझ गया था कि जूलिया के हाथ में कोई असाधारण चॉकलेट है। चॉकलेट का रंग गहरा और चमकीला था और वह रुपहले कागज़ में लिपटा था। साधारण चॉकलेट भद्दे भूरे रंग के होते थे और उनका स्वाद राख-सा लगता था। लेकिन कभी-कभी उसने जूलिया जैसा चॉकलेट भी चखा था।

'तुम्हें कहां मिल गई यह ?' उसने पूछा।

'चोर बाज़ार से !' उदासीन भाव से जूलिया ने कहा, 'मुझे ऐसी चीज़ चाहिए। मैं खिलाड़ी हूं। जासूस-दल की नेता हूं। तरुण सेक्स लीग में हफ्ते में तीन शाम मैं स्वेच्छा से काम करती हूं। मैंने उनकी उटपटांग बातों का लन्दन-भर में प्रचार करने में घंटों बरबाद किए हैं। मैं हमेशा जुलूस में झण्डा लेकर चलती हूं। मैं हमेशा खुश दिखलाई पड़ती हूं और किसी भी काम को करने से जी नहीं चुराती। हमेशा भीड़ में साथ चिल्लाना चाहिए—यही मेरी प्रत्येक को शिक्षा है। सुरक्षित रहने का भी यही रास्ता है।'

चॉकलेट का पहला छोटा टुकड़ा विन्स्टन की जीभ पर घुल गया था। बड़ा स्वादिष्ट था।

'तुम अभी कम आयु की हो,' उसने कहा, 'मुझसे दस या पन्द्रह वर्ष छोटी हो। तुमको मुझ जैसे आदमी में आकर्षण की क्या बात दिखलाई दी ?'

'कुछ चेहरे में थी। मैंने सोचा कोशिश करूं। मुझे बड़ी जल्दी पता लग जाता है कि कौन-से लोग बहुत पार्टी-भक्त नहीं हैं। देखते ही मुझे पता लग गया कि आप 'उनके' विरुद्ध हैं।'

'उनके' शब्द से विन्स्टन ने यह अर्थ लिया कि जूलिया का मतलब पार्टी-अधिकारियों से है जो पार्टी के अन्तरंग सदस्य होते हैं। वह उनसे स्पष्ट रूप से परिहास कर रही थी। वह जूलिया की स्पष्टवादिता से चकित था। जूलिया पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के सम्बन्ध में ऐसे सारे शब्दों का प्रयोग कर रही थी जो पाखाने आदि की दीवारों पर लिखे

दिखलाई पड़ जाते थे। उसे उनका यह काम स्वाभाविक और स्वस्थ प्रतीत हुआ। अब वे धूप-छाया में एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले घूम रहे थे। पट्टी उतार देने के बाद जूलिया बड़ी कोमल लग रही थी। वे बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। जूलिया ने कहा कि छिपने के गुप्त स्थान के बाहर उनका चुप रहना ही उचित है। वे अब घूमते-घूमते जंगल के किनारे पहुंच गए थे। जूलिया ने उसे रोक दिया।

'खुले में मत जाओ। शायद कोई देख रहा हो। हम पेड़ की शाखाओं के पीछे अधिक सुरक्षित हैं।'

अब वे झाड़ियों की छाया में खड़े थे। धूप हजारों पत्तियों से छनकर उनके मुंह पर पड़ रही थी और किरणों में अब भी गर्मी थी। विन्स्टन ने सामने के मैदान को नजर देखा। अकस्मात् वह उस जगह को पहचान-सा गया। वह जानता था वह जगह पुराना चरागाह थी। इसमें चारों तरफ पगडंडियां थीं और इधर-उधर कुछ टीले थे। दूसरी ओर झाड़ियों की ओर पेड़ों की टहनियां हवा में बहुत धीरे-धीरे हिल रही थीं। दूर से लगता था जैसे वे किसी रमणी के केश हों। अवश्य ही आस-पास कहीं छोटी-मोटी झील थी जिसमें बतखें विचर रही थीं।

'यहां कहीं झील है क्या ?' उसने बहुत धीरे-धीरे से पूछा।

'हां ! दूसरे मैदान के किनारे पर। उसमें बड़ी-बड़ी मछलियां हैं। वे पेड़ों की छाया में झील में तैरती दीखती हैं।'

'यह तो बिलकुल स्वर्णिम प्रदेश है।' वह बुदबुदाया।

'स्वर्णिम प्रदेश है ?'

'यह एक ऐसे दृश्य का नक्शा है जो अक्सर स्वप्न में मुझे दिख-लाई पड़ता है।'

'देखो ! देखो !' जूलिया ने कहा।

कोई पांच मीटर दूर बिलकुल उनके मुंह की सीध में पेड़ों की एक डाल पर एक चिड़िया आ बैठी थी। वह धूप में थी और वे छाया में, इसलिए उसने उनको नहीं देखा। डाल पर बैठते ही उसने पंख फैलाए। इसके बाद फिर उन्हें सिकोड़ लिया। थोड़ी देर के लिए अपना सिर झुका लिया जैसे सूर्य को प्रणाम कर रही हो और इसके बाद कूकना शुरू कर दिया। तीसरे पहर की शान्ति में वह आवाज चारों तरफ गूंज रही थी। विन्स्टन और जूलिया मारे आनन्द के एक-दूसरे

सी तरफ देखती हुई खड़ी रही। इसके बाद उसने अपनी वर्दी के
ार को छुआ। और फिर लगभग वैसा ही हुआ जैसा उसने सपने में
ा था। उसने अपने कपड़े एकदम उतार डाले। उसकी त्वचा सूर्य
किरणों में दूध की तरह चमक रही थी। क्षण-भर उसने जूलिया के
ीर को नहीं देखा। उसकी आंखें जूलिया के मुंह पर जमी थीं जिस
अब भी मुस्कराहट थी। वह झुक गया और उसने उसका हाथ
ने हाथ में ले लिया।

'क्या तुम पहले भी ऐसा कर चुकी हो ?'

'निस्सन्देह।—सैकड़ों बार—सैकड़ों बार नहीं तो कम से कम
ीसियों बार।'

'पार्टी-सदस्यों के साथ ?'

'हां, हमेशा पार्टी के सदस्यों के साथ ही।'

'क्या पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के साथ भी ?'

'नहीं, उन सुअरों के साथ नहीं। लेकिन यदि मौका हो तो उनमें
हुतेरे ऐसा काम करने को मिल जाएंगे। वे इतने दूध के धुले नहीं हैं,
ैसा वे कहते हैं।'

उसका दिल बहुत जोरों से धड़कने लगा। वह बीसियों बार ऐसा
कर चुकी है। वह चाहता था ऐसा सैकड़ों, हजारों बार हुआ हो। जिस
बात से जरा भी भ्रष्टाचार का संकेत मिलता था वही बात उसे बड़ी-
बड़ी आशाएं बंधा देती थी। कौन जानता है, सम्भव है पार्टी ऊपरी
तौर पर मजबूत दीखती हो लेकिन अन्दर से सड़ गई हो। बहुत मुम-
किन है कि बलिदान और त्याग के सिद्धान्तों का प्रचार अन्दर की
सड़ांध छिपाने को हो। अब विन्स्टन ने जूलिया को नीचे लिटा दिया।
वे एक-दूसरे के बिलकुल सामने थे।

'सुनो। तुमने जितने आदमियों के साथ सम्भोग किया है, उतना
ही अधिक मैं तुमसे प्यार करता हूं। यह तुम समझ गई न ?'

'हां।'

'···क्या तुम्हें ऐसा करना पसन्द है ? मेरा मतलब केवल अपने
आपसे नहीं है, मैं केवल संभोग के आनन्द की बात पूछता हूं।' विन्स्टन
फिर बोला।

'हां, बहुत।'

वह यही सुनना चाहता था। केवल एक आदमी का प्रेम नहीं, परन्तु काम की तीव्र इच्छा ही वह शक्ति थी जो पार्टी को चूर-चूर कर देती। उसने घास और नीले फूलों पर उसे दबा लिया। इस बार कोई कठिनाई नहीं हुई। अब उसकी सांस इतनी तेज नहीं चल रही थी। कुछ समय बाद वे एक-दूसरे से अपने-आप अलग हो गए। धूप में कुछ और गरमी-सी आ गई थी। दोनों को नींद-सी आ गई। उसने अपने कपड़े खींचकर कुछ भाग जूलिया पर डाल दिया। दोनों एकसाथ सो गए और आधे घंटे तक सोते रहे।

विन्स्टन की नींद पहले खुली। वह उठकर बैठ गया और जूलिया का चेहरा देखता रहा। वह उसकी हथेली का तकिया बनाए सो रही थी। उसका मुंह सुन्दर था। वह तरुण और सबल शरीर नींद में बिलकुल असहाय पड़ा था। उसे दया आ रही थी और यह इच्छा हो रही थी, वह उसकी हर प्रकार से रक्षा करे। उनका आलिंगन संघर्ष था और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति विजय। उन्होंने पार्टी को करारा घूसा मारा था। यह राजनीतिक कर्म था।

३

जूलिया ने कहा, 'हम एक बार यहां और आ सकते हैं। किसी भी स्थान का उपयोग दो बार किया जा सकता है। बेशक, महीने-दो महीने बाद ही यहां आना हो सकेगा।'

जागते ही जूलिया की चालढाल समान्य पार्टी-सदस्य की भांति हो गई। वह एकदम सतर्क थी और शीघ्रतापूर्वक तैयार हो गई। पहले उसने अपने कपड़े पहने। इसके बाद कमर के चारों ओर सेश लाल की पट्टी बांध ली। और इसके बाद वापसी यात्रा की बातें विस्तारपूर्वक निश्चित करने लगी। स्पष्ट था कि जूलिया में जैसी व्यवहार-बुद्धि थी, वैसी विन्स्टन में नहीं थी। ऐसा लगता था कि उसे लन्दन और उसके आसपास के क्षेत्र के बारे में बहुत ज्ञान था। इसका कारण यह था कि उसने अनगिनत सामुदायिक-भ्रमणों में भाग लिया था। अब की बार उसने जाने के लिए जो रास्ता तय किया वह आने वाले मार्ग से बिलकुल भिन्न था। वह एक दूसरे ही रेलवे स्टेशन पर जा निकलना था।

'जिस रास्ते से आओ उससे वापस कभी मत लौटो।' उसने यह कहकर महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त स्थिर कर दिया था। पहले वह रवाना होगी। उसके रवाना होने के आधे घंटे बाद विन्स्टन को प्रस्थान करना था।

उसने चार दिन बाद मिलने का एक स्थान भी निश्चित कर दिया। वे वहां दफ्तर का काम खत्म करने के बाद मिलेंगे। वह स्थान निर्धनों की बस्ती में था। इस बस्ती में एक चोर बाजार था। यहां बराबर भीड़ रहती थी और बड़ा शोर होता रहता था। वह इधर-उधर दूकानों पर जूतों के फीते या सीने का तागा खरीदने के बहाने घूमेगी। यदि सब ठीक-ठाक हुआ तो वह अपनी नाक साफ करेगी। नहीं तो विन्स्टन को बिना उसे पहचाने पास से गुजर जाना होगा। यदि भाग्य ने साथ दिया तो भीड़ में पन्द्रह मिनट बातचीत की जा सकेगी और अगली मुलाकात का स्थान भी तय किया जा सकेगा।

जैसे ही विन्स्टन ने उसके निर्देश समझ लिए वैसे ही उसने कहा, 'अब मैं चलती हूं। मुझे साढ़े उन्नीस (सन्ध्या साढ़े सात) बजे वापस पहुंचना है। मुझे तरुण सेक्स विरोधी लीग के दफ्तर का काम करना है। कुछ पर्चे-वर्चे बांटने होंगे। क्या वाहियात काम है! है नहीं? जरा मेरे कपड़े तो झाड़ दीजिए। मेरे बालों में पत्ते आदि तो नहीं लगे हैं? ठीक से देख लीजिए। अच्छा तो विदा, प्रियतम, विदा।'

उसने अपने-आपको विन्स्टन की बांहों में छोड़ दिया और आलिंगन-पाश में बांधकर जोरों से चुम्बन लिए। एक क्षण ही बाद वह पेड़ों की शाखाओं को हटाकर जंगल में खो गई। ऐसा करते हुए उसने बहुत ही कम आवाज़ की। अब भी उसने जूलिया का जाति-नाम या उसके रहने का पता नहीं पूछा था। परन्तु इससे कोई भी फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि उनके घर में मिलने या परस्पर पत्र-व्यवहार करने की कोई सम्भावना नहीं थी।

वे फिर उस जंगल वाले गुप्त स्थान में कभी नहीं गए। मई में फिर प्रेमालाप करने का केवल एक ही अवसर और मिल सका। यह स्थान जूलिया का जाना हुआ था। यह चर्च का खण्डहर था। उस स्थान पर तीस वर्ष पूर्व एक अणुबम गिरा था। वहां पहुंच जाने के बाद छिपना आसान था, लेकिन वहां से निकलकर आना या जाना खतरनाक था। शेष दिनों वे केवल सड़कों या पार्कों आदि में भीड़ के बीच ही मिल सके

थे। सड़कों पर एक विशेष ढंग से बातचीत करना सम्भव था। वे फुटपाथ पर चलते-चलते बातें करते और यदि आसपास कहीं भी किसी पार्टी-सदस्य को आता देखते या किसी टेलीस्क्रीन के समीप पहुंच जाते तो तुरन्त बिना वाक्य समाप्त किए ही रुक जाते और इसके बाद फिर छूटे हुए वाक्य से बिना सिर उठाए बातें करते और अलग हो जाते। जब दूसरे दिन मिलते तो बिना परिचय के ही बातें शुरू कर देते। जूलिया तो इस प्रकार की बातचीत की बहुत ही अभ्यस्त जान पड़ती थी। ऐसी बातचीत को वह 'किश्तों में बातचीत' कहती थी। बिना होंठ हिलाए उसे बातें करने का अद्भुत अभ्यास था। रात की मुलाकातों में वे किसी प्रकार सबकी आंखों में धूल झोंककर चुम्बन भी ले लेते थे।

कभी-कभी वे लोग अपने मुलाकात के स्थान पर पहुंचकर भी बात नहीं करते थे। कारण, कभी पुलिस का गश्ती दल होता था तो कभी ऊपर हैलीकॉप्टर मंडरा रहा होता था। यदि कुछ कम खतरा हुआ तो भी मिलना कठिन था। विन्स्टन सप्ताह में साठ घंटे काम करता था। जूलिया को इससे कुछ और अधिक घंटे काम करना पड़ता था। उनकी साप्ताहिक छुट्टियां अक्सर अलग-अलग पड़ती थीं क्योंकि छुट्टी का दिन काम की अधिकता या कमी के अनुसार निश्चित किया जाता था। जूलिया की कोई शाम शायद ही कभी खाली होती थी। वह व्याख्यानों और प्रदर्शनों में, तरुण सेक्स विरोधी लीग के प्रचार-साहित्य के वितरण, घृणा सप्ताह के लिए झंडे तैयार करने, बचत अभियान के सिलसिले में छोटी-छोटी रकमें जमा करने के काम में तथा अन्य ऐसे ही कामों में बहुत ज्यादा वक्त देती थी। उसका कहना था, ऐसा करने से अपने प्रेम-पाखण्ड पर पर्दा डाले रखने में सहायता मिलती है। यदि आप छोटे-छोटे नियमों का पालन करते हैं तो बड़े नियम कभी-कभी तोड़ सकते हैं। उसने प्रयत्न करके विन्स्टन को इस बात के लिए राजी कर लिया था कि अन्य उत्साही पार्टी-सदस्यों की भांति वह भी सप्ताह में एक संध्या स्वेच्छा से गोला-बारूद के कारखाने में कार्य करे। अतएव विन्स्टन सप्ताह में एक बार संध्या को चार घंटे बड़े कष्ट से बिताता था। वह डिबरी के ... में बमों के पुर्जों के छोटे-छोटे टुकड़ों को आपस में जोड़ता ... तो हथौड़े बजते थे और दूसरी ओर टेलीस्क्रीन का ... था। दोनों मिलकर अजब समां बांध देते थे।

जब वे घर्ष वाली मीनार के पास मिले तो उनकी जो बातें अधूरी रह गई थीं, वह उन्होंने पूरी कर ली। तीसरे पहर का वक्त था और बाहर बड़ी गर्मी थी। जिस स्थान पर वे ऊपर मीनार में थे, वह जगह भी बड़ी गर्म थी और वहा कुछ बदबू भी थी। यह बदबू कबूतरों की बीट की थी। वे वहा धूल भरे, पत्तियां और टहनी से भरे फर्श पर घंटों बैठे बातें करते रहे। वे बारी-बारी से उठकर मीनार की नुकीली दरारों में भाककर नीचे देख लेते थे, कहीं कोई आ तो नहीं रहा।

जूलिया छब्बीस वर्ष की थी। वह लड़कियों के होस्टल में रहती थी। उसके साथ तीस और लड़कियां रहती थी। और वह जैसा कि विन्स्टन ने अनुमान किया था, कथा-विभाग के उपन्यास-लेखनयन्त्र पर काम करती थी। वह उपन्यास लिखने की सारी यान्त्रिक प्रक्रिया का वर्णन कर सकती थी। उसे आयोजन समिति के निर्देशों से लेकर दोहराने वाले लेखकों के दल के कार्य तक का पूरा ब्यौरा मालूम था। परन्तु वह उपन्यास के छपकर तैयार हो जाने वाले रूप में रुचि नहीं रखती थी। वह पढ़ने-वढ़ने की फिक्र मे नहीं रहती थी। जूतों के फीतों या मुरब्बों की तरह किताबें भी वस्तु थीं जिनका उत्पादन होना चाहिए। बस, इससे अधिक कुछ नहीं।

सन् १९६० के आरम्भ की बातों की उसे कोई याद नहीं थी। क्रान्ति के पूर्व की दशा के बारे में केवल उसके दादा बात किया करते थे। वह जब आठ वर्ष की थी, तभी वे लापता हो गए थे। स्कूल में वह हॉकी टीम की कप्तान थी। उसने लगातार दो वर्षों तक शारीरिक व्यायाम की ट्राफी जीती थी। जासूस दल की वह नेता भी रही है। तरुण सेक्स विरोधी लीग की सदस्या बनने के पूर्व वह यूथ लीग की शाखा-सेक्रेटरी भी थी। चारित्रिक मामलों में उसपर कभी कोई दाग नहीं आया। कथा-विभाग के एक विशिष्ट स्थान पर उसको अपनी चारित्रिक योग्यता के कारण ही काम मिला था। इस जगह मजदूरों के लिए सस्ते किस्म के उपन्यास छापे जाते थे। उस जगह का नाम उन लोगों ने 'कूड़ा-करकट घर' रख छोड़ा था। वह वहा ऐसी पुस्तकों को तैयार करने मे मदद करती थी जो मुहरबंद कागजी लिफाफों में बांधकर बाजार में भेजे जाते थे। इन पुस्तकों के नाम होते थे 'दुष्टता की कहानियां' या 'लड़कियों के स्कूल मे एक रात' आदि। इन किताबों को युवक मजदूर यह समझकर

खरीदने थे कि वे कोई गैर-कानूनी चीज़ खरीद रहे हैं।

'ये कैसी किताबें हैं ?' विन्स्टन ने उत्सुकतावश पूछा।

'ओह, बिल्कुल रद्दी। बड़ी बोर। उनके पास छः कथानक हैं। वे उन्हीं में हेरफेर करके नई-नई पुस्तकें छापते रहते हैं। मैं तो केवल उन मशीन पर काम करती हूं। मैं कभी लेखकों के दल में नहीं रही। मैं साहित्यिक नहीं हूं।'

उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि विभागीय अध्यक्ष को छोड़कर जिस जगह जूलिया काम करती थी, वहां सब लड़कियां ही काम करती थीं। कारण यह था कि लड़कियों की अपेक्षा आदमियों की कामवृत्ति अधिक असंयमी होती है, इसलिए जो गन्दगी वहां छपती थी, उससे लड़कों के बिगड़ जाने की अधिक आशंका थी। जूलिया ने बतलाया, 'वे लोग तो वहां विवाहित स्त्रियों को भी रखना पसन्द नहीं करते। कुमारियों को बड़ा शुद्ध समझा जाता है। लेकिन इस नियम का अपवाद मैं ही हूं।'

जूलिया का पहला प्रेम-काण्ड सोलह वर्ष की अवस्था में साठ साल के एक पार्टी-सदस्य से हुआ था। बाद में उसने गिरफ्तारी से बचने के लिए आत्महत्या कर ली। जूलिया ने कहा, 'अच्छा ही किया, वर्ना वह अपने बयान में मेरा भी नाम ले देता।' तब से फिर अनेक प्रेम-काण्ड हुए। उसके लिए जीवन साधारण और सीधा-सादा था। आप जीवन का आनन्द उठाना चाहते हैं। वे (पार्टी वाले) आपको रोकते हैं। आप नियम भंग करते हैं। वे आपको आनन्द से वंचित रखने के लिए नियम बनाते हैं। आप अपनी जान बचाते हुए नियम भंग करते हैं। यह बिलकुल स्वाभाविक है। वह पार्टी से घृणा करती थी। और वह स्पष्ट शब्दों में यह बात कह भी देती थी। उसने 'ब्रदरहुड' का नाम नहीं सुना था और उसका अस्तित्व भी वह नहीं जानती थी। वह पार्टी के विरुद्ध किसी विद्रोह नहीं करना चाहती थी जो असफल हो जाए। चतुराई इसमें थी कि नियम तोड़ो और ज़िन्दा बचे रहो। वह सोच रहा था—जूलिया जैसे न जाने कितने और व्यक्ति तरुण पीढ़ी में होंगे जो पार्टी को आसमान की तरह अपरिवर्तनीय समझते होंगे। वे उसकी सत्ता के विरुद्ध कभी आवाज़ नहीं उठाते थे। केवल, धोखा देते थे, ठीक उसी तरह जिस प्रकार खरगोश कुत्तों को धोखा देते हैं।

उन्होंने विवाह की संभावना पर कभी विचार नहीं किया। यह बात इतनी असंभव थी कि उसके संबंध में विचार करना भी व्यर्थ जान पड़ता था। यदि विन्स्टन कैथराइन से किसी प्रकार अपना पिण्ड छुड़ा भी लेता तो भी पार्टी-कमेटी ऐसे विवाह की कभी अनुमति नहीं देती। विवाह का तो दिवास्वप्न भी नहीं देखा जा सकता था।

'वह कैसी थी ? आपकी बीवी ?' जूलिया ने पूछा।

'तुमने नई भाषा का यह शब्द सुना है, 'अच्छे विचारों वाली ?' जिसका अर्थ होता है, जो पार्टी के विरुद्ध कोई बात ही न सोच सके—ऐसी थी वह ! घोर पार्टी-भक्त !'

'मैंने शब्द तो नहीं सुना, लेकिन इस प्रकार के लोगों को जानती अवश्य हूं।'

इसके बाद वह अपने दाम्पत्य जीवन की कथा उसे सुनाने लगा। लेकिन ताज्जुब की बात यह थी कि कथा का विशिष्ट भाग जूलिया को पहले ही ज्ञात था। जूलिया ने स्वयं ही उसे बतला दिया कि वह किस प्रकार विन्स्टन के स्पर्श करते ही अपने अंग-प्रत्यंग को कठोर बना लेती होगी, और फिर उसे यह लगता होगा कि कैथराइन उसे पीछे धक्का देकर हटा रही है, हालांकि उसके हाथ विन्स्टन के चारों ओर होते होंगे।

उसने कहा, मैं यह सब भी बरदाश्त कर लेता, किन्तु एक बात मुझे असह्य थी।' इसके बाद विन्स्टन ने उस दिन का विशेष और अनिवार्य कार्यक्रम बतलाया जिस रात कैथराइन उसके साथ ही सोती थी। वह इस रात के कार्यक्रम को एक विशिष्ट नाम से पुकारती थी, जिसकी शायद तुम कल्पना भी नहीं कर सकती।'

'क्यों ? वह कहती होगी, यह पार्टी के प्रति हमारा कर्तव्य है।' जूलिया ने तत्काल कहा।

'तुम्हें कैसे मालूम ?'

'मैंने भी स्कूल में पढ़ा है। वहां सोलह वर्ष से ऊपर की लड़कियों को काम-विज्ञान पर सप्ताह में एक बार व्याख्यान दिया जाता है। तरुण संस्था में भी। वे ये बातें क्यों दोहराते हैं और कूट-कूटकर दिमाग में भर देते हैं।'

इसके बाद जूलिया ने इस विषय में और विस्तार से बातें कीं।

यह काम-सम्बन्धी हर पार्टी-नियम की गहराई को समझती थी—वे बातें भी, जिन्हें विन्स्टन नहीं जानता था। पार्टी न केवल काम-भावनाओं को इसलिए समाप्त कर देना चाहती थी, क्योंकि इनमें हर व्यक्ति का अपना एक अलग मानसिक-जगत् बन जाता है, अपितु इसलिए भी कि ऐसा होने देने से पार्टी का व्यक्ति पर नियंत्रण कम हो जाता था। दूसरे यौन अभावों से लोगों को हिस्टीरिया आने लगता था। यह वांछनीय था। इसको युद्ध-ज्वर के रूप में बदला जा सकता था। लोग इस कारण नेता की पूजा करने के लिए इच्छुक हो जाते थे। जूलिया का कहना था

'प्रेम करने में आपकी शक्ति नष्ट होती है। इसके बाद आप प्रसन्नता अनुभव करते हैं तथा अन्य चिन्ताओं का आप पर असर नहीं होता। पार्टी को यह सह्य नहीं है। वे चाहते हैं, हर समय आपमें से शक्ति फूटती रहे। ये मार्च, हर्षध्वनियां, झंडियों का हिलाना, इन सबकी अधिकता यौन विकृति का चिह्न है। यदि आप अन्तःकरण से प्रसन्न हैं तो बड़े भाई या तीन वर्षीय योजना के सम्बन्ध में आपको उत्तेजित होने की क्या आवश्यकता है? दो मिनट की घृणा-प्रचार की फिल्में तथा अन्य वैसी ही चीजें देखकर आप क्यों उत्तेजित होंगे?'

विन्स्टन सोचता था कि यह बात बिल्कुल ठीक है। कौमार्य या ब्रह्मचर्य व्रत और राजनीतिक अधभक्ति में अवश्य ही गहरा सम्बन्ध था। पार्टी को भय, घृणा करने वाले तथा पागलों जैसी बातों पर विश्वास कर लेने वाले लोगों की जरूरत थी। यह सब बिना इस प्रकार कोई शक्ति दबाए किस प्रकार सम्भव होता? यौन-भावना पार्टी के लिए खतरनाक थी। इसलिए पार्टी ने इसे यह रूप दे रखा था। यही चाल उन्होंने माता-पिता के अभिभावकत्व से भी खेली थी। परिवारों का उन्मूलन असम्भव था। लोगों को बच्चों से बड़ा प्यार होता है। बच्चों को ऐसी शिक्षा दी गई थी कि वे अपने मां-बाप के ही विरुद्ध हो गए थे और उनपर जासूसी करते थे। परिवार विचार नियंत्रक पुलिस की शाखा बन गए थे। ऐसी तरकीब की गई थी—एक-दूसरे के निकटतम व्यक्ति सदा एक-दूसरे पर जासूसी करते थे। यह जासूसी दिन-रात चलती थी।

पता नहीं क्यों, वह फिर सहसा कैथराइन की बात सोचने लगा

पेचकस तथा अन्य औजार ऊपर रखे थे। नीचे कुछ साफ पैकट थे। पहला पैकट जो जूलिया ने विन्स्टन को दिया उसमें से कुछ जानी-पहचानी सुगन्ध आ रही थी। उनमें कुछ रेत जैसी भारी चीज थी। छूते ही वह धसक जाती थी।

'यह चीनी तो नहीं है?' उसने कहा।

'बिल्कुल चीनी, असली चीनी है। सैकरीन नहीं है। यह सफेद डबलरोटी रही, काली सड़ियल रोटी नहीं, और यह मुरब्बे का डिब्बा है। यह दूध का टीन है। मुझे इसे बांधना पड़ गया क्योंकि···।'

'फिर वह चुप हो गई। उसने यह नहीं बतलाया कि उसने ऐसा क्यों किया। सुगंध से कमरा भर गया था, ऐसी सुगंध जिससे वह बचपन से परिचित था। आजकल तो कभी-कभी ही ऐसी सुगंध मिलती थी। कभी किसी दरवाजे से आती तो कभी सड़क पर किसी आदमी के झोले या जेब से और फिर एकदम गायब हो जाती।

'ये कॉफी है, असली कॉफी।' जूलिया ने धीरे से फुसफुसाकर कहा।

'ये पार्टी के अन्तरग सदस्यों को दी जाने वाली कॉफी है। मैं पूरा किलो ले आई हू।' उसने कहा।

'परन्तु यह चीजें तुम्हें मिल कैसे गईं?' विन्स्टन ने पूछा।

'ये सब पार्टी के अन्तरग सदस्यों के लिए हैं। कोई ऐसी चीज नहीं है जो उन सुअरों को न मिलती हो। लेकिन उनके यहां भी तो नौकर-चाकर हैं और वे भी तो चोरी कर सकते हैं। और यह देखो मैं एक पैकट चाय का भी लाई हू।'

विन्स्टन भी उसके पास जमीन मे ही बैठ गया था। उसने पैकट का एक कोना फाड़ दिया।

'यह असली चाय है। जामुन की पत्तिया नहीं।' जूलिया ने कहा। 'इधर काफी चाय आ रही है। शायद हिन्दुस्तान या ऐसी ही किसी जगह पर इन्होंने कब्जा कर लिया है। हा, सुनो, जरा तीन मिनट के लिए तुम मेरी तरफ पीठ करके बैठ जाओ। बिस्तर के दूसरी ओर लेकिन खिड़की के बहुत पास मत जाना। परन्तु जब तक मैं न कहू मेरी ओर मुह न करना।'

विन्स्टन चुपचाप अर्थहीन दृष्टि से एकटक दूसरी ओर मलमल के

लिए जाते थे।

'अब तुम मेरी तरफ देख सकती हो।' जूलिया ने कहा।

उसने फिर जूलिया की तरफ घूमा लिया। क्षण-भर तो वह उसे पहचान ही नहीं सका। वह उम्मीद कर रहा था कि वह उसको नंगा देखेगा। परन्तु वह नंगी नहीं थी। जो परिवर्तन हुआ था, वह उससे भी अधिक था। उसने अपने चेहरे को सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री से सज्जित किया था।

अवश्य ही वह मजदूरों की बस्ती की किसी दुकान में घुस गई होगी और वहां से उसने 'मेकअप' सामग्री खरीद ली होगी। उसके होंठों पर लाली थी। गालों पर भी लाली थी। नाक पर पाउडर था। आंखों के नीचे भी कुछ लगा था जिससे वे चमक गई थीं। मेकअप चतुराई से नहीं किया गया था, परन्तु इन मामलों में विन्स्टन के स्टैण्डर्ड भी कोई बहुत ऊंचे नहीं थे। उसने किसी पार्टी-सदस्या के चेहरे को सौन्दर्य

प्रसाधन सामग्रीयुक्त कल्पना नहीं की थी। जूलिया के बदले हुए चेहरे को देखकर वह चौंक गया। कुछ रंगों के लग जाने से वह खूबसूरत ही नहीं लग रही थी बल्कि पहले से अधिक स्त्रियोचित मुद्रा में दिखलाई पड़ रही थी। उसके अधकटे केश तथा लड़कों जैसी पोशाक उसकी सुन्दरता में चार चांद लगा रहे थे और जैसे ही विन्स्टन ने उसको अपनी बाहों में भरा कि उसके नासापुटों में नकली सेंट की खुशबू घुस गई।

'सेंट भी?' उसने कहा।

'हां प्रियतम! सेंट भी। और तुम्हें मालूम है कि आगे मैं क्या करने जा रही हूं? अगली बार औरतों वाली फ्राक लाऊंगी और इस पतलून को उतार फेंकूंगी। मैं रेशमी मोज़े और ऊंची एड़ी के जूते पहनूंगी। इस कमरे में नारी बनकर रहूंगी—पार्टी की सदस्या नहीं।'

उन्होंने अपने कपड़े उतार फेंके और उस महोगनी लकड़ी के पलंग पर चढ़ गए। वह पहली बार उसके सामने बिलकुल नंगा हुआ था। अभी तक वह अपने दुबले और पीले शरीर को देख बड़ा लज्जित होता था। उसे अपने टखने की नस पर फोड़ा देखकर भी शरम लगती थी। चादर तो कोई न थी लेकिन पलंग पर जो कम्बल था वह हलका होते हुए भी बड़ा मुलायम था। पलंग की लम्बाई-चौड़ाई तथा उसका गुद-गुदापन दोनों के लिए बड़ा आश्चर्यदायी आनन्द था। जूलिया ने कहा, 'इस पलंग में खटमल ही खटमल भरे होंगे। परन्तु क्या किया जाए।' दोहरे पलंग अब नहीं दिखलाई पड़ते। यदि कहीं दीखते भी थे तो केवल मजदूरों के ही मकानों में। विन्स्टन अपने बचपन में इस तरह के पलंग पर कभी-कभी सोता था। जूलिया पहले कभी ऐसे पलंग पर नहीं लेटी थी।

कुछ देर के लिए वे सो गए। जब वे जगे तो कोई पौन घंटा गुज़र चुका था। वह हिला नहीं, क्योंकि उसकी बांह का तकिया लगा जूलिया सो रही थी। उसका अधिकांश पाउडर तथा लाली या तो विन्स्टन के चेहरे पर लग गई थी या तकिये पर। परन्तु गालों पर हलकी लाली अब भी थी। डूबते सूरज की पीली किरणें पलंग के पैताने प पड़ रही थीं। अंगीठीदान चमक रहा था। उसपर रखा पानी खू खौल रहा था। नीचे हाते में औरत का गाना बंद हो गया था। सड़ से बच्चों के शोर की आवाज अब भी आ रही थी। वह सोच रहा

कि क्या बीते जमाने में स्त्री-पुरुषों का गरमी के दिनों में इस प्रकार लेटा रहना, इच्छानुसार बातें करना, और उठने के लिए बाध्य न होना चुपचाप बाहर से आने वाली आवाजों को सुनना स्वाभाविक समझा जाता था ? जूलिया जाग गई थी। उसने आंखें मलीं और कुहनी के बल उठकर जलते स्टोव को देखा।

'ओह, आधा पानी तो भाप बनकर ही उड़ गया होगा,' उसने कहा, 'मैं अभी उठकर झटपट कॉफी बनाती हूं। अभी बहुत समय है। आज-कल तुम्हारे फ्लैटों की बिजली कब काट दी जाती है ?'

'साढ़े तेईस बजे (साढ़े ग्यारह बजे रात)।'

'मेरे होस्टल में तो बिजली ग्यारह बजे ही चली जाती है। इसलिए हम लोगों को इसके पूर्व ही पहुंच जाना चाहिए, क्योंकि—चल भाग यहां से गन्दे !' और जूलिया ने नीचे झुककर अपना एक जूता उठाकर कोने की ओर फेंककर मारा। ठीक उसी तरह जिस प्रकार विन्स्टन ने उसे फिल्म के दौरान गोल्डस्टीन पर डिक्शनरी फेंकते देखा था।

'कौन था ?' उसने आश्चर्य से पूछा।

'चूहा। वह अपने बिल से नाक चमका रहा था। वहां एक छेद है।'

'अच्छा ! इस कमरे में चूहे भी हैं ?' विन्स्टन ने कहा।

जूलिया लेट गई थी। उसने कहा, 'यहां सब जगह हैं। हमारे होस्टल के रसोईघर तक में हैं। लन्दन के कुछ भागों में तो केवल चूहों की ही बस्ती है। तुम्हें मालूम है, वे बच्चों पर हमला कर देते हैं ? हां, कुछ स्थानों में तो दो मिनट के लिए भी बच्चों को माताएं जमीन पर लिटाकर अकेला नहीं छोड़तीं। हमला बड़े-बड़े भूरे चूहे करते हैं। और सबसे खतरनाक बात तो यह है कि वे...।'

'बस, बस, बन्द करो।' विन्स्टन ने कसकर अपनी आंखें बन्द कर लीं।

'प्रियतम, क्या हुआ ? तुम्हारा चेहरा तो एकदम पीला पड़ गया है ?'

'मुझे चूहों से सबसे अधिक डर लगता है।'

'फिक्र न करो, डियर।' जूलिया ने कहा, 'मैं इन गन्दे जानवरों को नहीं घुसने दूंगी। मैं जाने के पूर्व इस छेद के मुंह को किसी चीज

से मर दूंगी। अगली बार सीमेन्ट प्लास्टर लाकर इसे अच्छी तरह बन्द कर दूंगी।'

जूलिया बिस्तर से उठ पड़ी थी और उसने अपने कपड़े पहन लिए थे। उसने कॉफी बना ली थी। सुगन्ध इतनी तेज थी कि उसे उठकर खिड़की बन्द कर देनी पड़ी। उसे लगा कि कहीं इस गध से कोई उत्सुकतावश कमरे में झांकने ऊपर न आ जाए। चीनी की वजह से कॉफी में रेशम जैसी चमक आ गई थी। सैक्रीन की वजह से इस चमक को वह क्यों हुए भूल गया था। जूलिया अपनी पतलून की एक जेब में हाथ डाले और दूसरे में डबलरोटी तथा मुरब्बा लिए कमरे में इधर से उधर घूम रही थी। वह कभी उदासीन भाव से बुक-केस को देखती और कभी तिपाई की मरम्मत की तरकीब बताने लगती और कभी आरामकुर्सी पर कूदकर बैठ जाती और देखती कि उसमें बैठने से आराम मिलता है या नहीं। उसे पुरानी घड़ी देखने में भी मजा आता था। कांच के पेपर-वेट को रोशनी में अच्छी तरह देखने के लिए वह उसे पलग पर ले आई। उसने पेपरवेट जूलिया के हाथ से ले लिया। उसमें अन्दर का भाग वर्षा के जल जैसा लगता था।

'यह क्या है?' जूलिया ने पूछा।

'कुछ नहीं, मेरा मतलब है, यह कभी काम में नहीं लाया गया। यही बात मुझे पसन्द है। यह इतिहास का एक अंश है, जिसे पार्टी-अधिकारी बदलना भूल गए। यह सौ वर्ष पूर्व की दुनिया का सन्देश है।'

'और यह चित्र···' उसने उंगली उठाकर दिखलाते हुए कहा, 'और यह तस्वीर भी क्या सौ साल पुरानी है?'

'और ज्यादा, शायद दो सौ बरस। ठीक-ठीक तो नहीं कहा जा सकता। आजकल कोई चीज कितनी पुरानी है, यह बतलाना बड़ा कठिन है।'

वह उसे देखने और आगे बढ़ गई। थोड़ी देर बाद तस्वीर देखकर उसने कहा, 'ये कौन-सी जगह है? ऐसा लगता है मैंने इसे पहले भी देखा है।'

'यह चर्च है या था। इसका नाम सेंट क्लीमेंट्स डेन था।'

'मैं शर्त लगाकर कहती हूं,' जूलिया ने कहा, 'इस तस्वीर में खटमल भरे हैं। मैं इसे उतारकर एक दिन इसकी सफाई करूंगी। अब

बढ़ता जा रहा था। उसके पास एक छोटी मशीनगन थी। आप चाहे जहाँ खड़े हों, मशीनगन की नोक आपकी तरफ ही तनी लगती रहेगी। यह पोस्टर बड़े भाई के चित्रों से भी अधिक संख्या में हर खाली स्थान पर लगा दिया था। मजदूरों को आमतौर पर युद्ध आदि की फिक्र नहीं रहती थी, लेकिन उनमें भी देशभक्ति का ज्वार लाने की तैयारी की जा रही थी। अब राकेट बमों से मरने वालों की संख्या भी बढ़ने लगी थी। एक बम सिनेमाघर पर गिरा और सैकड़ों व्यक्ति जिन्दा दफन हो गए। मुर्दों का बड़ा लम्बा जुलूस निकला और बाद में रोष प्रकट करने के लिए सभा हुई। एक बम खेल के मैदान पर गिरा और शाम को जो बच्चे वहाँ खेलने आए थे उनमें से दर्जनों मर गए। यूरेशियन सैनिक वाले पोस्टर की सैकड़ों प्रतियाँ स्थान-स्थान पर फाड़ डाली गईं। उनको जला दिया गया। इन झगड़ों में बहुत-सी दुकानें भी लूट ली गईं। तभी यह अफवाह फैला दी गई कि जासूस रेडियो तरंगों से राकेट फेंक रहे हैं। एक वृद्ध दम्पति के घर में रहने वालों को विदेशी समझकर आग लगा दी गई और वे जिन्दा जल गए।

जब मि० चारिंगटन के कमरे में जूलिया और विन्स्टन पहुँचे तो वे नंगे होकर पास-पास लेट गए। कपड़े इसलिए उतार दिए थे कि गर्मी न लगे। चूहा फिर कभी नहीं आया। परन्तु गर्मी बढ़ने के साथ खटमलों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। लेकिन कोई चिन्ता की बात नहीं थी। गन्दा हो या साफ, कमरा किसी स्वर्ग से कम न था। जैसे ही वे आते थे, चारों तरफ चोर बाजार से खरीदी हुई कीड़े मारने की दवा छिड़क देते थे। कपड़े उतार फेंकते थे और सम्भोग करते थे। पसीना खूब निकलता था, लेकिन इसकी उन्हें चिन्ता न थी। इसके बाद सो जाते थे।

उठते तो देखते कि खटमल फिर इकट्ठे हो गए हैं और उनपर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं।

चार, पांच, छः और सात बार वे उसी कमरे में जून के महीने में मिले। अब हर वक्त शराब पीना विन्स्टन ने छोड़ दिया था। उसे अब शराब की जरूरत भी नहीं थी। वह पहले से अधिक मोटा हो गया था। उसका नस के ऊपर का दुखने वाला फोड़ा भी बैठ गया था। सवेरे उसे तेज खांसी के दौरे आते थे, वे भी अब बंद हो गए थे। जीवन

अब उतना असह्य नहीं रहा था। टेलीस्क्रीन को देखकर वह अब मुंह नहीं बनाता था। और न उसकी यह इच्छा होती थी कि वह जोरों से गालियां बके। अब उनका घर था, गुप्त स्थान था, इसलिए बुरा नहीं लगता था कि वे कभी-कभी कुछ घंटों के लिए ही मिल पाते हैं। अब तो मुख्य बात यह थी कि कबाड़ी की दुकान के ऊपर जो कमरा था, वह बना रहे। यह जानना कि कमरा सुरक्षित है, उसमें रहने के ही बराबर था। कमरा एक दुनिया थी जिसमें बीते हुए संसार के मृत जीव भी चल, फिर और घूम सकते थे। विन्स्टन सोच रहा था, मि० चारिंगटन भी मृतजीव ही है। ऊपर कमरे में जाते हुए वह उनसे बातें करने के लिए बहुधा कुछ मिनटों के लिए ठहर जाया करता था। वृद्ध कहीं बाहर नहीं जाता था और ऐसा लगता था कि उसके पास ग्राहक भी नहीं आते थे। वह प्रेत की तरह रहता था। उसके दो स्थान थे। या तो अंधेरी दुकान या उससे भी अंधेरी रसोई, जहां मि० चारिंगटन खाना बनाते थे। रसोई में अन्य चीजों के साथ पुराने किस्म का ग्रामोफोन था जिसमें बहुत बड़ा भोंपा लगा था। विन्स्टन से बातें करने का मौका पा वह खुश होता था। वृद्ध की नाक बड़ी लम्बी थी और उसके चश्मे का कांच बड़ा मोटा था। वह अपने कंधे झुकाए और मखमली जैकेट पहने जब अपनी दुकान में घूमता था तो ऐसा लगता था कि वह कोई व्यापारी नहीं बल्कि संग्रहकर्ता है। वह विन्स्टन से कभी कुछ भी खरीदने को नहीं कहता। वह केवल उन चीजों की तारीफ चाहता था। मि० चारिंगटन की बातें सुनना ठीक उसी प्रकार था जिस प्रकार पुराने संगीतवक्स का बजाना।

दोनों जानते थे—एक तरह से यह बात कभी उनके दिमाग से नहीं निकली थी—कि जो कुछ हो रहा है, वह अधिक दिनों तक नहीं चलेगा। कभी-कभी तो उन्हें ऐसा लगता था कि मृत्यु उतनी ही सन्निकट है जितना बिस्तर, जिसपर वे लेटे हैं। वे एक-दूसरे को छाती से लगा लेते थे। उनकी दशा ठीक उस व्यक्ति की भांति थी जो आनन्द के अमृत का आखिरी घूट भी मरने के पांच मिनट पूर्व तक बड़ी तृष्णा से पी रहा होता है। कभी-कभी उन्हें लगता कि वे सुरक्षित ही नहीं बल्कि उनकी यह व्यवस्था स्थायी भी है। उस कमरे में उनको लगता था कि कभी कोई नुकसान नहीं पहुंच सकेगा। वहां पहुंचना कठिन

और एक तरह से समझदार भी था। परन्तु [illegible] हुई था। कभी-कभी वे लोग खुले विद्रोह के दिवास्वप्न भी देखते थे। यदि भाग्य से बच निकले तो वे शेष जीवन-भर अपना यह गुप्त सम्बन्ध बनाए रखते। या कैथराइन शायद मर जाए और फिर जूलिया से वह शादी कर लेता। और नहीं तो वे दोनों एकसाथ आत्महत्या कर लेते। या वे गायब हो जाएँगे। अपना रूप कुछ बदल देंगे। मजदूरों की भाँति बोलना सीख लेंगे और किसी कारखाने में नौकरी कर किसी तंग गली में रहकर बाकी जिन्दगी गुजार देंगे। परन्तु दोनों जानते थे, ये बेकार की बातें हैं। सच यह था कि बचने का कोई रास्ता नहीं था। एक ही व्यावहारिक योजना थी—आत्महत्या की और उसे भी काम में लाने का उनका इरादा नहीं था। वे एक के बाद दूसरा दिन, एक के बाद दूसरा सप्ताह ठीक उसी तरह बिताते थे जिस प्रकार मनुष्य के फेफड़े तब तक सांस लेते रहते हैं, जब तक उन्हें हवा मिलती रहती है।

कभी-कभी वे पार्टी के विरुद्ध विद्रोह करने की बात भी सोचते थे। परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं था कि इस दिशा में पहला कदम किस प्रकार उठाना जाए। यदि कल्पित राजद्रोही संस्था 'ब्रदरहुड' का अस्तित्व हो भी तो उसका पता कैसे लगाया जाए, यह एक समस्या थी। विन्स्टन ने ओ'ब्रायन और अपने बीच के स्वभाव या भावनागत घनिष्टता का हाल जूलिया को बतलाया। उसने यह भी कहा कि वह चाहता है कि स्वयं ओ'ब्रायन से जाकर मिले और कहे कि मैं पार्टी का शत्रु हूँ और उसकी सहायता का अभिलाषी। हैरानी की बात थी कि विन्स्टन की यह बात जूलिया को असम्भव नहीं लगी। वह आदमियों को उनके चेहरे से भाँप लेती थी। दूसरे, जूलिया की यह भी धारणा थी कि हरएक व्यक्ति मन ही मन पार्टी से घृणा करता है। यदि हर व्यक्ति यह जान जाए कि खतरा नहीं है तो वह पार्टी के नियमों का अवश्य ही उल्लंघन करेगा। परन्तु उसका यह विश्वास न था कि कोई व्यापक विरोधी दल है या उसका कोई अस्तित्व भी हो सकता है। गोल्डस्टीन और उसके साथियों को अपने मतलब के लिए पार्टी ने रख लिया है और जिसपर आप केवल विश्वास करने का बहाना करते हैं। अनेकों बार वह उन आदमियों की फांसी के लिए चिल्लाई है ... नाम भी कभी उसने नहीं सुने और जो अभियोग उनपर

लगाए गए थे उनकी सत्यता में उसे रंचमात्र भी विश्वास नहीं था। जब मुकद्दमे चलते थे तो वह उन कुछ लोगों के साथ होती थी जो अदालतों में दिन-रात बैठे-बैठे यह धुन लगाए रहते थे कि राजद्रोहियों को मौत की सज़ा दो। दो मिनट की प्रचार-फिल्म में वह गोल्डस्टीन के विरुद्ध चिल्लाने में सबसे आगे रहती थी। फिर भी गोल्डस्टीन के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। गोल्डस्टीन के सिद्धान्तों का भी उसे ज्ञान नहीं था। वह क्रान्ति के दौरान बालिका थी। उसे सन् १९५० और १९७० के बीच हुए विचारों-सम्बन्धी संघर्ष की कोई विशेष याद नहीं थी। कोई स्वतंत्र राजनीतिक विरोधी दल या आन्दोलन हो सकता है, इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी। और फिर कुछ भी हो, पार्टी अजय-अमर थी। वह सदैव रहेगी और उसका रूप भी यही रहेगा। आप केवल उसके खिलाफ गुप्त रूप से विद्रोह कर सकते हैं, गुप्त रूप से उसकी आज्ञाओं का पालन न करने का अवसर निकाल सकते हैं। कभी-कभी कोई हिंसात्मक कार्य भी कर सकते हैं, जैसे किसी को मार डालना या कोई चीज़ बारूद से उड़ा देना।

कई बातों में जूलिया विन्स्टन से अधिक तेज थी और उसपर पार्टी-प्रचार का शीघ्रता से असर भी नहीं पड़ा था। जब उसने किसी सिलसिले में यूरेशिया के विरुद्ध चलने वाले युद्ध का ज़िक्र किया तो वह जूलिया के मुंह से यह सुनकर चकित रह गया कि युद्ध नहीं हो रहा। लन्दन पर जो राकेट बम प्रतिदिन गिर रहे हैं, उन्हें शायद लोगों को डराए रखने के लिए ओशनिया की सरकार स्वयं गिरा रही है। यह ऐसा विचार था जो उसके दिमाग में कभी आया ही नहीं था। दो मिनट की प्रचार-फिल्म के दौरान जूलिया का कहना था कि वह कठिनाई से अपनी हंसी रोक पाती थी। वह सरकारी बातों को केवल इसलिए मान लेती थी क्योंकि अक्सर सच या झूठ में उसे कोई अन्तर नहीं लगता था। यथा, उसने यह मान लिया था कि हवाई जहाज़ों का आविष्कार पार्टी ने किया है। उसने यह स्कूल में पढ़ा था। अपने स्कूल के दिनों में, विन्स्टन को याद आया, पार्टी केवल यह दावा करती थी कि उसने हैलीकॉप्टर बनाए हैं। बारह साल बाद जूलिया के स्कूल के दिनों में तो वह हवाई जहाज़ों का आविष्कार करने का दावा करने लगी थी। और अब विन्स्टन ने बतलाया कि हवाई जहाज़ उसके पैदा होने के

हूं कि अतीत के बारे में झूठ बोला जा रहा है, लेकिन मैं इसे प्रमाणित नहीं कर सकता। एक बार वास्तविकता को झूठ मे बदल देने के बाद उसका कोई प्रमाण ही शेष नहीं रहता। एक ही ऐसा मामला था जिसके बारे में मेरे हाथ में ठोस सबूत आया था।'

'वह क्या चीज़ थी ?'

'वह तस्वीर थी। परन्तु कुछ ही मिनट के बाद मैंने उसे फेंक दिया। परन्तु आज यदि ऐसा ही प्रमाण मेरे हाथ आ जाए तो मैं उसे अवश्य रख लूगा।'

'मैं ऐसा नही करुगी।' जूलिया ने कहा, 'मैं खतरा उठाने को अवश्य तैयार हूं लेकिन तभी जब कोई फायदा हो। यदि आप उसे रख भी लेते तो भी क्या लाभ होता ?'

'शायद अधिक लाभ न होता। यदि मैं किसी अन्य व्यक्ति को दिखलाता तो शायद उसके दिमाग मे भी थोडा-सा सन्देह उत्पन्न हो जाता। मैं नही समझता कि हम जीवनकाल मे कोई परिवर्तन कर पाएंगे। परन्तु छोटे-छोटे विद्रोही दल अवश्य बन सकते हैं। ये दल क्रमशः बढ सकते हैं। कुछ रिकार्ड भी पीछे छोड़े जा सकते हैं। इससे अगली पीढ़ी हमारे काम को आगे ले जा सकती है।'

'मेरी अगली पीढ़ी मे कोई रुचि नही है। मैं तो अपने-आपमे तथा तुममे रुचि रखती हू।'

'तुम तो कमर से नीचे के हिस्सों में ही विद्रोही हो।' उसने कहा।

जूलिया को यह बात बड़ी अच्छी लगी और उसने विन्स्टन को प्रसन्नता के मारे बाहो मे भर लिया।

पार्टी के सिद्धान्तो की आलोचना में जूलिया को जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। वह इन सब बातो पर कोई ध्यान नही देती। ये बेकार की *बातें हैं, क्यों अपना दिमाग खराब किया जाए। वह जानती है कि कब* हर्षध्वनि करनी चाहिए और कब थू-थू—और बस इतना ही जानना आवश्यक है। उससे बातें करते हुए विन्स्टन ने अनुभव किया कि पार्टी-भक्ति बिना सिद्धान्त जाने भी कितनी आसान है ? आप कुछ भी विश्वास करा सकते हैं। वे जो कहा जाता था वह मान लेते थे।

का कोई आदमी पहले कभी था ही नहीं। उसका प्रत्यक्षतः स्मरण किया जाना अक्षम्य अपराध होता। ओ' ब्रायन का यह कदम अवश्य ही किसी बात का संकेत होगा। वे धीरे-धीरे रास्ते के छोर तक चले गए। यहां ओ' ब्रायन ने चश्मा नाक पर रखने के बाद कहा, 'मैं तुम्हें बतलाना चाहता हूं कि तुमने अपने लेख में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो समय के अनुकूल नहीं हैं। परन्तु वे अभी हाल ही में निरर्थक हुए हैं। तुमने नई भाषा की डिक्शनरी का दसवां संस्करण देखा है क्या ?'

'नहीं,' विन्स्टन ने कहा, 'क्या वह छप गया है ? हम लोग रिकार्ड विभाग में अब भी नवां संस्करण ही काम में ला रहे हैं।'

'मेरा खयाल है, अभी दसवां संस्करण कुछ महीने और न निकल सकेगा। परन्तु कुछ अग्रिम प्रतियां उपलब्ध हैं। मेरे पास भी एक है। शायद तुम उसे देखना पसन्द करो !'

'जी, बहुत अधिक।' विन्स्टन ने इशारा समझकर कहा।

'कुछ नई चीजें बड़े काम की हैं। क्रियाएं बड़ी कम हो गई हैं। यह बात तुम्हें अच्छी लगेगी। क्या मैं किसी के हाथ डिक्शनरी भेज दूं ? परन्तु मैं ऐसी बातें भूल जाता हूं। न हो तो तुम मेरे फ्लैट में आ जाओ और उसे अपने सुविधानुकूल समय पर ले लो। क्या यह ठीक रहेगा ? मैं अपना पता तुम्हें बताए देता हूं।'

वे उस समय एक टेलीस्क्रीन के सामने खड़े थे। कुछ सोचते हुए ओ' ब्रायन ने अपनी दोनों जेबों में हाथ डाले और चमड़े की जिल्द मढ़ी एक पॉकेट-बुक तथा सोने की पेंसिल निकाली। ओ' ब्रायन ने पता इस प्रकार लिखा कि कोई भी आदमी जो टेलीस्क्रीन के दूसरे छोर पर हो वह तुरन्त पढ़ सकता था कि ओ' ब्रायन ने क्या लिखा है। उसने पता लिखा और कागज फाड़कर विन्स्टन को दे दिया।

'मैं शाम को अक्सर घर पर ही रहता हूं,' ओ' ब्रायन ने कहा, 'यदि न रहूं तो भी डिक्शनरी मेरा नौकर तुम्हें दे देगा।'

वह चला गया। वे एक-दूसरे से अधिक से अधिक कुछ मिनटों तक बातें करते रहे होंगे। इस घटना का एक ही मतलब था—ऐसा इन्तज़ाम किया गया था कि विन्स्टन ओ' ब्रायन का पता जान ले। यह ज़रूरी था। बिना सीधे पूछे किसी के रहने के स्थान का पता जाना ही नहीं जा सकता था। किसी प्रकार की कोई डायरेक्टरी जो ...

ओ' ब्रायन का मतलब था, 'यदि तुम कभी मुझसे मिलना चाहो तो मेरा यह पता है जहां भेंट हो सकती है।' सम्भव है डिक्शनरी में कोई सन्देश भी छिपा हो। जो कुछ भी हो, एक बात निश्चित थी। जिस षड्यंत्रकारी दल की कल्पना उसने की थी वह सही था। वह उस दल की चौखट तक पहुंच गया था।

वह जानता था कि उसे देर या सवेर ओ' ब्रायन के बुलाहट का सम्मान कर जाना ही पड़ेगा। शायद कल, या शायद कुछ समय बाद, यह तय नहीं था। अब जो हो रहा था वह वर्षों की प्रतीक्षा का परिणाम था। पहला गुप्त मानसिक विचार था। दूसरा था डायरी लिखना। अब शब्दों से आगे कुछ काम करना था। आखिरी काम प्रेम मंत्रालय में होने वाला था। उसने स्वीकार कर लिया था, अन्त तो कार्य के आरम्भ में ही था। ओ' ब्रायन का मतलब समझ जाने के बाद उसका शरीर मौत जैसी ठंडक अनुभव कर रहा था। वह यह तो सदैव जानता था कि कब्र है और वह उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

७

विन्स्टन जागा तो उसकी आंखों में आंसू भरे थे। जूलिया सोते-सोते उसकी तरफ खिसक आई थी। वह कुछ-कुछ बुदबुदाई। जो शब्द उसके मुंह से निकले उसका मतलब शायद यह था कि क्या बात है?

'मैंने सपना देखा है'''।' उसने कहा और फिर बात पूरी करने के पहले ही रुक गया।

वह चुपचाप आंखें मूंदे पड़ा था। वह अब भी स्वप्न के सम्बन्ध में ही सोच रहा था। वह लम्बा-चौड़ा सपना था जिसमें उसका सारा जीवन चमक रहा था, ठीक उसी तरह जिस तरह गर्मी में वर्षा के बाद सन्ध्या का पूरा दृश्य चमक उठता है। यह सब कुछ उसी कमरे में हुआ था।

सपने में उसे अपनी मां की अन्तिम झलक याद हो आई थी। कुछ ही क्षणों में उसे मां से सम्बन्धित सारी घटनाएं घटा की तरह उमड़ आईं। इनको उसने जान-बूझकर भुला रखा था। उसे ठीक याद नहीं, लेकिन जब यह काण्ड हुआ तो वह दस वर्ष का या शायद बारह का

उसके पिता पहले ही लापता हो चुके थे। कितने पहले, उसे यह मालूम नहीं। उसे याद है कि समय बड़ा कठिन था। अक्सर हवाई हमलों के दिनों में उन्हें ज़मीन के नीचे छिपना पड़ता था, सड़कों पर विचित्र पोस्टर चिपके होते थे, युवकों के दल के दल घूमते थे, रोटी की दुकानों के सामने लम्बे-लम्बे क्यू लगते थे—कहीं दूरी पर मशीनगन चलने की आवाज़ भी सुनाई पड़ जाती थी और सबसे बड़ी बात थी कि उन्हें पेट भर खाना कभी नहीं मिलता था। वह अन्य बच्चों के साथ कूड़ेखाने में बदगोभी की पत्तियां, आलू के छिलके, बासी रोटियों के टुकड़े ढूंढा करता था।

पिता के लापता हो जाने के बाद मां ने कोई आश्चर्य प्रकट नहीं किया और न वह रोई-चिल्लाई ही। परन्तु एक अजीब प्रकार का परिवर्तन उसमें आ गया। वह बिलकुल निर्जीव-सी हो गई। वह किसी ऐसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रही थी जिसे होना ही था। वह घर का काम बराबर करती—खाना बनाना, कपड़े धोना, सीना-पिरोना, बिस्तर बिछाना, फर्श पोंछना, झाड़ू लगाना—सभी कुछ होता था, पर बहुत धीरे-धीरे। किसी काम में उत्साह नहीं था। वह घंटों चुपचाप बिस्तर पर ही बैठी रह जाती थी, बिलकुल स्तब्ध भाव से। छोटी बहन को दूध पिलाती रहती। विन्स्टन की बहन छोटी और दुबली-पतली थी। उमर कोई दो या तीन साल की थी। वह कभी-कभी विन्स्टन को अपनी छाती से लगा लेती और बड़ी देर तक उसे चिपकाए ही रहती। कहती कुछ भी नहीं थी। वह छोटा होते हुए भी जानता था कि इसका सम्बन्ध उस बात से है, जिसकी चर्चा कभी नहीं की जाती।

वे एक अंधेरे बदबूदार कमरे में रहते थे। इस कमरे का आधा भाग बिस्तर से ढका होता था। आले में गैस का नल था; एक अलमारी थी जिसमें लकड़ी रहती थी। बाहर मिट्टी का बर्तन था। यह कई कमरों के बीच एक था। उसे याद है, उसकी मां गैस के नल पर बर्तन में खाने की चीज़ें किस तरह सूखी-भुनी बनाती थी। उसे बड़ी भूख लगती थी लेकिन पेट भर खाने को नहीं मिलता, और वह चिल्लाकर कहता था कि उसे और खाना क्यों नहीं दिया जाता था। कभी वह अपने हिस्से से अधिक खाना लेने के लिए खुशामद करने लगता था। उसकी मां अधिक खाना देने के लिए तैयार भी रहती थी। वह यह मानकर चलती थी कि लड़के

को सबसे अधिक खाना मिलना चाहिए। लेकिन वह जितना ही अधिक देती वह और अधिक मांगता। हर बार खाने के समय वह उसे समझाती कि वह बहुत अधिक स्वार्थी न बने और याद रखे कि उसकी छोटी बहन भी है जिसे खाने की जरूरत है। लेकिन कोई फायदा न होता था। वह परोसना बन्द किए जाते ही दोनों से [illegible] होने लगता था। वह मां के हाथ से थाली छीनकर जबरदस्ती से पूरा भोजन लेना चाहता था। वह अपनी बहन की प्लेट से चीजें उठाकर खा जाता था। वह जानता था कि ऐसा करने से मां और बहन भूखी रह जाएंगी। फिर भी उसे इतनी भूख लगती थी कि उसे खाने के सिवा कुछ सुझाई ही नहीं पड़ता था। मां की आंखें बचाकर वह प्रायः ही चीजें चुराकर खा जाता था।

एक दिन चॉकलेट का राशन मिला। पिछले कई सप्ताहों से बल्कि महीनों से चॉकलेट का राशन नहीं मिला था। उसे याद है कि वह चॉकलेट का टुकड़ा उसे कितना कीमती लगता था। वह दो औंस का टुकड़ा था (उन दिनों औंसों की ही बात की जाती थी)। वह टुकड़ा तीन आदमियों के बीच मिला था। स्पष्ट था कि उसे तीन बराबर टुकड़ों में बांटा जाना चाहिए था। अकस्मात् विन्स्टन ने चिल्लाते हुए मांग की कि उसे सारा चॉकलेट दे दिया जाए। मां ने कहा, वह लालची न बने। बड़ी देर तक वह जिद करता रहा। कभी वह चिल्लाता, कभी आंसू बहाता, कभी डांट खाता और कभी खुशामद करता। उसकी छोटी बहन दोनों हाथों से मां को पकड़े थी। ऐसी लगती थी जैसे कोई छोटी बंदरिया बैठी हो। उसकी बड़ी-बड़ी आंखों से दुःख टपका-सा पड़ता था। अन्ततः मां ने चॉकलेट का एक-तिहाई हिस्सा तोड़कर विन्स्टन को और दूसरा उतना ही बड़ा हिस्सा उसकी बहन को दे दिया। उसकी छोटी बहन ने वह टुकड़ा धीरे से अपने हाथ में ले लिया। वह समझ नहीं पा रही थी कि इसका क्या किया जाए। इसके बाद एकाएक वह झपटा और उसने वह टुकड़ा जो बहन के हाथ में था छीन लिया और बाहर भाग निकला।

'विन्स्टन! विन्स्टन!'—मां ने चिल्लाते हुए कहा, 'लौटो, तुरन्त [illegible] को उसके हिस्से का चॉकलेट वापस करो!'

[illegible] तो गया लेकिन वापस नहीं लौटा। उसकी मां आतुर [illegible]। और देखती रही। वह जानता था कि कोई बात

होने वाली है पर क्या, यह वह नहीं जानता था। उसकी बहन थोड़ा-थोड़ा रोने लगी थी, क्योंकि वह समझ गई थी कि कोई चीज उससे छीन ली गई है। मा ने बहन को खींचकर अपनी छाती से चिपका लिया। वह घूमकर सीढ़ियों से नीचे आ गया। चॉकलेट हाथ में घुल गया था और चिपचिपाने लगा था।

इसके बाद उसने अपनी मां को फिर कभी नहीं देखा। चॉकलेट खा लेने के बाद उसे अपने-आप पर कुछ शर्म आई और वह घंटों सड़कों पर घूमता रहा। आखिर बहुत भूख लगने पर घर वापस लौटा। लौटने पर मा नहीं मिली। इस प्रकार की घटनाएं उस समय भी सामान्य हो चली थीं। कमरे में सिवाय मा और बहन के और कोई चीज गायब नहीं थी। उन्होंने कोई कपड़े तक नहीं लिए थे। मा का ओवरकोट तक टंगा था। आज तक उसे निश्चय नहीं था कि उसकी मां जीवित है या मर गई। बहुत सभव है कि उसे बेगार कराने के लिए भेज दिया गया हो। बहन को शायद किसी अनाथालय में भेज दिया गया हो। क्योंकि विन्स्टन का भी यही हाल हुआ था। ये अनाथालय गृहयुद्ध के दौरान में खुल गए थे। शायद बहन को मा के साथ ही श्रम-शिविर में ही भेज दिया गया हो या बहुत मुमकिन कहीं मरने के लिए ही छोड़ दिया गया हो।

अभी भी स्वप्न उसके मस्तिष्क मे छाया था।

उसने जूलिया को अपनी मा के लापता होने का किस्सा बतलाया। उसे जो कुछ याद था उससे विन्स्टन का अनुमान था कि उसकी मा कोई असाधारण स्त्री नहीं थी। उसे बहुत अधिक बुद्धिमान भी नहीं कहा जा सकता था। फिर भी मा में हर प्रकार की सौजन्यता, पवित्रता थी और वह कुछ अर्थों में आदर्शवादी थी। बाहर की बातों का उसकी भावनाओं या आदर्शों पर कोई असर नहीं होता था। यदि आप किसी-को प्यार करते हैं तो बस प्यार करते हैं, यदि देने के लिए कुछ न भी हो तो भी आप प्यार तो दे ही सकते हैं। जब चॉकलेट का आखिरी टुकड़ा भी उसने बहन से छीन लिया तो उसकी मा ने बच्ची को छाती से लगा लिया था।

वह कुछ देर सोचता रहा। फिर वह बोला, 'क्या तुमने कभी यह सोचा है कि हम लोग यहां से निकल चलें और फिर एक-दूसरे से .

न मिलें ? हम दोनों के लिए यह सबसे अच्छा होगा।'

'हाँ, यह बात मेरे दिमाग में भी कई बार आई। परन्तु फिर भी मैं ऐसा करने को तैयार नहीं हूँ।'

'हम भाग्यवान हैं, परन्तु यह क्रम अधिक दिन तक नहीं चल सकेगा। तुम अभी जवान हो। तुम साधारण और निर्दोष लगती हो। तुमको मुझ जैसे आदमियों से दूर रहना चाहिए। शायद तुम अभी पचास साल और जीवित रह सको।'

'नहीं, मैंने सोच लिया है। तुम जो करोगे वही मैं करूँगी। और निराश होने की जरूरत नहीं है। मैं जानती हूँ जीवित कैसे रहा जाता है।'

'शायद हम छः मास या अठारह महीने और साथ रह सकें—कौन जानता है ? अन्त में तो हमें अलग होना ही पड़ेगा। उस समय क्या तुम सोच सकती हो, हम अपने-आपको कितना अकेला अनुभव करेंगे ? एक बार पकड़े जाने के बाद फिर कुछ भी शेष नहीं रहेगा। हम एक-दूसरे के लिए कुछ न कर सकेंगे। यदि मैं अपना अपराध स्वीकार कर लूँगा तो भी वे तुम्हें गोली मार देंगे, और अपराध नहीं स्वीकार करूँगा तो भी वे गोली मार देंगे। मुझसे वे जो चाहेंगे कहलवा लेंगे। हममें से कोई भी नहीं जान सकेगा कि कौन जिन्दा है और कौन मर गया। बस एक ही बात है जो हम कर सकते हैं, वह यह कि एक-दूसरे को धोखा न दें। हालांकि उससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता।'

'अगर तुम्हारा मतलब अपराध स्वीकार करने से है,' जूलिया ने कहा, 'तो वह तुरन्त मनवा लेंगे। हरएक को वह स्वीकार ही करना पड़ता है। उससे नहीं बचा जा सकता। वे अत्याचार करते हैं।'

'अपराध स्वीकारोक्ति से मेरा मतलब नहीं। स्वीकारोक्ति धोखा नहीं है। तुम क्या कहती या करती हो इससे कोई प्रयोजन नहीं, प्रयोजन केवल मन की भावना से है। यदि वे ऐसा कर सकें कि मैं तुम्हें प्यार करना बन्द कर दूँ तो वह असली धोखेबाजी होगी।'

वह इस बात को सोचती रही। अन्त में उसने कहा, 'नहीं, वे हम लोगों को परस्पर प्रेम करने से तो नहीं रोक सकते। वे तुमसे कहलवा तो कुछ भी सकते हैं परन्तु वे तुम्हें उसपर विश्वास करने के लिए विवश नहीं कर सकते। वे तुम्हारे अन्दर नहीं घुस सकते।'

'नहीं,' विन्स्टन ने जरा आशापूर्वक कहा, 'नहीं, यह सच है कि वे अन्दर नहीं घुस सकते। यदि तुममें मानवीय भावनाएं उस समय भी रहीं जब तुम्हें यह पता रहा कि उनके होने या न होने से कोई फायदा नहीं है, तो बस तुमने पार्टी को परास्त कर दिया।'

८

आखिरकार उन्होंने वह काम भी कर ही डाला। जिस कमरे में वे खड़े वह लम्बा था। उसमें हल्की रोशनी जल रही थी। टेलीस्क्रीन बहुत धीमा बज रहा था। गहरे नीले रंग का कालीन चलने पर ऐसा लगता था जैसे मखमल हो। कमरे के कोने पर ओ'ब्रायन एक मेज पर बैठा था। हरे रंग के शेड का टेबिल-लैम्प था। उसके दोनों तरफ कागजों के ढेर थे। जब जूलिया और विन्स्टन को नौकर अन्दर लाया तो उसने सिर उठाकर भी नहीं देखा।

विन्स्टन का हृदय इतने जोरों से धड़क रहा था कि उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह बोल भी सकेगा। आखिर इसको काम ही लिया, इसको पास ही किया, विन्स्टन केवल इतना ही सोच पा रहा था। यहां आना ही बड़ी गलती थी और साथ आना तो और भी बड़ी मूर्खता थी। यह सच था कि वे अलग-अलग रास्तों से आए थे और ओ'ब्रायन के मकान की सीढ़ियों पर ही आकर मिले थे। परन्तु ऐसी जगह आना भी साहस का काम था। ऐसा बहुत कम होता था कि कोई पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के मोहल्ले में जाए, और उनके घर के अन्दर घुसना तो अनहोनी ही बात थी। बड़े-बड़े फ्लैटों के ब्लाक थे, हर चीज से अमीरी टपकती थी। हर वस्तु लम्बी-चौड़ी थी, चारों तरफ खाने की अच्छी अच्छी चीजों की सुगन्ध आ रही थी, बढ़िया और अच्छी तम्बाकू-गन्ध भी यहां मिलती थी, बिना आवाज किए तेज लिफ्टें सरसराती ऊपर और नीचे चला करती थीं। सफेद वर्दियों में नौकर इधर-उधर दौड़ते नजर आते थे। सारा वातावरण डर पैदा कर देता था। यहां आने का उसके पास बड़ा अच्छा बहाना था। फिर भी उसे हर कदम पर यही भय लगता था कि किसी कोने से काली वर्दीधारी सिपाही निकल आएगा, उससे उसके कागज मांगेगा और तुरन्त बाहर

[illegible] अन्दर जाने को कह देगा। ओ'ब्रायन के नौकर ने [illegible] के उन दोनों को अन्दर आने दिया। [illegible] था। उसके [illegible] [illegible] में और वह सफेद नहीं पहने था। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। ऐसा लगता था कि वह भी [illegible] है। जिस कमरे में होकर वह उन्हें [illegible] ले गया उसमें हल्का कालीन बिछा था। दीवार के दोनों ओर [illegible] रंग का कागज लगा था। [illegible] पर सफेद रंग था। सभी कुछ बहुत ही स्वच्छ प्रतीत होता था। यह भी डर पैदा करता था। विन्स्टन ने इससे पहले ऐसा कोई रास्ता नहीं देखा था जिसकी दीवारें आदमियों के आने जाने की वजह से काली न हो गई हों।

ओ'ब्रायन उठा और उनकी तरफ आया। कालीन पर चलने की वजह से जरा भी आवाज नहीं हुई। विन्स्टन का मन और बढ़ गया। उसे लगा कि वह बड़ी ही मूर्खता कर बैठा है। यथा, विन्स्टन के पास क्या सबूत है कि ओ'ब्रायन राजनीतिक षड्यन्त्रकारी है। आंखों में एकबारगी चमक तथा स्पष्ट संदिग्ध बात कहने के अतिरिक्त ओ'ब्रायन ने कुछ नहीं किया था और यह कोई प्रमाण नहीं था। शेष उसकी कल्पना थी जिसका कोई आधार नहीं था। अब तो वह यह भी नहीं कह सकता था कि वह डिक्शनरी लेने आया है, क्योंकि ऐसी हालत में जूलिया की उपस्थिति को कैसे स्पष्ट करता? जैसे ही ओ'ब्रायन टेली-स्क्रीन से आगे पहुंचा कि उसके दिमाग में कोई भाव आया। ओ'ब्रायन रुका, बगल में गया और दीवार में लगी स्विच को उसने दबा दिया। खट से आवाज हुई और टेलीस्क्रीन से आवाज आनी बन्द हो गई।

जूलिया के मुंह से अस्पष्ट आवाज निकल गई, इसमें आश्चर्य मिश्रित था। विन्स्टन डरा हुआ था लेकिन फिर भी वह इतना विस्मित हुआ कि बिना बोले रुक न सका।

'क्या आप टेलीस्क्रीन को बन्द कर सकते हैं?' वह पूछ ही बैठा।

'हां' ओ'ब्रायन ने कहा, 'हम बन्द कर सकते हैं। हमें यह विशेषाधिकार प्राप्त है।'

अब ओ'ब्रायन दोनों के सामने खड़ा था। उसके मुंह का भाव अ[illegible] भी अन्दर की भावनाओं को व्यक्त नहीं कर रहा था। वह इन्तजार कर रहा था कि विन्स्टन कुछ बोले। परन्तु वह क्या बोलता? बड़ी कठिनाई से विन्स्टन ओ'ब्रायन की आंखों से आंख मिलाकर रख पा रहा था

अकस्मात् ओ'ब्रायन के चेहरे का भाव बदला और ऐसा लगा कि वह मुस्कराने वाला है। ओ'ब्रायन ने अपने विशेष ढंग से चश्मे को नाक पर रख लिया।

'क्या मैं बोलूं या तुम कुछ कहोगे ?' उसने पूछा।

'मैं ही कहता हूं,' तुरन्त विन्स्टन बोला, 'क्या टेलीस्क्रीन बिलकुल बन्द हो गई ?'

'हां, हर चीज बन्द है। हम बिलकुल अकेले हैं।'

'हम यहां इसलिए आए हैं, क्योंकि···'

विन्स्टन रुक गया, उसने अनुभव किया कि उसका उद्देश्य कितना अस्पष्ट है। यह अस्पष्टता शायद वह पहली बार अनुभव कर रहा था। वह नहीं जानता था कि ओ'ब्रायन से किस प्रकार की मदद मिल सकेगी, इसलिए वह यह भी नहीं जानता था कि वह अपना क्या उद्देश्य बतलाए। पर वह कहता गया हालांकि वह जानता था कि उसका कथन बड़ा लचर और कमजोर साबित होगा।

'हमारा ख्याल है कि पार्टी के विरुद्ध कोई षड्यन्त्रकारी दल काम कर रहा है और आप भी उसके सदस्य हैं। हम उस दल के सदस्य बनना चाहते हैं। हम भी पार्टी के शत्रु हैं। हमारा 'इगसोश' के सिद्धान्तों में कोई विश्वास नहीं है। हम विचार-अपराधी हैं। हम व्यभिचारी भी हैं। हम आपसे इसलिए यह रहस्य कह रहे हैं क्योंकि हम अपने-आपको आपकी दया पर छोड़ देना चाहते हैं। यदि आप हमसे कोई काम लेना चाहें तो हम उसके लिए तैयार हैं।'

वह रुक गया और उसने पीछे देखा। शायद दरवाजा खुल गया था। वह नौकर दरवाजा बिना खटखटाए अन्दर चला आया था। विन्स्टन ने देखा, उसके हाथ में एक ट्रे है। ट्रे में कांच की सुराही और गिलास थे।

'मार्टिन भी हमारा एक साथी है,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'ट्रे इधर ले आओ मार्टिन। गोल मेज़ पर रखो। कुर्सियां तो काफी हैं न ? ठीक है, हम यहीं बैठकर बातें करेंगे। अपने लिए भी एक कुर्सी ले आओ, मार्टिन। अब हम काम की बातें करेंगे। और दस मिनट के लिए तुम यह सोचना बन्द कर दो कि तुम नौकर हो।'

मार्टिन भी आराम से बैठ गया। परन्तु उसके चेहरे से नौकर की

भावनाएं दूर नहीं हुईं। ऐसा जरूर लगता था कि वह विशेष कृपापात्र नौकर है। विन्स्टन उसे तिरछी नजर से देखता रहा। ऐसा लगता था कि वह सारी जिन्दगी नौकर का ही अभिनय करता रहा है और यह अभिनय करते-करते इतना अभ्यस्त और सतर्क हो गया है कि वह एक मिनट के लिए भी नौकर के पात्र का स्वरूप नहीं छोड़ना चाहता। सुराही से गिलासों में ओ'ब्रायन ने शराब डाली और गिलास को लाल पेय से भर दिया। उसकी सुवास कुछ खट्टी-मीठी-सी थी। जूलिया गिलास उठाकर उसे बड़ा उत्सुकता से सूंघने लगी।

'यह शराब है,' ओ'ब्रायन ने मुस्कराते हुए कहा, 'तुमने शायद किताबों में इसके बारे में पढ़ा होगा। पार्टी के छोटे सदस्यों तक यह नहीं पहुंच पाती है।' इसके बाद गिलास उठाकर उसने सबके स्वास्थ्य की कामना की। साथ ही नेता इमैनुअल गोल्डस्टीन का भी नाम लिया।

विन्स्टन ने भी अपना गिलास कुछ उत्सुकता से उठाया। इस लाल शराब के बारे में उसने काफी पढ़ा था। इसके काफी सपने भी देखे थे। यह लाल शराब भी मि॰ चारिंगटन के पेपरवेट की भांति बीते युग की चीज थी। उसने खाली गिलास मेज पर रख दिया।

'तो क्या गोल्डस्टीन नाम का सचमुच कोई व्यक्ति है?' उसने पूछा।

'हां है। और वह जिन्दा भी है। कहां है यह नहीं जानता।'

'और उसका दल, षड्यन्त्र—ये सब सच हैं क्या? क्या ये सिर्फ पुलिस की मनगढ़न्त बातें नहीं हैं?'

'नहीं, ये सब सच हैं। हम उस दल को ब्रदरहुड कहते हैं। तुम इस दल के बारे में आज जितना जानते हो उससे अधिक कभी नहीं जान पाओगे। बस इतना ही तुम्हें और मालूम होगा कि तुम भी इसके सदस्य हो। मैं अभी तुम्हें बताऊंगा।' अपनी कलाई में बंधी घड़ी की ओर देखते हुए ओ'ब्रायन ने कहा, 'पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के लिए भी यह सुरक्षित नहीं है कि वे एक बार में आधे घंटे से अधिक टेली स्क्रीन को बन्द रखें। तुम्हें साथ-साथ नहीं आना चाहिए था। अब तुम लोग अलग-अलग जाना। तुम कामरेड—' जूलिया की ओर देखते हुए उसने कहा, 'तुम पहले निकल जाना। अभी बीस मिनट का वक्त है। तुमसे कुछ प्रश्न पूछूंगा, साधारणतया तुम क्या करने को तैयार हो

'कुछ भी, जो हम कर सकते हों।' विन्स्टन ने कहा।

ओ'ब्रायन अपनी कुर्सी पर कुछ मुड़कर इस तरह बैठ गया कि विन्स्टन का मुंह उसके सामने रहे। जूलिया की तरफ उसने देखना ही बन्द कर दिया। उसने यह मान लिया कि विन्स्टन ही जूलिया के लिए उत्तर दे सकता है। थोड़ी देर के लिए उसकी पलकें झुक गईं। फिर धीरे से, बिना किसी भाव के उसने प्रश्न पूछने आरम्भ किए। उसके स्वर से ऐसा लगता था कि उसे प्रश्न पूछने की आदत पड़ी हुई है या उसे उनके उत्तर सुनने का अभ्यास हो गया था।

'क्या आप अपना जीवन देने को तैयार हैं?'

'हां।'

'क्या ऐसे तोड़-फोड़ के काम करने को तैयार हैं जिनमें सैकड़ों निर्दोष व्यक्ति मर जाएं?"

'हां।'

'क्या आप अपने देश के साथ धोखा करने को प्रस्तुत हैं?'

'हां।'

'क्या आप धोखेबाज़ी, ठगी, जालसाज़ी, इधर की बात उधर करके लोगों को धमकाने के लिए तैयार हैं? क्या आप बच्चों को बिगाड़ने के लिए नशीली दवाएं बांटने को, वेश्या-वृत्ति को प्रोत्साहन देने को, यौन रोगों को फैलाने को तैयार हैं? संक्षेप में क्या आप ऐसा कोई भी कार्य करने को तैयार हैं जिससे लोगों की हिम्मत टूटे और पार्टी की शक्ति कम हो जाए?'

'हां।'

'उदाहरण के लिए, यदि आपसे कहा जाए कि आप किसी बच्चे के मुंह पर अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए तेज़ाब छोड़ दें, तो क्या आप यह काम कर सकेंगे?'

'हां।'

'क्या आप अपना वर्तमान रूप छोड़कर शेष जीवन-भर वेटर या बन्दरगाह के मज़दूर के रूप में अपना जीवन व्यतीत करने को तैयार हैं?'

'हां।'

'क्या आप, जब कहा जाएगा तब आत्महत्या कर लेंगे?'

'हाँ।'
'क्या आप दोनों एक-दूसरे को छोड़ने और फिर कभी न मिलने की प्रतिज्ञा करने को तैयार हैं ?'
'नहीं।' इस बार जूलिया बोल पड़ी।
विन्स्टन को ऐसा लगा कि वह बहुत देर बाद बोल पाया। कुछ देर के लिए उसे ऐसा लगा कि उसमें बोलने की भी ताकत नहीं रही है। उसके मुंह से बड़ी मुश्किल से निकल पाया, 'नहीं।'
'यह बतलाकर तुमने अच्छा किया,' ओ'ब्रायन ने कहा।
इसके बाद वह जूलिया की तरफ मुड़कर तनिक भावनापूर्वक बोला, 'तुम यह समझ रही हो न कि यदि यह बच भी गया तो बिलकुल भिन्न किस्म का व्यक्ति होगा ? हमें इसका रूप बिलकुल बदल देना होगा। इसका चेहरा, इसकी चाल-ढाल, इसके हाथों की बनावट, इसके बालों का रंग और इसकी आवाज तक बदल जाएगी। और तुम, तुम शायद खुद भी बदल जाओ। हमारे सर्जन आदमी को बिलकुल बदल सकते हैं। कभी-कभी यह जरूरी हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर हम कभी शरीर का कोई अंग भी काट डालते हैं।'
विन्स्टन से मार्टिन के मंगोलों जैसे चेहरे पर फिर दृष्टि डाले बिना नहीं रहा गया। उसके चेहरे पर कहीं कोई घाव का निशान नहीं था। जूलिया कुछ और पीली हो गई थी। परन्तु वह ओ'ब्रायन की ओर बड़ी धीरता से देख रही थी। वह कुछ अस्पष्ट रूप से बुदबुदाई जिसका अर्थ सहमति था।
'ठीक है। यह तो तय हो गया।'
मेज पर चांदी का डिब्बा था। उसमें सिगरेटें थीं। ओ'ब्रायन ने उसमें से एक सिगरेट खुद निकालकर डिब्बा अन्य लोगों की ओर सरका दिया। इसके बाद खड़ा होकर इधर-उधर टहलने लगा। ऐसा लगता था कि वह खड़े होकर ज्यादा अच्छी तरह सोच सकता था। सिगरेटें बहुत अच्छी थीं। वे रेशम जैसे कागज में लिपटी थीं। उसने फिर अपनी कलाई की घड़ी देखी।
'मार्टिन, अब तुम रसोई में जाओ। मैं पन्द्रह मिनट में टेलीस्क्री-[illegible]। इन कॉमरेडों को अभी अच्छी तरह ध्यान से देख लो। इनसे आगे तुम्हें फिर [illegible] और तुम फिर शायद इन्हें देखो। मुझे शायद

अब इनमें नहीं मिलना पड़ेगा।'

मार्टिन ने इन्हें फिर देखा। उसकी आंखों में मित्रता का भाव लेश-मात्र भी नहीं था। वह उन्हें पहचानने के लिए उनके चेहरे की विशेषताएं रट रहा था लेकिन ऐसा लगता था कि उसकी उनमें रुचि नहीं है। उसी समय विन्स्टन को खयाल आया कि शायद नकली चेहरे पर किसी भी प्रकार के भाव आने-जाते ही नहीं हैं। बिना किसी प्रकार की सलाम-दुआ किए मार्टिन कमरे से बाहर चला गया। वह धीरे से अपने पीछे किवाड़ भी बन्द कर गया। ओ'ब्रायन अब भी टहल रहा था। एक हाथ उसका पतलून में था और दूसरे हाथ में सिगरेट थी।

'आप समझ लीजिए कि आपको अंधेरे में लड़ना है।' उसने कहा, 'आप हमेशा इसी प्रकार रहेंगे। आपको आदेश मिलेंगे और उनका आपको पालन करना होगा। आप आज्ञाओं का कारण नहीं जान सकेंगे। बाद में आपके पास मैं एक पुस्तक भेजूंगा जिससे वर्तमान समाज की प्रकृति को समझ सकेंगे। उसीसे आप यह भी समझ सकेंगे कि हम इसको किस प्रकार नष्ट करेंगे। जब आप पूरी किताब पढ़ लेंगे तो आप ब्रदरहुड के सदस्य हो जाएंगे। लेकिन आन्दोलन के सामान्य उद्देश्यों या तात्कालिक कार्यों के सम्बन्ध में आप कुछ भी नहीं जान सकेंगे। मैं केवल यह बतला सकता हूं कि ऐसे आन्दोलनकारियों का दल अवश्य है। परन्तु यह नहीं कह सकता कि इसकी सदस्य-सख्या सौ है या दस लाख। अपने ज्ञान के आधार पर आप कभी यह भी नहीं कह सकेंगे कि इस दल की सदस्य-सख्या बारह भी है। आपका तीन या चार व्यक्तियों से सम्पर्क होगा। ये सम्पर्क भी बदलते रहेंगे। मुझसे आपका पहली बार सम्पर्क हुआ, इसलिए वह बना रहेगा। मेरे द्वारा आपको आज्ञाएं मिलेंगी। यदि कोई सूचना देनी हुई तो वह मार्टिन के ज़रिये मिलेगी। जब आप पकड़ लिए जाएंगे तो आप अपना-अपना अपराध स्वीकार कर लेंगे। लेकिन आपके पास स्वीकारोक्ति के लिए बहुत कम मसाला होगा। आप कुछ साधारण व्यक्तियों को ही फसा सकेंगे। शायद आप मुझे भी धोखा न दे सकेंगे। सभव है, उस समय तक मैं मर जाऊं या मैं बिलकुल नया आदमी ही बन जाऊं।'

ओ'ब्रायन बराबर नरम कालीन पर इधर से उधर टहलता रहा। स्थूलकाय होते हुए भी उसके चलने में शान थी। उसके व्यक्तित्व से

नाम भी रहे हैं। उनकी संख्या तथा उनके पारस्परिक संबंध भी समय-समय पर बदलते रहे हैं। परन्तु समाज की अनिवार्य रूपरेखा कभी नही बदलती। बहुत-सी भ्रान्तियों के बावजूद यह व्याख्या बारम्बार उभरती रही, ठीक उसी प्रकार जिस तरह कुतुबनुमा की सुई हमेशा उत्तर दिशा दिखलाती है।

इन तीनों वर्गों के उद्देश्य और लक्ष्य सर्वथा भिन्न रहे हैं···

विन्स्टन ने पढ़ना बन्द कर दिया। पहला कारण तो यह था कि वह अकेला था। दूसरे उसे आराम मिल रहा था। तीसरे वह सुरक्षित था। वहा कोई टेलीस्क्रीन नहीं था। इन तथ्यो को वह भली भाति अनुभव करना चाहता था। गर्मियो की वायु उसके कपोलो को स्पर्श कर रही थी। कहीं दूर पर बच्चे खेल रहे थे और उनके शोर की आवाज़ उसके कानो में पड़ रही थी। वह कुर्सी मे और आराम से बैठ गया और उसने अपने पैर दीवाल से टिका लिए। बड़ा सुख मिल रहा था उसे। उसने कुछ ही क्षण बाद दूसरी जगह पुस्तक को खोल लिया। अब की बार उसके सामने तीसरा अध्याय आया। वह पढ़ता गया।

अध्याय ३

युद्ध ही शांति है

ससार का तीन बड़े-बड़े राज्यो मे विभक्त हो जाना ऐसी घटना थी जिसकी कल्पना बीसवी शताब्दी के मध्य में ही कर ली गई थी। रूस ने सारा यूरोप हड़प लिया था और ब्रिटेन तथा उसके साम्राज्य को अमरीका ने हड़प लिया था। इस प्रकार यूरेशिया और ओशनिया राज्यो का प्रादुर्भाव हो चुका था। तीसरा बड़ा राज्य ईस्ट एशिया काफी लम्बे युद्ध के बाद बन सका। इन तीनों राज्यों की सीमाएं अनिश्चित हैं और युद्ध के परिणामो के अनुसार बदलती रहती हैं। परन्तु साधारण रूप से वे भौगोलिक सीमाओं के अनुकूल है। यूरेशिया में यूरोप और एशिया का समस्त उत्तरी भाग है। यह पुर्तगाल से बेरिंग जलडमरूमध्य तक फैला है। ओशनिया में दोनो अमरीका अतलान्तक द्वीप समूह और ब्रिटिश द्वीप समूह हैं। इसमे आस्ट्रेलिया और अफ्रीका के दक्षिणी भाग भी हैं। ईस्ट एशिया अन्य दोनो राज्यो की तुलना मे छोटा था। उसकी पश्चिमी सीमाए यूरेशिया तथा ओशनिया की अपेक्षा अनिश्चित थी। ईस्ट एशिया मे चीन तथा

उनके दक्षिण में स्थित अन्य देश जापान तथा मंचूरिया, मंगोलिया और तिब्बत के क्षेत्र थे जिनका कुछ भाग कभी ईस्ट एशिया के हाथ होता था तो कभी ओशनिया या यूरेशिया के हाथ में।

ये तीन महाराज्य किसी एक राज्य से मैत्री रखकर तीसरे राज से हमेशा पिछले पचीस वर्षों से युद्ध करते चले आ रहे हैं। परन्तु अब युद्ध की विभीषिका उतनी भयकर नहीं रही है जितनी वह बीसवीं शताब्दी के कुछ आरम्भिक दशकों में थी। युद्ध सीमित स्थानों पर होता है और तीनों राज्य यह जानते हैं कि वे एक-दूसरे को नष्ट नहीं कर सकते। उनके बीच युद्ध का कोई दृढ़ कारण भी नहीं है। इन राज्यों में कोई परस्पर सैद्धान्तिक मतभेद भी नहीं है। परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि युद्ध से रक्तपिपासा अपेक्षाकृत घट गई है या इन राज्यों के सैनिकों में वीरता की भावना अधिक जागृत हो गई है। इसके विपरीत तीनों राज्यों में ज़ोरों से युद्ध-प्रचार होता है। बलात्कार, लूटपाट, बच्चों का कत्ल, सारी जनता को दास बना देना, बन्दियों से बदला लेना जिनमें उनको गरम पानी में उबालना और ज़िन्दा दफ़ना देने के कर्म भी शामिल हैं, बिलकुल साधारण समझे जाते हैं। लेकिन शर्त यह है कि वे अपने पक्ष की ओर से किए गए हैं। यदि शत्रु-पक्ष करता है तो उनका बड़ा विरोधात्मक प्रचार किया जाता है। परन्तु अब युद्ध में पहले की अपेक्षा बहुत कम व्यक्ति भाग लेते हैं। लड़ाइयों में हताहत-संख्या भी बहुत कम होती है। लड़ाई यदि होती है तो सीमावर्ती क्षेत्रों में होती है, और जगह का अनुमान लोग अन्दाज़ से ही कर लेते हैं। या लड़ाई तैरते किलों के पास होती है जो समुद्री सीमा की रक्षा करते हैं। युद्ध का देश के अन्य भागों में अर्थ होता है उपभोग्य वस्तुओं का शाश्वत अभाव, कभी-कभी राकेट बमों का फट जाना और उनसे कुछ कोड़ी व्यक्तियों का मर जाना। युद्ध का असल मतलब ही बदल गया है। सच तो यह है कि युद्ध के आधार ही बदल गए हैं।

वर्तमान युद्ध का यथार्थ रूप समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि आजकल का युद्ध निर्णयात्मक कभी हो ही नहीं सकता। अब राज्यों की शक्ति बराबर है और तीनों ही राज्यों की भौगोलिक सीमाएं उनकी बराबर रक्षा करती हैं। यूरेशिया के पास इतनी अधिक भूमि है कि उसे जीत पाना कठिन है। ओशनिया की रक्षा अतलान्तक

यापन का स्तर बिना अधिक ऊंचा उठाए खर्च कर डालता है। उन्नी
शताब्दी के आरम्भ ही से औद्योगिक समाज के सम्मुख यह समस्या
है कि अतिरिक्त उत्पादन का क्या किया जाए। वर्तमान काल में,
लोगों को पेट-भर भोजन ही मुश्किल से मिलता है, यह समस्या द
कठिन नहीं है, फिर भी उत्पादन को नष्ट करने का यह कृत्रिम
अपना काम कर रहा है। सन् १६१४ के पूर्व जो संसार था, उ
तुलना में आज की दुनिया भूखी, नंगी और खण्ड-विखण्ड है। बीस
शताब्दी के आरम्भ में हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति आज की दुनिया के
में यह कल्पना किए था कि वह इतनी धनी, आरामदेह, व्यवस्थित
दक्ष होगी कि उसका कोई ठिकाना नहीं। उसकी यह दुनिया चम
कांच, इस्पात और श्वेत कंकरीट की दुनिया थी। विज्ञान और प्रौद्यो
शास्त्र बड़ी द्रुत गति से आगे बढ़ रहा था। इसलिए यह स्वाभावि
लगता था कि वे आगे बढ़ते जाएंगे। परन्तु क्रान्तियों और अभावों
कारण ऐसा नहीं हो सका। कुल मिलाकर आज का संसार पचास स
पूर्व की अपेक्षा कहीं अधिक जंगली है। कुछ पिछड़े क्षेत्र अवश्य विकसि
हुए हैं। तथा युद्ध की कुछ पद्धतियों का भी विकास हुआ है। पर
आविष्कार तथा खोजें होनी बिलकुल बन्द हो गई हैं। सन् १६५०
जो अणु-आयुधों का युद्ध हुआ था—उन युद्धों से नष्ट वस्तुओं को क
ठीक नहीं किया जा सका। मशीनों के आविष्कार के बाद लोग य
अनुभव करने लगे थे कि अब मानव-समाज में विषमता के लिए को
स्थान शेष नहीं रहा है। यदि मशीनों का प्रयोग मूल उद्देश्यों के अनु
सार किया जाता तो भूख, अधिक श्रम, गन्दगी, अशिक्षा, रोगों आदि
को कुछ ही पीढ़ियों में सदैव के लिए समाप्त किया जा सकता है। मशीनों
की वजह से लोगों के जीवन-यापन का स्तर उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त
तथा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ऊंचा भी हुआ था।

परन्तु यह भी स्पष्ट हो गया था कि यदि सम्पत्ति की वृद्धि हुई, तो
वर्गगत समाज का अन्त हो जाएगा। ऐसी दुनिया जिसमें हर आदमी
को दो-चार घंटों से अधिक काम न करना पड़े, खाने-पीने को पर्याप्त
हो, ऐसे मकान में रहे जिसमें उसके लिए स्नानागार और रेफ्रीजेरेटर
हो, चढ़ने के लिए कार या हवाई जहाज हो, उस स्थिति में आर्थिक
विषमता तो स्वयमेव दूर हो जाती है। एक बार ऐसा हो गया तो धन की

कमी या अधिकता से एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति में कोई विशेष अन्तर नहीं रह सकता।

यह भी संभव नहीं था कि मशीनों से इतना कम उत्पादन किया जाए कि जनता निर्धन ही बनी रहे। समस्या यह थी कि उद्योगों को बिना उत्पादन बढ़ाए किस प्रकार चलाया जाए। उत्पादन तो हो, किन्तु वितरण न हो। इसका व्यावहारिक समाधान था—युद्ध। लगातार युद्ध करते रहने से ही यह संभव था।

युद्ध मे केवल जनहानि ही नहीं, मानव-श्रम से बनाई गई वस्तुओं का भी नाश होना है। युद्ध ऐसी प्रक्रिया है जिससे ऐसी सामग्री को नष्ट किया जाता है, हवा में उड़ा दिया जाता है। या डुबा दिया जाता है जिसे प्राप्त करके लोग आराम से रह सकते हैं। जब अस्त्र-शस्त्र न भी नष्ट हो रहे हैं, उस समय भी उनको बनाते रहने से मानव-शक्ति का प्रयोग ऐसे कार्यों मे होता रहता है जो लाभदायी सामग्री नहीं बनाती। उदाहरण के लिए तैरते किले का निर्माण ही ले लीजिए। इसके बनाने मे जितना श्रम और समय लगता है उतने समय और श्रम में सैकड़ों लद्दू जहाज़ बनाए जा सकते हैं। वस्तुत युद्ध-योजना ही इस प्रकार बनाई जाती है कि वह सारे अतिरिक्त उत्पादन को नष्ट कर दे। जनता की आवश्यकताओं का अनुमान हमेशा कम लगाया जाता है, जिससे वह भूखी और नंगी रहती है। जिन वर्गों को कृपापात्र समझा जाता है उनको भी बराबर कठिनाइयों मे रखा जाता है। सामान्य अभाव की स्थितियों में थोड़ी-थोड़ी सुविधाए भी वर्ग-भेद बनाए रखती हैं। बीसवीं शताब्दी के हिसाब से अन्तरंग पार्टी सदस्य को भी मितव्यय तथा अत्यन्त श्रमपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है। पार्टी के निचले सदस्यो की तुलना में उसके पास एक बड़ा फ्लैट होता है, दो-तीन नौकर होते हैं। खाना और कपड़ा अच्छा मिलता है। तम्बाकू और शराब भी अच्छी होती है। इसी प्रकार पार्टी के निचले सदस्य सबसे निचले मजदूरों के वर्ग के मुकाबले में मज़े में होते हैं। सामाजिक जीवन बहुत ही घिरा-घिरा होता है। छोटी-छोटी चीज़ें अमीरी और गरीबी का फर्क पैदा कर देती हैं। और जब युद्ध का खतरा बराबर बना रहे उस समय यह स्वाभाविक लगता है कि सत्ता किन्हीं थोड़े-से व्यक्तियों के हाथ मे ही रहे।

युद्ध से केवल वस्तुएं नष्ट ही नहीं होतीं बल्कि वे इस तरह नष्ट

होती है कि लोग उस नाश को अनिवार्य मान लेते हैं। सिद्धान्ततः मंदिर और पिरामिड बनाकर भी अतिरिक्त वस्तुओं को नष्ट किया जा सकता है। गड्ढों को खोदकर और उन्हें भरने में मानव-शक्ति नष्ट की जा सकती है। अतिरिक्त उत्पादन को जलाया जा सकता है। परन्तु यह वर्गगत और विशेषाधिकार-प्राप्त समाज का आर्थिक आधार ही होगा भावनात्मक आधार नहीं। परन्तु यहां नैतिक साहस बनाए रखने का प्रश्न है। जनता जब तक काम में लगी रहे तब तक वह अन्य बातों की परवाह नहीं करती। युद्ध अच्छी तरह चल रहा है या नहीं, इसकी भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। केवल आवश्यकता इस बात की है कि युद्ध चलता रहे।

आगामी विश्वविजय में पार्टी के हर व्यक्ति का अडिग विश्वास होता है। यह विजय या तो धीरे-धीरे अधिकाधिक भूक्षेत्र पर कब्ज़ा करके प्राप्त होगी या फिर किसी ऐसे शस्त्र के द्वारा जिसका अन्य कोई देश आविष्कार नहीं कर पाएगे। नये शस्त्रों के लिए बराबर खोज और आविष्कार किए जाते हैं। यही एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें कुछ ऐसे व्यक्तियों के लिए कुछ स्थान है जिनमें थोड़ी-सी मौलिकता है। पुराने अर्थों में अब विज्ञान शेष नहीं रहा है। नई भाषा में विज्ञान जैसा कोई शब्द नहीं है। विचार या चिन्ता की वे समस्त पद्धतियां, जो अनुभूति-मूलक है, 'इंगसोश' के मूल सिद्धान्तों के विपरीत हैं। कला-क्षेत्र में संसार या तो यथास्थान है या पीछे जा रहा है। खेतों को घोड़ों से जोता जाता है और पुस्तकें मशीनों से लिखी जाती हैं। पार्टी के दो लक्ष्य हैं: पहला, सारे संसार के भू-क्षेत्र पर कब्ज़ा करना और दूसरा, स्वतन्त्र विचार के सब तरीकों को नष्ट कर देना। अतएव पार्टी के सामने दो प्रमुख समस्याएं हैं। पहली तो यह कि दूसरा आदमी क्या सोच रहा है यह जान लेने की मशीन बना लेना और दूसरे करोड़ों आदमियों को सेकेण्डों में बिना चेतावनी दिए मार डालने की तरकीब निकालना। जो विज्ञान अब शेष है, उसकी शोध के अब यही उपर्युक्त दो विषय हैं। आज के वैज्ञानिक दो श्रेणियों में विभक्त हैं। पहली श्रेणी में तो वे वैज्ञानिक हैं जो मनोवैज्ञानिक तथा जिज्ञासु हैं। वे असाधारण ब्यौरे से लोगों के चेहरों के भावों, संकेतों, कंठस्वर के मतलब को समझने के लिए सतत रूप से प्रयत्नशील हैं। वे विभिन्न ओषधियों का प्रयोग करके

यह देखते हैं कि कौन-सी चीज ऐसी है जिसके खिला देने से आदमी अपने-आप सच-सच हृदय की बात बता देता है। वे यह भी देखते हैं कि यन्त्रणा देकर, घबड़ा देने वाली बातें कहकर, सम्मोहन आदि द्वारा किस प्रकार असल बात उगलवाई जा सकती है। दूसरी श्रेणी में वे वैज्ञानिक हैं जो केवल रसायनशास्त्री, भौतिकशास्त्री या जीवशास्त्री हैं। इनके शोध का विषय केवल प्राण हरने के नये-नये तरीकों को निकालना है। शान्ति मंत्रालय की बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाओं में, ब्राजील के जंगलों में, आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानों में, दक्षिणी ध्रुव के गुप्त द्वीपों में अवस्थित गुप्त प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक सतत रूप से इन कामों में जुटे रहते हैं। कुछ वैज्ञानिक केवल भावी युद्धों का ढंग तय करने में लगे रहते हैं। कुछ बड़े से बड़े राकेट बमों को बनाने में व्यस्त रहते हैं। कुछ अधिकाधिक शक्तिशाली बारूद बनाने में लगे हैं। कुछ का काम ऐसे टैंक बनाना है जिनकी चादर फट ही न सके। कुछ मार डालने वाली नई-नई गैसें बनाने में जुटे रहते हैं। वे ऐसे विषों की खोज में रहते हैं जिनके मिला देने से पूरे-पूरे महाद्वीपों की जनसख्या ही नष्ट हो जाए बल्कि वहां वनस्पति तक पैदा न हो। कुछ रोगों के ऐसे कीटाणु बनाने में व्यस्त हैं जिनसे कोई बच ही नहीं सके। कुछ ऐसी सवारी बनाने के फिक्र में हैं जो जमीन के नीचे पनडुब्बी की भांति चलेगी। कुछ की समस्या है एक हवाई जहाज बनाना जो पानी के जहाज की भांति चले और किसी हवाई अड्डे का मोहताज न हो। कुछ वैज्ञानिक और भी ऐसी ही असम्भव बातें खोजने में व्यस्त हैं। जैसे सूर्य की उन किरणों का लैंसों द्वारा संग्रह जो अन्तरिक्ष में हजारों मील दूर हैं, या कृत्रिम भूकम्प पैदा करना या भूमि के मध्य भाग की उष्णता को इकट्ठी करके बड़ी-बड़ी समुद्री लहरें उत्पन्न कर देना। परन्तु इनमें से कोई भी योजना सफल होती प्रतीत नहीं होती। और न तीनों राज्यों में से एक भी अन्य दो देशों से आगे बढ़ पाता है। मजे की बात यह है कि तीनों ही महादेशों को अणुबम बनाना आता है जो इन सब शोधों से कहीं अधिक शक्तिशाली शस्त्र है। पार्टी का कहना है कि अणुबम उसने बनाया है, लेकिन वस्तुत अणुबम सन् १६४० के आसपास बना था और इसका प्रयोग पहली बार कोई दस साल बाद किया गया था। उस समय सैकड़ों अणुबम मुख्य-मुख्य औद्योगिक केन्द्रों पर डाले गए। वे जगह थीं : यूरोपियन

रूस, पश्चिमी यूरोप और संयुक्त अमेरिका। इन वर्षों की
अनुमान यह था कि अब देशों के शासक यह समझ लें कि यदि
छिड़ गई तो परमाणविक प्रभाव का अन्त हो जाएगा और उसी
उनकी सम्पन्न-व्यवस्था का भी। इसके बाद कोई [illegible]
हुआ लेकिन कोई हल नहीं निकाला गया। जब राज्य सब
स्थापे गए और इसका इस्तेमाल करने रहे कि अब मौका अ
इनको काम में लाया जाएगा। इस बीच युद्ध यहाँ का वहाँ
रहे कोई नीम-कालीन वर्ष ही गए हैं। हेलीकॉप्टरों का पहले
प्रयोग होने लगा है। परम्परागत हवाई जहाजों के स्थान पर
राकेट प्रयोग में लाये गये हैं। युद्धपोतों के स्थान पर तैरते
प्रयोग होने लगा है जो करीब-करीब इस तरह के बने हैं कि
पुकारा ही नहीं जा सकता। इसके अलावा अन्य कोई विकास
हुआ है। टैंक, पनडुब्बी, [illegible], मशीनगनें, राइफलें
अब भी प्रयोग होता है। प्रेस और टेलीविजन के प्रसार के बाद
युद्ध फिर कभी नहीं हुए जिनमें क्रान्ति के पूर्व कुछ मानव
करोड़ों व्यक्ति मारे गए थे।

कोई भी बड़ा राज्य ऐसा काम कभी नहीं करता जिसमें यु
द्ध की सम्भावना हो। अब भी कोई बड़ा आक्रमण किया जा
वह मित्रराष्ट्र के विरुद्ध आकस्मिक हमले के रूप में होता है
राज्यों की सामरिक नीति लगभग एक-सी ही है। योजना य
अपने शत्रुदेश को उसके चारों तरफ अड्डे बनाकर घेर लिया
इस उद्देश्य की पूर्ति में धोखेबाजी से हमले करने की नीति का पू
किया जाता है। नीति यह है कि पहले दोस्ती कर ली जाए; इस
उस समय तक चुप रहा जाए जब तक दोनों पक्षों के प्रति हृदय
दूसरे के प्रति कोई संदेह नहीं रह जाए और फिर अकस्मात्
करके इच्छित स्थान पर कब्जा कर लिया जाए। इस बीच सभी
पूर्ण स्थानों पर राकेटों से अणुबमों को गिराने की पूरी तैयारी
। अणुबम-वर्षा में यह ध्यान रखा जाए कि शत्रु बदला न ले
दूसरे शत्रुदेश से मित्रता की संधि करने की तैयारी क
। यह योजना दिवास्वप्न-मात्र है। इसकी पूर्ति असंभव है।
के विवादग्रस्त क्षेत्रों को छोड़कर तथा ध्रुव प्रदेश के अति

द किसी स्थान में युद्ध नहीं होता। यूरेशिया चाहे तो आसानी से ब्रिटिश द्वीपसमूह पर कब्जा कर सकता है। भौगोलिक दृष्टि से ब्रिटिश द्वीपसमूह हैं भी यूरोप के ही अंग। इसी प्रकार ओशनिया आसानी से यूरेशिया की पश्चिमी सीमाओं को राइन या विश्चुला तक खिसका सकता है। परन्तु कोई इस तरह की बात नहीं करता। यदि ओशनिया उन क्षेत्रों पर कब्जा करना चाहे जिन्हें कभी फ्रांस और जर्मनी माना जाता था, उसे या तो वहां की सारी आबादी को खत्म करना होगा जो बड़ा कठिन काम है, या फिर उस आबादी को आत्मसात् करना होगा जिसका टेकनिकल ज्ञान लगभग उतना ही है जितना ओशनिया के लोगों का। यही समस्या अन्य दोनों राज्यों के सामने भी रहती है। यह आवश्यक है कि तीनों देशों का परस्पर कोई सम्बन्ध न रहे। इसका अपवाद केवल युद्धबन्दी या काले दास ही हैं जो विदेशी के रूप में एक से दूसरे राज्य में आते-जाते हैं। सरकारी तौर पर जो मित्रदेश होता है उसे भी शक की निगाह से ही देखा जाता है। युद्धबंदियों को छोड़कर ओशनिया का औसत नागरिक कभी किसी विदेशी को नहीं देखता। वह यूरेशिया या ईस्ट एशिया की भाषा भी नहीं सीख सकता। यदि वह अपने पड़ोसी देशवासियों से मिले तो उसे ज्ञात होगा कि वे भी उसी की तरह हाड़-मास के जीव हैं और विदेशियों के बारे में उसे जो कुछ बतलाया गया है वह सब कुछ झूठ है। जिस मुहरबन्द दुनिया में वह रहता है, उसके बन्द दरवाजे टूट जाएंगे। भय, घृणा आदि समाप्त हो जाएंगी। अतएव हरएक राज्य यह चाहता है कि ईरान, मिस्र, जावा या सीलोन पर जहां चाहे जितनी बार उसका कब्जा हो जाए या चाहे जितनी बार वे उसके हाथ से निकल जाएं परन्तु देश की मुख्य सीमाएं उनके नागरिक कभी पार न करें। सीमा पार करने का हक केवल राकेट बमों को ही है।

इसकी तह में यह तथ्य छिपा है कि तीनों राज्यों में जीवन-यापन की अवस्था लगभग समान है, परन्तु इसे कोई मुंह पर नहीं लाता। ओशनिया में प्रचलित दर्शन इंगसोश कहलाता है। यूरेशिया में इसका नाम नया बोल्शेविज्म और ईस्ट एशिया में मृत्युपूजा या आत्मबलि। ओशनिया के नागरिकों को दूर देशों के दर्शनों के सम्बन्ध में कुछ भी पढ़ने की मनाही है। परन्तु उससे कहा जाता है कि वह इनको बर्बरतापूर्ण दर्शन समझे और यह माने कि वे अनैतिक हैं। सच यह है कि

है। उसकी सजाएं तथा उसके पारस्परिक सम्बन्ध भी समय-समय पर बदलते रहे हैं। परन्तु समाज की अनिवार्य बातें कभी नहीं बदलीं। बहुत सी क्रान्तियों के बावजूद यह व्यवस्था बराबर चलती रही, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कुतुबनुमा की सुई हमेशा उत्तर दिशा दिखाती है।

'अनिता ... क्या तुम जाग रही हो ?' किशन ने पूछा।

'हां, किशन ! मैं पढ़ रही हूं। पढ़ो न। बड़ा आनन्द आ रहा है।

उसने पढ़ना जारी रखा

इन तीनों वर्गों के उद्देश्य और लक्ष्य सर्वथा भिन्न रहे हैं और उनके बीच कोई समझौता नहीं हो सकता। उच्च वर्ग जहां है, वहीं रहना चाहता है। निम्न वर्ग का यदि कभी कोई उद्देश्य होता है तो वह यह कि वर्गों को नष्ट किया जाए और वर्गहीन समाज बनाया जाए। अधिकतर निम्नवर्ग इतना दबाया जाता है कि वह रोज की दाल-रोटी के अलावा कुछ भी सोच नहीं पाता और जब सोचता है तो उपर्युक्त बात ही सोचता है। अतएव इतिहास में यही संघर्ष नये-नये रूपों में बार-बार सामने आता है। दीर्घकाल तक उच्चवर्ग सुरक्षित रूप से सत्तारूढ़ प्रतीत होता है। परन्तु कभी न कभी ऐसा समय आता है जब वह आत्म-विश्वास खो बैठता है या शासन करने की क्षमता उसमें नहीं रहती या दोनों ही बातें गायब हो जाती हैं। तब मध्यवर्ग उच्चवर्ग के लोगों को उखाड़ फेंक देता है। मध्यवर्ग के ये लोग निम्नवर्ग को यह कहकर अपनी तरफ मिला लेते हैं कि वे स्वतन्त्रता तथा न्याय के लिए दासता के विरुद्ध लड़ रहे हैं और स्वयं उच्चवर्ग के सदस्य बन बैठते हैं। इसके बाद कुछ निम्नवर्ग के लोग तथा कुछ उच्चवर्ग के लोग भी पुनः मध्यवर्ग बना लेते हैं और संघर्ष पुनः शुरू हो जाता है। तीनों वर्गों में निम्न ही ऐसा वर्ग है जिसे अस्थायी रूप से भी सफलता नहीं मिलती है। ... अतिशयोक्ति है कि प्राचीन काल से अब तक कोई भौतिक प्रगति ... है। परन्तु चाहे जितनी धन-सम्पत्ति बढ़ी हो, चाहे जितनी ... हो, चाहे कितने ही सुधार हुए हो, क्रान्तियां हुई हों, इनसे ... वर्गगत समानता की दिशा में प्रगति नहीं हुई है। ... दृष्टि से, परिवर्तन चाहे जितने हुए, स्वामियों में ही फर्क

पड़ा है। इससे अधिक कुछ नहीं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक संघर्षों का यह क्रम बहुत-से लोगों के मस्तिष्क में स्पष्ट हो गया। कुछ लोगों ने इतिहास की गति को चक्राकार बतलाकर कहा कि निम्न और उच्चवर्गों के बीच के अन्तर को अपरिहार्य मान लिया जाए। इस सिद्धान्त के मानने वाले वैसे तो आदि काल से थे। प्राचीन काल में यह सिद्धान्त उच्चवर्गों द्वारा प्रतिपादित किया गया था। इनमें राजा, धनिकवर्ग के व्यक्ति, वकील, पुरोहित तथा इन लोगों पर आश्रित व्यक्ति थे। निम्नवर्ग के लोगों को यह भरोसा दिलाया जाता था कि लोकोत्तर जीवन में उन्हें उनके बलिदानों और आत्मत्याग का सुपरिणाम मिलेगा। मध्यवर्ग के लोग जब तक संघर्ष करते थे तब तक हमेशा स्वतन्त्रता, न्याय और बन्धुता का नारा लगाते थे। परन्तु अब उन्हीं लोगों ने जो सत्तारूढ तो नहीं थे परन्तु जिनके सत्तारूढ हो जाने की सम्भावना थी, इस मानवबन्धुता के विरुद्ध नारा लगाना शुरू कर दिया। समाजवाद, जिसका सम्बन्ध प्राचीनकाल के दास विद्रोहों तक से था, ऐसी अन्तिम कड़ी था जो अतीत के वर्गसमानता के सुखद स्वप्न से सम्बन्धित था। लेकिन सन् १९०० के बाद जितने भी समाजवादी आन्दोलन आरम्भ हुए उन सबने स्वतन्त्रता और समानता के सिद्धान्त का अधिकाधिक परित्याग ही किया। समाजवाद का प्रादुर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। परन्तु जो नये आन्दोलन इस शताब्दी के मध्य में आरम्भ हुए, और जो ओशनिया में इंगसोश, यूरेशिया में नवीन बोल्शेविज़्म और ईस्ट एशिया में मृत्युपूजा के नाम से विख्यात हैं, उनका उद्देश्य स्वाधीनता को नष्ट करना और असमानता को प्रोत्साहन देना था। इसमें सन्देह नहीं कि ये नये आन्दोलन पुरानों में से ही शुरू हुए, परन्तु वे पुराने समाजवाद से केवल मौखिक सहानुभूति ही रखते थे। इन सबका उद्देश्य प्रगति को अवरुद्ध करना और इतिहास को उचित अवसर पर आगे बढ़ने से रोक देना था। पूर्ववत् उच्चवर्ग मध्यवर्ग द्वारा अपदस्थ होना था। मध्यवर्ग को उच्चवर्ग बन जाना था। परन्तु इस बार उच्चवर्ग ने ऐसी पैंतरेबाजी की कि उसे कोई ऊँचे आसन से हटा ही न सके।

यह नया सिद्धान्त कुछ तो ऐतिहासिक ज्ञान के संचय से और कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की कल्पना से स्थिर हुआ। इतिहास को चक्राकार [illegible] लिया गया था, या कम से कम ऐसा लगता था। यदि

टेकनिशियनों, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं, प्रचार-विशेषज्ञों, समाजविज्ञानियों, अध्यापकों, पत्रकारों तथा व्यावसायिक राजनीतिज्ञों का था। इस वर्ग के अधिकांश व्यक्ति मध्यवर्ग के वेतनभोगी व्यक्ति थे। इनमें से कुछ श्रमिकों के उच्चतर वर्ग के थे। इस अभिजात्यवर्ग को उद्योगों के एकाधिपत्य तथा केन्द्रीय सरकार हो जाने से अपना वर्तमान रूप प्राप्त करने में और भी सहायता मिल गई। इन लोगों की यदि पहले के अधिकारियों से तुलना की जाए तो पता लगता है कि इस वर्ग के लोग अपेक्षाकृत कम लालची, विलासिता से बहुत अधिक आकृष्ट न होने वाले, परन्तु अधिक से अधिक सत्ता हथिया लेने के लिए आतुर प्रतीत होते हैं। वे क्या कर रहे हैं, यह बात वे अच्छी तरह जानते हैं और विरोधियों को कुचलने में ज़रा भी काहिली, सुस्ती या दया नहीं दिखलाते। यह अन्तिम अन्तर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। आज की निरंकुश तानाशाही की तुलना में अतीत के समस्त निरंकुश शासक अदक्ष थे। उन्होंने पूरी तरह विरोध का दमन नहीं किया। शासकवर्ग के विरुद्ध जब तक कोई प्रत्यक्ष कार्य नहीं होता था वह लोगों से छेड़छाड़ नहीं करता था और थोड़ी-बहुत उदारता दिखलाता था। लोगों को विचारस्वातंत्र्य भी रहता था, कम से कम इन अर्थों में कि वे जो चाहें सोच सकते थे। आधुनिक प्रतिमानों की तुलना में मध्ययुग का कैथोलिक चर्च भी पर्याप्त सहिष्णु था। इसका एक कारण यह भी था कि कोई भी सरकार हर व्यक्ति पर निगाह नहीं रख सकती थी। प्रेस के आविष्कार के कारण जनमत तैयार करना आसान हो गया। रेडियो और टेलीविज़न ने इसे और भी अधिक सुविधा प्रदान की। टेलीविज़न ने बाद में यह उन्नति की कि इसमें जिस पर्दे से चित्र देखा जा सकता था उसीसे चित्र लिया भी जा सकता था। इससे निजी जीवन की समाप्ति हो गई। इसके ज़रिये हर ऐसे नागरिक पर चौबीसों घंटे दृष्टि रखी जा सकती थी जिसके क्रियाकलाप राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकते हैं। सरकारी प्रचार के अतिरिक्त विचार-विमर्श के अन्य सब विकल्प समाप्त किए जा सकते हैं। इस प्रकार न केवल सब लोग राज्य की इच्छा के अनुसार आचरण ही करने लगे अपितु पहली बार हर विषय पर लोगों का एक ही मत भी होने लगा।

सन् १९५० तथा १९६० के बीच के दस वर्षों के बाद, जिनमें ...ण चारों ओर अव्यवस्था थी, समाज फिर तीन वर्गों में

इतिहास की गति समझ ली गई थी तो लोगों का ख्याल था कि उसे
बदला भी जा सकता है। लेकिन इसका मुख्य कारण यह था कि बीसवीं
शताब्दी के आरम्भ में ऐसा प्रतीत होने लगा था कि मानव-समानता
स्थापित हो जाने की सम्भावना है। यह सच था कि हर आदमी एक-सा
ही मेधावी नहीं होता और कोई किसी काम के उपयुक्त होता है तो कोई
किसीके, परन्तु अब वर्ग-विषमता या धन के बाहुल्य से उत्पन्न असमानता
के लिए कोई स्थान नहीं था। आरम्भिक युगों में वर्गभेद अनिवार्य ही
नहीं वांछनीय भी था। असमानता सभ्यता का मूल थी। परन्तु मशीनों
से उत्पन्न होने वाले उत्पादन के कारण स्थिति बदल गई। यदि यह
जरूरी भी हो कि लोग अलग-अलग ढंग के काम करें तो भी यह आवश्यक
नहीं था कि वे भिन्न सामाजिक या आर्थिक स्तरों पर रहें। अतएव,
मध्यवर्ग के जिन लोगों को सत्ता मिलने वाली थी, उन्हें मानव-समानता
वांछनीय आदर्श नहीं प्रतीत हुआ, अपितु वह ऐसी आशंका प्रतीत हुई
जिसका उन्मूलन आवश्यक था। बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से हर
राजनीतिक सिद्धान्त ने तानाशाही का समर्थन शुरू कर दिया। पृथ्वी पर
स्वर्ग लाने की कल्पना का ठीक उस समय परित्याग कर दिया गया जब
उसको मूर्तरूप देना सम्भव हो गया था। हर नया राजनीतिक सिद्धान्त
वर्गगत समाज और दमन का समर्थन करने लगा। सन् १९३० के आस-
पास इस राजनीतिक सकीर्णता और कठोरता के कारण वे बातें भी होनी
आरम्भ हो गईं जो काफी दिनों से बन्द थी। जैसे बिना मुकद्दमे के नजर-
बन्द कर देना। युद्धबन्दियों का दासों की भांति प्रयोग, सार्वजनिक रूप
से फांसी देना, इकबाली बयान के लिए यातना देना, तथा सामूहिक रूप
से लोगों को निष्कासित कर देना। इन बातों को न केवल शुरू ही कर
दिया गया अपितु इन्हें बरदाश्त भी किया जाने लगा और पढ़े-लिखे लोग
भी इनका समर्थन करने लगे।

पूरे दस वर्ष तक गृहयुद्धों, क्रान्तियों, प्रतिक्रान्तियों तथा संघर्षों के
बाद इंगसोश तथा इसके समान अन्य दो और राजदर्शन सफल हो सके।
परन्तु इनपर तानाशाही की छाया पहले ही पड़ चुकी थी। यह भी स्पष्ट
हो गया था कि इतनी अव्यवस्था और अशान्ति के उपरान्त तानाशाही
शासन हो जाएगा। यह भी पता लग गया था कि दुनिया का शासन किस
प्रकार के लोगों के हाथ में रहेगा। अभिजातवर्ग नौकरशाहों, वैज्ञानिकों,

टेकनिशियनों, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं, प्रचार-विशेषज्ञों, समाजविज्ञानियों, अध्यापकों, पत्रकारों तथा व्यावसायिक राजनीतिज्ञों का था। इस वर्ग के अधिकांश व्यक्ति मध्यवर्ग के वेतनभोगी व्यक्ति थे। इनमें से कुछ श्रमिकों के उच्चतर वर्ग के थे। इस अभिजात्यवर्ग को उद्योगों के एकाधिपत्य तथा केन्द्रीय सरकार हो जाने से अपना वर्तमान रूप प्राप्त करने में और भी सहायता मिल गई। इन लोगों की यदि पहले के अधिकारियों से तुलना की जाए तो पता लगता है कि इस वर्ग के लोग अपेक्षाकृत कम लालची, विलासिता से बहुत अधिक आकृष्ट न होने वाले, परन्तु अधिक मे अधिक सत्ता हथिया लेने के लिए आतुर प्रतीत होते हैं। वे क्या कर रहे हैं, यह बात वे अच्छी तरह जानते हैं और विरोधियों को कुचलने में जरा भी काहिली, सुस्ती या दया नहीं दिखलाते। यह अन्तिम अन्तर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। आज की निरंकुश तानाशाही की तुलना मे अतीत के समस्त निरंकुश शासक अदक्ष थे। उन्होंने पूरी तरह विरोध का दमन नहीं किया। शासकवर्ग के विरुद्ध जब तक कोई प्रत्यक्ष कार्य नहीं होता था वह लोगों से छेड़छाड़ नहीं करता था और थोड़ी-बहुत उदारता दिखलाता था। लोगों को विचारस्वातन्त्र्य भी रहता था, कम से कम इन अर्थों मे कि वे जो चाहें सोच सकते थे। आधुनिक प्रतिमानों की तुलना मे मध्ययुग का कैथोलिक चर्च भी पर्याप्त सहिष्णु था। इसका एक कारण यह भी था कि कोई भी सरकार हर व्यक्ति पर निगाह नहीं रख सकती थी। प्रेस के आविष्कार के कारण जनमत तैयार करना आसान हो गया। रेडियो और टेलीविज़न ने इसे और भी अधिक सुविधा प्रदान की। टेलीविज़न ने बाद मे यह उन्नति की कि इसमे जिस पर्दे से चित्र देखा जा सकता था उसीसे चित्र लिया भी जा सकता था। इससे निजी जीवन की समाप्ति हो गई। इसके ज़रिये हर ऐसे नागरिक पर चौबीसों घंटे दृष्टि रखी जा सकती थी जिसके क्रियाकलाप राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकते हैं। सरकारी प्रचार के अतिरिक्त विचार-विमर्श के अन्य सब विकल्प समाप्त किए जा सकते हैं। इस प्रकार न केवल सब लोग राज्य की इच्छा के अनुसार आचरण ही करने लगे अपितु पहली बार हर विषय पर लोगों का एक ही मत भी होने लगा।

सन् १९५० तथा १९६० के बीच के दस वर्षों के बाद, जिनमें क्रान्तियों के कारण चारों ओर अव्यवस्था थी, समाज फिर तीन वर्गों में

विभक्त हो गया : उच्च, मध्य तथा निम्न। इस बार उच्चवर्ग यह जानता था कि उसे अपनी स्थिति सुरक्षित रखने के लिए क्या करना चाहिए। अब यह बात भली भाँति समझ ली गई थी कि अल्पतंत्र उच्च-वर्गों को सुरक्षित रखने के लिए समूहवाद ही सबसे अधिक उचित सिद्धान्त है। धन-सम्पत्ति और विशेषाधिकारों की रक्षा का सबसे अच्छा साधन संयुक्त स्वामित्व है। 'निजी सम्पत्ति का उन्मूलन' जो क्रान्तियों के दौरान में हुआ, उसकी जगह अब ऐसी व्यवस्था ने ली जिसमें सम्पत्ति अपेक्षाकृत अल्पसंख्यक व्यक्तियों के हाथों में सीमित हो गई। फर्क इतना ही था कि अब एक व्यक्ति स्वामी नहीं था, बल्कि एक वर्ग था। व्यक्तिगत रूप से पार्टी के किसी सदस्य के पास उसके अपने काम में आने वाली कुछ चीजों को छोड़कर अन्य कोई सम्पत्ति नहीं है। सामूहिक रूप से, ओशनिया की हर चीज पर पार्टी का कब्जा है, क्योंकि सारे देश पर उसीका नियन्त्रण है। वह हर वस्तु का जैसे चाहती है, वैसे प्रयोग करती है।

किन्तु वर्गगत समाज को शाश्वत बना देना इतना आसान नहीं है। ये समस्याएं और भी उलझन-भरी और गहरी हैं। शासकवर्ग को पदच्युत करने के कुल चार ढंग ही सम्भव हैं। वह है, बाहर की कोई शक्ति हमला करके उसे परास्त कर दे, या शासकवर्ग स्वयं ही शासन करने की इच्छा त्याग दे, या फिर वह ऐसे मध्यवर्ग को जन्म दे दे जो बहुत ही शक्तिशाली भी हो और साथ ही शासकों से असन्तुष्ट भी हो। या ये सब कारण एकसाथ काम करें। जो शासकवर्ग इन कारणों को हटा देगा वह हमेशा शासन करने में सफल हो जाएगा।

वर्तमान शताब्दी के मध्यकाल के बीत जाने के बाद किसी बाह्य-शक्ति के आक्रमण की सम्भावना तो शेष रही नहीं। आज सारी दुनिया जिन तीन राज्यों में विभक्त है, वे करीब-करीब अजेय हैं। जनता का असन्तोष और विद्रोह करने की बात केवल सैद्धान्तिक है। जब तक जनता के सामने तुलनात्मक जीवन-यापन के मानदण्ड नहीं होते तब तक उसे पता भी नहीं लगता कि वह दलित है या उसपर अत्याचार किया जा रहा है। असन्तोष को प्रकट करने का कोई माध्यम ही नहीं है। मशीनों के कारण जो अधिक उत्पादन होता है उसकी समस्या भी निरन्तर चलने वाले युद्ध से हल कर ली गई है। (तीसरा अध्याय देखिए।) अतएव

वर्तमान शासकवर्ग की समस्याएं ये हैं : योग्य, बेकार, सत्तापिपासु व्यक्तियों का कोई शक्तिशाली वर्ग न बन पाए, तथा पार्टी में उदारतावाद और सन्देहवाद के पोषकों का कोई दल न उभर आए। अतएव यह समस्या दीर्घ सम्बन्धी कही जा सकती है।

इस भूमिका को समझ लेने के बाद यदि कोई ओशनिया के सामाजिक ढांचे को न भी जानता हो तो भी उसकी कल्पना तो भली भांति कर ही सकता है। स्तूप के शीर्ष बिन्दु पर बड़े भाई हैं। उनसे कोई गलती नहीं हो सकती और वे सर्वशक्तिमान हैं। वे ही प्रत्येक सफलता, प्रत्येक विजय, प्रत्येक शोध, सारे ज्ञान, समस्त गुणों के स्रोत हैं। ऐसी हर बात उन्हींके नेतृत्व तथा प्रेरणा-शक्ति होने के कारण होती है। पोस्टरों पर उनका चेहरा दिखलाई पड़ता है और टेलीस्क्रीन पर उनकी आवाज़ सुनाई देती है। वे करीब-करीब अमर हैं और वे कब पैदा हुए थे, यह कोई नहीं जानता। बड़े भाई के रूप में ही पार्टी अपने-आपको सारे संसार के सामने प्रकट करती है। बड़े भाई जनता के स्नेह, श्रद्धा, भय तथा अन्य ऐसी ही भावनाओं के केन्द्र हैं जो किसी व्यक्ति के प्रति तो उमड़ सकती हैं लेकिन किसी दल के प्रति नहीं। बड़े भाई के ठीक नीचे अन्तरंग पार्टी है। इसमें कोई साठ लाख व्यक्ति हैं। यह संख्या ओशनिया की आबादी का दो प्रतिशत है। अन्तरंग पार्टी के बाद बाह्य और बड़ी पार्टी का नम्बर आता है। यदि अन्तरंग पार्टी मस्तिष्क है तो बाह्य पार्टी हाथ है। सबसे नीचे गूंगी जनता है जो मज़दूर कहलाती है। ओशनिया में ८५ प्रतिशत लोग मज़दूर हैं। पहले हमने जो वर्ग-विभाजन किया है उसके अनुसार मज़दूर जनता निम्नवर्ग में आई। भूमध्यरेखावर्ती लोग किसी वर्ग में नहीं आते क्योंकि इनके शासक बराबर बदलते रहते हैं। उन्हें समाज का अनिवार्य अंग नहीं माना जाता।

सिद्धान्ततः इन तीनों वर्गों की सदस्यता वंशगत नहीं है। अन्तरंग पार्टी के सदस्य माता-पिता का बच्चा अपने-आप जन्म के अधिकार से अन्तरंग पार्टी का सदस्य नहीं बन जाता। पार्टी के किसी भी वर्ग में शामिल करने के लिए उसकी परीक्षा ली जाती है। यह परीक्षा सोलह वर्ष की अवस्था में होती है। ओशनिया के शासकों का परस्पर रक्त-सम्बन्ध नहीं है बल्कि समान सिद्धान्तों में विश्वास ही उनकी एकता का कारण है। पुराने वर्ग के अर्थों में पार्टी, वर्गमात्र नहीं है। अर्थात

पार्टी के सदस्यों के कामों को [illegible] [illegible] पर [illegible] रही है। पुराने समाज [illegible] का [illegible] था कि जो [illegible] नहीं है वह बदली नहीं जा सकता। उसने यह भी सिद्ध किया कि [illegible] [illegible] अपरिवर्तनीय होता है। इसके विपरीत [illegible] तक सब [illegible] सकें। [illegible] का अर्थ [illegible] से पूर्व को [illegible] नहीं है—[illegible] ने [illegible] विशिष्ट दृष्टिकोण और जीवन [illegible] एक [illegible] हैं, जिनको [illegible] अंतिम [illegible] पर [illegible] जाते हैं। [illegible] जब तक सबसे उच्चाधिकारियों को निश्चित कर सकता है तब तक वह शासक ही बना रहेगा।

हमारे समय के विश्वासों, आदतों, रुचियों, मनोवृत्तियों को इस प्रकार का बना दिया गया है जिससे पार्टी का रहस्य छिपा रहे और वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का वास्तविक चित्र हमारी आंखों के सामने न आए। विद्रोह या विद्रोह की तरफ कोई कदम भी उठाना बिल्कुल असम्भव है। मजदूरवर्ग की ओर से इस की कोई आशंका नहीं है। यदि उनमें छेड़-छाड़ न की जाए तो पीढ़ी के बाद पीढ़ियां, शताब्दियों के बाद शताब्दियां गुजरती चली जाएंगी और मजदूर उसी तरह काम करते रहेंगे। बच्चे पैदा करते जाएंगे और मरते जाएंगे। उनमें न केवल किसी विद्रोह की ही भावना उत्पन्न नहीं होगी, बल्कि वे कल्पना भी नहीं कर सकेंगे कि जो संसार है उसके अलावा भी और कोई दुनिया हो सकती है। यदि औद्योगिक प्रगति के लिए उन्हें उच्च शिक्षा दी गई तो वे अवश्य खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं। लेकिन अब सैनिक और औद्योगिक होड़ शेष नहीं रह गई है। इसलिए लोगों को दी जाने वाली शिक्षा का स्तर भी गिरता जा रहा है। बौद्धिक स्वतन्त्रता भी उनको इसीलिए दी गई है कि उनमें विचार करने की बुद्धि ही नहीं है। इसके विपरीत पार्टी में छोटे से छोटे विषय पर छोटे से छोटे सदस्य के विमत को बरदाश्त नहीं किया जाता।

जन्म से मृत्यु तक पार्टी-सदस्य पर विचार-पुलिस की दृष्टि रहती है। वह जब एकान्त में होता है तो भी उसे यह पता नहीं होता कि वह अकेला है। वह सोता हो या जागता, काम कर रहा हो या आराम कर रहा हो या बिस्तर पर हो, वह चाहे कहीं हो, बिना पूर्व-सूचना के उसके

ास पुलिस पहुँच सकती है या उसपर इस प्रकार भी दृष्टि रखी जा सकती है कि उसे पता ही नहीं चले। कोई भी काम, जो पार्टी-सदस्य करता है, पार्टी उससे उदासीन नही रह सकती। उसके मित्रों, उसके मनोरंजन या विश्राम के ढगों, अकेले में उसकी बुदबुदाहट, एकान्त में उसके चेहरे के भावों तक का अध्ययन किया जाता है। वास्तविक कदाचरण ही नहीं, सनक, स्नायुओं की बेकली या ऐसी समस्त बातों का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता, जिससे मानसिक सघर्ष का भाव व्यक्त होता हो। उसके आचरण का नियमन किसी कानून या आचार-सहिता से नही होता। ओशनिया में कोई कानून नहीं है। ऐसे विचार या कार्य जिनसे मृत्युदण्ड मिल सकता है, करने की मनाही नही है। वस्तुत शुद्धिकरण, गिरफ्तारियों, यत्रणाओ, कारागारवासों तथा मार डालने का जो अनन्त सिलसिला है, वह यह नही प्रकट करता कि पकड़े गए सारे व्यक्तियो ने कोई न कोई अपराध किया ही है, बल्कि उनमे वे व्यक्ति अधिक सख्या में होगे जिनसे भविष्य में किसी अपराध के किए जाने की सभावना होगी। पार्टी-सदस्य का मत ही पार्टी के अनुकूल होना जरूरी नही है बल्कि यह भी जरूरी है कि उसके भाव भी पार्टी के विरुद्ध न हो। पार्टी क्या चाहती है, यह कभी नही बतलाया जाता। सच तो यह है कि यदि स्पष्टत अपनी मशा प्रकट कर दे तो इगसोश की परस्पर विरोधी बातें प्रकाश मे आ जाती हैं। यदि कोई व्यक्ति पार्टी का भक्त है तो उसे अपने-आप पता लग जाएगा कि क्या बात सही है और क्या गलत। परन्तु सच बात तो यह है कि उसे बचपन में जो शिक्षा मिलती है उसके कारण उसमे सोचने की शक्ति ही शेष नही रह जाती।

पार्टी-सदस्य की कोई निजी भावनाएं नही होनी चाहिए। उसे निरुत्साहित भी नही दिखलाई पड़ना चाहिए। विदेशियो के प्रति हमेशा क्रुद्ध रहना चाहिए और उनसे घृणा करनी चाहिए। यही भाव देश के प्रति विश्वासघात करने वालो के सम्बन्ध में होना चाहिए। जीवन-यापन की दशाओ के प्रति असतोष को प्रतिदिन प्रचार की फिल्मे दिखलाकर समाप्त कर दिया जाता है। अन्य प्रकार की विद्रोही भावनाओं को पार्टी के अनुशासन की शिक्षा द्वारा समाप्त कर दिया जाता है। बच्चों को सिखलाया जाता है कि वे किस प्रकार अपराधपूर्ण विचार के निकट पहुचते ही आगे सोचना बन्द कर दें। अपराध रोकने वाली शिक्षा का

अर्थ है ऐसी पूर्णता की स्थिति प्राप्त कर लेना जो मौसम की तरह बदली रहे। इसके विपरीत पार्टी-भक्ति का मतलब है मानसिक शक्ति पर इतना नियंत्रण रखे कि आप उसे जैसा चाहें मोड़ दें, ठीक उसी तरह जिस प्रकार सरकस के पहलवान अपने शरीर को जिधर चाहें मोड़ सकते हैं। ओशनिया का समाज इस विश्वास पर आधारित है कि बड़े भाई सर्वान्तर्यामी है और पार्टी कभी कोई गलती कर ही नहीं सकती। परन्तु वस्तुतः बड़े भाई सर्वान्तर्यामी नहीं है और पार्टी भी गलतियां कर सकती है, अतएव तथ्यों को बराबर गढ़ते रहने के लिए अथक परिश्रम की आवश्यकता है। यहां पार्टी के हित को दृष्टि में रखते हुए बातें को सफेद करना और सोचना पड़ता है। अतीत की बातों को इसलिए बदलते रहने की जरूरत है।

भूतकाल की घटनाओं में परिवर्तन के दो कारण हैं। इनमें से एक तो सावधानी बरतना कहा जा सकता है। वह यह है कि पार्टी के छोटे सदस्य भी जीवन की कठिन परिस्थितियां को केवल इसलिए बरदाश्त करते हैं क्योंकि उनके सामने तुलना करने के लिए कोई चीज नहीं है। इसी दृष्टि से पार्टी-सदस्यों को इतिहास का ज्ञान भी नहीं होना चाहिए। क्योंकि इस ज्ञान के अभाव में वे यह कभी नहीं जान सकेंगे कि उनके पूर्वज उनकी अपेक्षा अच्छी स्थिति में रहते थे। उन्हें तो यही लगना चाहिए कि उसके जीवन-यापन के प्रतिमान सुधरते जा रहे हैं। भाषण और रिपोर्टें ही पर्याप्त नहीं हैं। पिछले रिकार्ड भी इस तरह दुरुस्त होने चाहिए कि पार्टी के अनुमान सही साबित हों। यह भी दिखलाया जाए कि पार्टी के सिद्धान्तों या उसके मित्रों में कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसकी वजह यह है कि सिद्धान्त बदलने का या मित्र-परिवर्तन करने में भी कमजोरी प्रकट होती है। यदि तथ्य विपरीत हों तो यह जरूरी है कि उनको अनुकूल बनाया जाए। इस प्रकार इतिहास बराबर लिखा जाता है। सत्य मन्त्रालय का यह काम इतना जरूरी है जितना षड्यंत्रों के दमन का काम, जो प्रेम मन्त्रालय करता है।

इंगसोश के दर्शन का मुख्य तत्त्व है यह सिद्धान्त कि अतीत बदल सकता है। विगत घटनाओं का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है, सिवा इतिहास के और स्मृति के। अतीत वही है जो पिछला इतिहास और स्मृति कहे। चूंकि इतिहास पर पार्टी का नियंत्रण है और पार्टी का

अपने सदस्यों के दिमाग पर भी नियंत्रण है, इसलिए अतीत वही है जो पार्टी कहती है। यदि किसीको रिकार्डों में परिवर्तन करना पड़े या अपनी स्मृति को ठीक करना पड़े तो यह भी जरूरी है कि वह जो कुछ करे उसे भूल जाए। इसकी तरकीब यह है कि बहुसंख्यक पार्टी-सदस्य वही बात कहने लगते हैं जो नये रिकार्डों में होती है तथा अन्य लोगों को भी वही बात माननी पड़ती है। इसे यथार्थ नियंत्रण कहते हैं। नई भाषा मे इसे 'द्वैध विचार' कहते हैं।

द्वैध विचार का मतलब है अपने दिमाग में दो तथ्यों को रखना और दोनो पर ही विश्वास करना। पार्टी का बुद्धिवादी सदस्य जानता है कि उसे किस दिशा मे अपनी स्मृति को मोड़ना है। इतनी चेतना होनी चाहिए कि कोई गलती न हो पाए और इतनी अचेतना कि काम होने के बाद वह परिवर्तन की क्रिया को भूल जाए। विश्वासपूर्वक झूठ बोलना, असुविधा पैदा करने वाले सत्य को भुला देना, आवश्यकता पड़ने पर सत्य को याद कर लेना और जब तक जरूरी हो याद रखना और फिर भुला देना, यह सब निहायत जरूरी है। द्वैध विचार के प्रयोग द्वारा जान-बूझकर आप किसी जानकारी को भुलाते हैं और इस प्रकार आप एक झूठ के सहारे सचाई की सीमा को कूदकर पार कर जाते हैं। इस प्रकार पार्टी हजारों वर्षों की गति को रोक सकती है। इतिहास की धारा को अवरुद्ध कर सकती है।

अतीत के वर्गतन्त्रों का पतन इसलिए हुआ है कि वे या तो काम-चोर हो गए या उनके विश्वास की जड़ें हिल गई। या तो वे बेवकूफी करने लगे या बदलती परिस्थितियों के अनुकूल अपने-आपको नहीं बना सके। या तो वे उदारतावादी हो गए या कायर। और उन्होंने ऐसे स्थानों पर भीरुता दिखलाई जहां शक्ति-प्रयोग आवश्यक था और इसी कारण पदच्युत कर दिए गए। पार्टी की यह सफलता है कि उसने ऐसी तरकीब निकाल ली है कि जिसमे दोनों प्रकार की बातें निभ सकती हैं। यह तरकीब है द्वैध विचार की। इसके अलावा अन्य किसी ताकत से पार्टी की सत्ता को शाश्वत नहीं बनाया जा सकता था।

द्वैध विचार के अन्वेषक ही इसके सबसे बड़े प्रयोगकर्ता भी हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है यह बात कि ज्यों-ज्यों आदमी का सामाजिक स्तर ओशानिया में बढ़ता जाता है त्यों-त्यों उसकी युद्ध-मनोवृत्ति

अपने सदस्यों के दिमाग पर भी नियंत्रण है, इसलिए अतीत वही है जो पार्टी कहती है। यदि किसीको रिकार्डों में परिवर्तन करना पड़े या अपनी स्मृति को ठीक करना पड़े तो यह भी जरूरी है कि वह जो कुछ करे उसे भूल जाए। इसकी तरकीब यह है कि बहुसख्यक पार्टी-सदस्य वही बात कहने लगते हैं जो नये रिकार्डों में होती है तथा अन्य लोगों को भी वही बात माननी पड़ती है। इसे यथार्थ नियंत्रण कहते हैं। नई भाषा में इसे 'द्वैध विचार' कहते हैं।

द्वैध विचार का मतलब है अपने दिमाग में दो तथ्यों को रखना और दोनों पर ही विश्वास करना। पार्टी का बुद्धिवादी सदस्य जानता है कि उसे किस दिशा मे अपनी स्मृति को मोड़ना है। इतनी चेतना होनी चाहिए कि कोई गलती न हो पाए और इतनी अचेतना कि काम होने के बाद वह परिवर्तन की क्रिया को भूल जाए। विश्वासपूर्वक झूठ बोलना, असुविधा पैदा करने वाले सत्य को भुला देना, आवश्यकता पड़ने पर सत्य को याद कर लेना और जब तक जरूरी हो याद रखना और फिर भुला देना, यह सब निहायत जरूरी है। द्वैध विचार के प्रयोग द्वारा जान-बूझकर आप किसी जानकारी को भुलाते हैं और इस प्रकार आप एक झूठ के सहारे सचाई की सीमा को कूदकर पार कर जाते हैं। इस प्रकार पार्टी हजारों वर्षों की गति को रोक सकती है। इतिहास की धारा को अवरुद्ध कर सकती है।

अतीत के वर्गतन्त्रों का पतन इसलिए हुआ है कि वे या तो काम-चोर हो गए या उनके विश्वास की जड़ें हिल गईं। या तो वे बेवकूफी करने लगे या बदलती परिस्थितियों के अनुकूल अपने-आपको नहीं बना सके। या तो वे उदारतावादी हो गए या कायर। और उन्होंने ऐसे स्थानों पर भीरुता दिखलाई जहां शक्ति-प्रयोग आवश्यक था और इसी कारण पदच्युत कर दिए गए। पार्टी की यह सफलता है कि उसने ऐसी तरकीब निकाल ली है कि जिसमें दोनों प्रकार की बातें निभ सकती हैं। यह तरकीब है द्वैध विचार की। इसके अलावा अन्य किसी ताकत से पार्टी की सत्ता को शाश्वत नहीं बनाया जा सकता था।

द्वैध विचार के अन्वेषक ही इसके सबसे बड़े प्रयोगकर्ता भी हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है यह बात कि ज्यों-ज्यों आदमी का सामाजिक स्तर ओशनिया में बढ़ता जाता है त्यों-त्यों उसकी युद्ध-मनोवृत्ति

भी बढ़ती जाती है। युद्ध के प्रति सबसे अधिक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण विवादास्पद प्रदेशों के निवासियों का है। वे युद्ध को समुद्री तूफान की भांति शाश्वत संकटमय लहर मानते हैं जो उनके ऊपर से बराबर आती-जाती रहती है। कौन-सा पक्ष जीतता है इस तथ्य के प्रति वे बिलकुल उदासीन हैं। उनके लिए दोनों मालिक बराबर हैं क्योंकि उनको दोनों के लिए उसी तरह काम करना पड़ता है और दोनों मालिकों का व्यवहार उनके साथ एक-सा ही है। इनसे कुछ ही अच्छी अवस्था में मजदूरवर्ग के लोग हैं। परन्तु इनको भी बराबर लड़ाई की याद दिलाई जाती रहती है। उन्हें प्रचार द्वारा कभी-कभी क्रुद्ध किया जा सकता है। किन्तु यदि उनसे छेड़छाड़ न की जाए तो वे परवाह भी नहीं करते कि युद्ध हो भी रहा है या नहीं और यदि हो तो उसमें क्या हो रहा है। पार्टी में और विशेष रूप से अंतरंग पार्टी के सदस्यों में युद्ध के लिए बड़ा उत्साह पाया जाता है। वही लोग विश्व-विजय में सबसे अधिक विश्वास प्रकट करते हैं जो समझते हैं कि ऐसा होना असम्भव है। यह दो परस्परविरोधी बातों का एकसाथ होना ही—ज्ञान के साथ घोर अज्ञान, सनक के साथ कट्टरता—ओशनिया के समाज की मुख्य विशेषता है। सरकारी विचारों में भी इसी प्रकार के विरोधाभास मिलते हैं। पार्टी शारीरिक श्रम को हेय समझती है, परन्तु अपने सदस्यों को वर्दी वही देती है जो किसी समय मजदूर पहनते थे। पारिवारिक भावनाओं को खत्म करने का हर प्रयत्न किया जाता है, किन्तु उन्हींके आधार पर पार्टी-नेता के प्रति असीम श्रद्धा, अनुराग और भक्ति की मांग की जाती है। मंत्रालयों के काम भी इसी प्रकार उलटे हैं। शांति मंत्रालय का काम युद्ध-संचालन है। सत्य मंत्रालय का काम दिन-रात असत्य और मिथ्या बातें गढ़ना है। प्रेम मंत्रालय यंत्रणाघर है। समृद्धि मंत्रालय लोगों को भूखा मारता है। ये विरोधाभास संयोगवश नहीं हैं। जान-बूझकर ऐसा किया गया है। ये पाखंड भी नहीं हैं। ये द्वैध विचारों का प्रत्यक्ष प्रयोग या अभ्यास हैं। इन विरोधाभास के बीच सामंजस्य स्थापित करके ही अनिश्चित काल तक के लिए शक्ति और सत्ता को अपने हाथ में बनाए रखा जा सकता है। अन्य किसी प्रकार से कालचक्र की गति को रोका नहीं जा सकता। यदि मानव-समानता को कभी स्थापित नहीं होने देना है—यदि उच्चवर्ग को हमेशा उसकी जगह बने रहने देना है तो वर्तमान

मानसिक अवस्था को बनाए रखना पड़ेगा, जो नियंत्रित पागलपन के सिवा कुछ भी नहीं है।

लेकिन एक और सवाल है जिसकी ओर अभी तक हमने ध्यान नहीं दिया है। प्रश्न है—मानव-समानता को क्यों न स्थापित किया जाए? मान लिया कि आपकी प्रक्रिया बिलकुल ठीक है, परन्तु इतनी बड़ी प्रशासन-व्यवस्था द्वारा इतिहास की गति अवरुद्ध करने की जरूरत क्या है?

विन्स्टन सहसा अपने चारों ओर छाए मौन से सचेत हो उठा। ठीक उसी तरह जैसे कोई नई आवाज सुनकर चौंक उठता है। ऐसा लग रहा था कि जूलिया काफी देर से बिलकुल चुप थी। वह करवट लिए लेटी थी और कमर से ऊपर का हिस्सा बिलकुल नंगा था। वह हाथों पर अपने गाल रखे थी और बालों की एक लट आंखों पर झूल रही थी। उसका वक्षस्थल निरन्तर ऊपर-नीचे उठ-गिर रहा था।

'जूलिया!'

उत्तर नदारद।

'जूलिया, जाग रही हो क्या?'

कोई जवाब नहीं। वह सो रही थी। उसने किताब बन्द करके फर्श पर रख दी, और चादर जूलिया को उढ़ा दी और खुद भी ओढ़ ली।

वह सोच रहा था, असली रहस्य तो उसने जाना ही नहीं। वह यह तो समझ गया था कि 'कैसे?' परन्तु उसकी समझ में यह नहीं आया था कि 'क्यों?' प्रथम की भांति तीसरे अध्याय ने भी उसे कोई बात नहीं बतलाई थी जिसे वह न जानता हो, हां, पढ़ने से उसका ज्ञान व्यवस्थित और क्रमबद्ध अवश्य हो गया था। लेकिन पढ़ने के बाद उसे विश्वास हो गया था कि कम से कम वह पागल तो नहीं है। सत्य और असत्य दो चीजें हैं। यदि आप सत्य को मानते हैं, तो आप पागल नहीं हैं, चाहे फिर आप अकेले ही क्यों न हों। डूबते सूरज की पीली किरण तिरछी होकर उसके कमरे में आ रही थी। वह तकिये पर पड़ रही थी। उसने आंखें मूंद लीं। मुंह पर पड़ने वाली धूप और लड़की के कोमल शरीर का स्पर्श उसे निद्रादायी विश्राम प्रदान कर रहा था। उसमें विश्वास जाग गया था। वह सुरक्षित था। वह बिलकुल ठीक था।

के लिए गा रही थी। शायद अपना जी खुश करने के लिए भी नहीं, बस गाने के लिए गा रही थी।' जूलिया ने कहा।

चिड़ियां गाती हैं। मजदूर गाते हैं। पार्टी नहीं गाती। सारी दुनिया में, लन्दन में, पेरिस में, न्यूयार्क में, अफ्रीका और ब्राजील में, सीमा पार के निषिद्ध प्रदेशों में, बर्लिन में, रूसी मैदानों के गांवों में, चीन और जापान के बाजारों में, हर स्थान पर वही अजेय मजदूर था जो दानव की भांति श्रमरत था। उनकी स्त्रियां बच्चे पैदा करती थी और मजदूर जन्म से लेकर मृत्यु तक काम करता था और बराबर गाता रहता था।

'हम मृत हैं।' विन्स्टन ने कहा।

'हम मृत हैं।' जूलिया ने उसकी ही बात प्रतिध्वनित कर दी।

'हां, तुम मृत हो।' उनके पीछे से कठोर स्वर में किसीने दोहराया।

वे उछलकर अलग खड़े हो गए। विन्स्टन को काटो तो खून नहीं। उसका बदन बर्फ की तरह शीतल हो गया था। जूलिया का चेहरा भी सफेद पड़ गया था। गाल की लाली अब भी रंग की तरह चमक रही थी, पर ऐसा लगता था कि उसका नीचे की त्वचा से कोई सम्बन्ध नहीं है।

'जहां हो, ठीक वहीं खड़े रहो। जब तक कहा न जाए, जरा भी हिलना मत।'

शुरू हो गया। आखिर शुरू हो गया। वे एक-दूसरे को देखने के अलावा कुछ भी नहीं कर सकते थे। मकान से निकल भागें—अपनी जान बचाने को कूदकर भाग जाएं—ऐसा कोई विचार उनके दिमाग में नहीं आया। खटके की आवाज आई। किसीने शायद खिड़की खोली थी। इसके बाद कांच टूटने की आवाज आई। तस्वीर जमीन पर गिर गई थी। उसके पीछे जो टेलीस्क्रीन छिपा था, वह सामने आ गया।

'अब वे हमें देख भी सकते हैं।' जूलिया ने कहा।

'अब हम तुम्हें देख भी सकते हैं,' उसी कण्ठस्वर ने कहा, 'कमरे के बीचोबीच खड़े हो जाओ। अपनी पीठ एक-दूसरे के सामने कर लो। अपने हाथ सिर के पीछे ले जाकर बांध लो। एक-दूसरे को छुओ मत।'

वह उसे छू तो नही रहा था लेकिन उसे लग रहा था कि जूलिया का सारा बदन बुरी तरह कांप रहा था। या शायद वही अकेला कांप रहा था। उसने बड़ी मुश्किल से अपने दांतों को बजने से रोक लिया था, परन्तु वह अपने घुटनो पर काबू नही पा रहा था। नीचे से बहुत-से जूतों की खटखटाहट सुनाई पड़ रही थी। आवाज़ घर के अन्दर और बाहर दोनों तरफ से आ रही थी। हाते में लोग भरे थे। कोई चीज़ घसीटकर पत्थर की ओर लाई जा रही थी। औरत का गाना अकस्मात् रुक गया था। बडे ज़ोर के साथ किसी चीज के गिरने तथा लुढकने की आवाज़ आई थी। शायद कपडे धोने के टब को फेंक दिया गया था। इसके बाद गुस्से से चीखने की आवाज़ आई और ऐसा लगा कि कोई दर्द से चिल्ला रहा है।

'मकान को घेर लिया गया है।' विन्स्टन ने कहा।

'मकान को घेर लिया गया है।' टेलीस्क्रीन ने दोहराया।

उसे लगा कि जूलिया ने मुह खोला। इसके बाद ही वह बोली, 'मैं समझती हू, अब हम लोग एक-दूसरे से अलविदा कह लें।'

'हा, तुम लोग अलविदा कह सकते हो।' टेलीस्क्रीन ने कहा।

विन्स्टन के पीछे बिस्तर पर कोई चीज़ धम से गिरी। खिड़की के सहारे किसीने सीढी लगी थी जिसने फ्रेम तोड दिया था, वही बिस्तर पर गिरा था। कोई खिडकी में लगाई गई सीढ़ी के सहारे ऊपर चढ़ रहा था। कमरा काली वर्दीधारी सिपाहियो से भर गया था। उनके हाथों में हथकडिया थी।

विन्स्टन का कापना बन्द हो गया था। वह इधर-उधर देख तक नही रहा था। एक ही काम करना था—वह यह कि एकदम सीधा, बिना हिले-डुले खडा रहा जाए और उन लोगो को मारने का मौका न दिया जाए। फिर ज़ोर का धमाका हुआ। किसीने कांच का पेपरवेट उठाकर ज़मीन पर दे मारा था। वह आतिशदान से लगकर टुकड़े-टुकड़े हो गया था।

मूगे का टुकड़ा, केक से गिरे चीनी के गुलाबी फूल की तरह नीचे गिरकर चटाई पर लुढक गया था। अकस्मात् किसीने उसके टखने मे ज़ोरो से ठोकर मारी जिससे वह गिरते-गिरते बच गया। किसीने जूलिया के घूसा मारा था और वह ज़मीन पर दोहरी होकर तड़प रही थी और

उनकी आवाज़ तक नहीं निकल पा रही थी। विन्स्टन में इतनी भी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह उसकी तरफ लेशमात्र भी मुड़कर देख सके। परन्तु कभी-कभी उसे थोड़ा-सा जूलिया का तड़पता हुआ चेहरा दिखलाई पड़ जाता था। उस आतंक की अवस्था में भी वह जूलिया का तड़पना अनुभव कर रहा था। वह यही चाह रहा था कि दर्द तो है ही, लेकिन हे भगवान, जूलिया की सांस वापस लौट आए। इसके बाद दो आदमियों ने जूलिया को बोरी की तरह उठा लिया और बाहर लेकर चले गए। विन्स्टन को जूलिया के चेहरे की झलक मिल गई। जूलिया का चेहरा नीचे झूल गया था, पीला था और उसकी आंखें मुंद गई थीं। उसके दोनों गालों पर लगी लाली अब भी मिटी नहीं थी। यही जूलिया के अन्तिम दर्शन थे।

वह मुर्दे की तरह चुपचाप खड़ा था। किसीने उसे अभी तक मारा नहीं था। उसके दिमाग में तरह-तरह के विचार आ रहे थे, परन्तु उसमें उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह सोच रहा था—पता नहीं, इन लोगों ने क्या मि० चारिंगटन को भी पकड़ लिया है। वह सोच रहा था, उस हाते वाली औरत का क्या हुआ ?

तभी सीढ़ियों पर हलके कदम से किसीके चढ़ने की आवाज़ आई। मि० चारिंगटन ने कमरे में प्रवेश किया। काली वर्दीधारी आदमियों का धृष्ट व्यवहार कुछ कम हो गया। मि० चारिंगटन की शकल भी बदल गई थी। उनकी आंखें पेपरवेट के टुकड़ों पर पड़ीं।

'इन टुकड़ों को उठाओ।' उन्होंने तेज़ी से कहा।

तुरन्त ही एक सिपाही ने झुककर उनकी आज्ञा का पालन किया। उनकी बात का विशेष लहजा भी बदल गया था। विन्स्टन को खयाल आया, यही आवाज़ उसने कुछ सेकेण्ड पहले टेलीस्क्रीन पर सुनी थी। मि० चारिंगटन अभी भी अपनी मखमली जाकेट पहने थे। परन्तु उनके केश जो पहले सफेद थे, अब बिलकुल काले हो गए थे। अब वह चश्मा भी नहीं था। उन्होंने विन्स्टन पर एक तीखी नज़र डाली जैसे उसे पहचान रहे हों, इसके बाद फिर कोई ध्यान नहीं दिया। चारिंगटन पहचाने तो जा सकते थे लेकिन वह अब पहले जैसे नहीं थे। उनकी कमर सीधी हो गई थी। ऐसा लगता था कि लम्बाई बढ़ गई है। उनके ~ में भी थोड़ा-सा परिवर्तन हो गया था। परन्तु थोड़े-से परिवर्तन

ने ही बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया था। भौंहों के बाल अब भी कम थे, लेकिन झुर्रियाँ बिलकुल गायब थीं। चेहरा बदला-सा लगता था। नाक भी छोटी लगने लगी थी। अब पैंतीस वर्ष के व्यक्ति का कठोर चेहरा सामने था। विन्स्टन को खयाल आया कि जीवन में पहली बार वह विचार-पुलिस के आदमी को अपनी जानकारी में सामने खड़ा देख रहा है।

पता नहीं वह कहां था। सम्भवत वह प्रेम मंत्रालय में था, परन्तु स्थान निर्धारण का कोई साधन नहीं था।

वह जिस कोठरी में बन्द था, उसकी छत काफी ऊंची थी। खिड़की एक भी नहीं थी। बल्ब छिपे थे, केवल उनकी रोशनी ही कमरे में थी। हूऽ हूंऽऽ हूऽऽऽ की आवाज आ रही थी। ऐसा लगता था कि इसका सम्बन्ध हवा की सफाई से था। दीवार के सहारे बेंच-सी बनी थी, जिसपर बैठा जा सकता था। वह दरवाजे के पास जाकर खत्म हो जाती थी। दूसरी तरफ के दरवाजे के पास पाखाने के लिए तसला था जिसपर लकड़ी का घेरा नहीं था। हर दीवार में एक-एक यानी चार टेलीस्क्रीन थे।

उसके पेट में हल्का-हल्का दर्द हो रहा था। वह दर्द तब से ही था जब उसे बंडल बनाकर चारों तरफ से बंद मोटर में पटककर यहीं ले आया गया था। परन्तु उसे भूख भी लगी थी। शायद उसे अन्तिम बार भोजन किए चौबीस घंटे गुजर चुके थे या शायद छत्तीस घंटे हो गए हों। परन्तु जब से उसे गिरफ्तार किया गया था उसे कुछ खाने को नहीं दिया गया था।

वह अपने भर चुपचाप घुटने पर हाथ रखे बेंच पर बैठा था। उसे चुपचाप बैठना आ गया था। जरा-सी भी हरकत करने पर टेलीस्क्रीन से पहरेदार चिल्लाना शुरू कर देते थे। परन्तु उसकी भूख बढ़ती जा रही थी। उसे रोटी के टुकड़े की जरूरत थी। उसे खयाल आया कि उसकी जेब में कुछ रोटी के टुकड़े पड़े हैं क्योंकि उसकी पतलून की जेब में रखी कोई चीज उसकी टांगों से लड़ रही थी। आखिरकार उसने भय छोड़कर रोटी के टुकड़े के लिए जेब में हाथ डाल दिया।

'स्मिथ,' तुरन्त ही टेलीस्क्रीन से आवाज आई, '६०७९ स्मिथ डब्ल्यू। कोठरी में जेब में हाथ डालना मना है।'

वह चुपचाप बैठ गया। यहां आने से पहले उसे कुछ समय के लिए हवालात में भी रखा गया था। उसे याद नहीं था कि उसे वहां कितनी देर रखा गया था। सम्भवतः कुछ घंटे, बिना घड़ी के समय का अन्दाज रना बड़ा कठिन था। दिन की रोशनी तक नहीं आने पाती थी। कोठरी मे काफी शोर था और अजब-सी बदबू आ रही थी। पहले ही जैसी कोठरी में अब भी उसे रखा गया था। परन्तु वह कोठरी बड़ी गन्दी थी और उसमें बराबर दस या पन्द्रह आदमी रहते थे। अधिकांश साधारण अपराधी थे, परन्तु कुछ राजनीतिक बन्दी भी थे। वह चुप हो दीवार का सहारा लेकर बेंच पर बैठ गया। उसके पास सटकर और भी गन्दे लोग बैठे थे। वह बड़ा भयभीत था। उसके पेट में दर्द था ही। उसे अपने आसपास के वातावरण मे कोई विशेष रुचि नहीं थी। परन्तु पार्टी-सदस्यो तथा अन्य साधारण बन्दियो के व्यवहार में बड़ी भिन्नता थी। पार्टी के बन्दी बड़े डरे-से थे, परन्तु साधारण अपराधी किसीकी कोई परवाह नही करते थे। वे अपराधी गारद के सिपाहियो को गालिया देते थे और जब उनकी चीज छीनी जाती तो वे ज़ोरों से लड़ भी पड़ते। जमीन पर अश्लील वाक्य लिखते थे। चोरी से लाया गया खाना खाते थे। पता नही वे उसे अपने कपडो में छिपाकर जाने किस प्रकार ले आए थे। यदि टेलीस्क्रीन से सिपाही शान्ति स्थापित करने की चेष्टा करते तो वे उनपर ही उल्टे चिल्ला पडते थे। यही नहीं, कुछ की तो सिपाहियों सें दोस्ती जान पडती थी। वे उन्हें उनके घर के नामो से बुलाते थे। दरवाज़े के छेद से सिगरेट लेने-देने की कोशिश भी करते थे। सिपाही भी इनके साथ अपेक्षाकृत अच्छा व्यवहार करते थे। मारपीट भी उतनी सख्ती से नहीं करते थे। इनमे से अधिकाश को बेगार कराने के लिए श्रम-शिविरो मे भेजा जाता था। शिविरों में यदि परिचय और पहुंच हो तो कोई दिक्कत नहीं होती थी। रिश्वत, पक्षपात, हर तरह की बेईमानी सभी कुछ चलता था। व्यभिचार और वेश्यागमन भी होता था। यही नही, आलुओ से शराब भी बनाई जाती थी। बदमाशों और हत्यारों को ऊंचे पदो पर रखा जाता था। वहीं श्रम-शिविरों में आभिजात्यवर्ग के अधिकारी होते थे। कठिन और गन्दे काम राजनीतिक बन्दियों को करने पड़ते थे।

हवालात में हर तरह के बन्दियों का आना-जाना बराबर जारी

और इस प्रकार टेलीस्क्रीन से डांट खाने का खतरा उठाएगा। हो सकता है कि एम्पिलफोर्थ के पास ब्लेड हो।

'एम्पिलफोर्थ !' उसने कहा।

टेलीस्क्रीन से कोई चिल्लाया नहीं। एम्पिलफोर्थ रुका। कुछ चौंका। धीरे-धीरे उसकी निगाह विन्स्टन पर रुकी।

'एह, स्मिथ,' उसने कहा, 'तुम भी यहां हो ?'

'तुम यहां कैसे लाए गए ?'

'सच यह है कि'—वह सामने की बेंच पर विन्स्टन की ओर मुंह करके बैठ गया। 'एक ही अपराध होता है—है न ?'

'क्या तुमने वह अपराध किया है ?'

'हां, लगता तो है।'

उसने अपनी कनपटियों पर हाथ रख लिया और कुछ सोचने लगा। ऐसा लगता था, वह कुछ याद कर रहा था।

'ये बातें हो जाती हैं,' उसने निरुद्देश्य कहना शुरू किया, 'हो ही जाती हैं। मेरी बेवकूफी थी, इसमें कोई शक नहीं। हम किपलिंग की कविताओं का संग्रह छाप रहे हैं। मैंने एक कविता के अन्त में गॉड शब्द रहने दिया। परन्तु मैं मजबूर था। मुझे रॉड से तुक मिलानी थी। इसके लिए भाषा में केवल बारह ही शब्द हैं। मैंने बड़ी कोशिश की और सिर मारा। कोई और तुक मिली ही नहीं।' उसके चेहरे का भाव बदल गया। क्षण-भर के लिए वह प्रसन्न-सा दिखाई पड़ा। उसका चेहरा एक अध्यापक के चेहरे की भांति चमक रहा था। बाल और मुंह धूलि-धूसरित होते हुए भी भाव स्पष्ट था।

उसने कहा, 'तुम्हारे दिमाग में कभी यह खयाल आया है कि अंग्रेजी काव्य के इतिहास के रूप को स्थिर करने में इस बात का बड़ा हाथ रहा है कि इस भाषा में तुकों की बड़ी कमी है।'

यह बात विन्स्टन के दिमाग में पहले कभी नहीं आई थी। वर्तमान परिस्थिति में उसे यह खयाल कोई बहुत दिलचस्प भी नहीं लगा।

'बता सकोगे, इस समय कितने बजे होंगे ?' उसने पूछा। एम्पिलफोर्थ फिर चौंक गया। 'ओह, इस बारे में तो मैंने सोचा ही नहीं। दो या शायद तीन दिन पहले पुलिस ने मुझे गिरफ्तार किया था।' इसके बाद उसने दीवार में चारों तरफ नजर डाली। वह खिड़की तलाश कर

रहा था। 'इस जगह दिन या रात होने से कोई अन्तर नहीं प
नहीं यहां वक्त कैसे जाना जा सकता है।'

कुछ समय वे इधर-उधर की बातें करते रहे। इसके बाद
टेलीस्क्रीन से किसीने चिल्लाकर उनसे चुप हो जाने के f
विन्स्टन हाथ पर हाथ रखकर चुप बैठ गया। एम्पिलफोर्
आराम से बैठ ही नहीं सकता। इसलिए वह कभी एक तरफ
लेकर तो कभी दूसरी तरफ से सहारा लेकर बैठ जाता था।
अन्तिम कोने पर जाकर बैठ गया। टेलीस्क्रीन से फिर आज्ञा
वह चुपचाप बैठ जाए। समय बीतता गया। बीस मिनट की
घण्टा—यह तय करना कठिन था। एक बार फिर बाहर से
आवाज आई। विन्स्टन के रोए खड़े हो गए। जल्दी, बहुत ज
पांच मिनट बाद ही उसे पता लग जाएगा कि उसकी भी बारी आ

दरवाजा खुला। कठोर चेहरे वाले अफसर ने प्रवेश कि
छोटे-से संकेत से उसने एम्पिलफोर्थ से कहा, 'कमरा नम्बर १।

एम्पिलफोर्थ सिपाहियों के बीच धीरे-धीरे चलने लगा।
परेशान जरूर था, परन्तु उसकी समझ में ज्यादा कुछ नहीं
था।

विन्स्टन को प्रतीत हो रहा था, बहुत समय गुजर गया है
पेट में फिर दर्द हो रहा था। उसका दिमाग एक ही जगह चक
रहा था। उसके रोए फिर खड़े हो गए। बाहर से जूतों की आव
आई। दरवाजा खुलते ही ठंडे पसीने की बदबू से कोठरी भ
पारसन्स अन्दर आ गया। वह खाकी पेंट और खाकी कमीज प

इस बार विन्स्टन अपने ही विचारों में खोया हुआ था। 'तुम
उसने कहा। पारसन्स ने विन्स्टन की ओर देखा। इस निगाह
कोई दिलचस्पी थी और न आश्चर्य ही। केवल दुःख और पीड़ा
वह इधर-उधर टहलने लगा। उससे चुपचाप नहीं बैठा जा र
हर बार जब भी वह घुटने सीधे करता, वे कांपने लगते।
आंखें पूरी तरह खुली थीं। वह एक दिशा में ही घूरता जा रह
वह कहीं दूर देख रहा था। उसका ध्यान बीच की तरफ जाता ह
था।

'तुम्हें क्यों पकड़ा गया?' विन्स्टन ने पूछा।

'विचार-अपराध।' पारसन्स ने कहा। उसके कंठ में अपने अपराध के लिए पूर्ण स्वीकारोक्ति का भाव था। एक प्रकार की बस्तता भी थी। कुछ देर उसने विन्स्टन की ओर देखा और फिर उत्सुकतापूर्वक कहने लगा, 'वे मुझे गोली तो नहीं मारेंगे न, तुम्हारा क्या खयाल है? वे शायद गोली तब तक नहीं मारते जब तक कोई यथार्थतः राजद्रोह का काम न किया हो। विचारों को दिमाग में आने से कोई नहीं रोक सकता। मैं यह तो जानता हूं कि वे सबकी बात पूरी तरह सुनते हैं। ओह, मैं तो इसीके आसरे हूं। वे मेरे बारे में अन्य बातें तो रिकार्ड से जान लेंगे। नहीं क्या? तुम तो जानते ही हो मैं कैसा आदमी था। अपनी स्थिति में कोई खराब नहीं था। मुझमें अक्ल तो कोई ज्यादा नहीं थी लेकिन काम करने का उत्साह था। मैंने पार्टी की अधिक से अधिक सेवा करने की कोशिश की है। नहीं क्या? शायद पांच साल की कैद की सजा मुझे मिल जाए और मैं छूट जाऊं। तुम्हारा क्या खयाल है? या शायद, दस वर्ष के लिए जेल भेजा जाऊं। मुझ जैसा आदमी तो श्रम-शिविर में भी काफी लाभदायी सिद्ध होगा। एक बार के गलती के लिए वे मुझे गोली तो नहीं मार देंगे?'

'क्या तुम दोषी हो?' विन्स्टन ने कहा।

'बेशक। मैं मुजरिम हूं,' टेलीस्क्रीन की ओर दासभाव से देखते हुए पारसन्स ने कहा। 'पार्टी कभी किसी निर्दोष व्यक्ति को तो पकड़ती ही नहीं। क्यों?' उसका मेंढक-सा चेहरा अब शान्त हो गया था। कुछ पवित्रता का-सा भाव भी उसके मुंह पर आ गया था। 'विचार-अपराध बड़ी भयानक चीज है। वह आपके न जानते हुए दिमाग में घुस सकता है। जानते हो, मैं इसके चक्कर में कैसे आया? सोते में। बिलकुल सत्य है। मैं अपने काम में लगा था और मुझे पता भी नहीं कि अपराधपूर्ण विचार कब मेरे दिमाग में घर कर गए। इसके बाद मैंने सोते में बड़-बड़ाना शुरू कर दिया। मालूम है लोगों ने मुझे क्या कहते सुना?'

वह इस प्रकार निढाल हो गया जैसे डाक्टरी कारणों से कुछ अश्लील बात कहने को बाध्य हो गया हो।

'बड़े भाई का नाश हो!—हां! यही मैंने कहा। लगता है कि मैंने यह बात कई बार कही। मैं खुश हूं कि यह बात अन्य लोगों तक पहुंचने के पूर्व ही मुझे पकड़ लिया गया। जानते हो, मैं उनके सामने क्या

कहूंगा ? मैं कहूंगा—धन्यवाद, मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आपने मुझे आगे अपराध करने से बचा लिया।'

'तुम्हें पकड़वाया किसने ?'

'मेरी छोटी लड़की ने।' पारसन्स ने जरा गर्वपूर्वक कहा, 'उसने मुझे चाबी वाले छेद से बड़बड़ाते हुए सुन लिया। सुनने के बाद दूसरे दिन ही उसने पुलिस के गश्ती दस्ते को इसकी सूचना दे दी। सात साल की बच्ची के लिए यह कोई छोटी बात नहीं है। मुझे कोई शिकायत नहीं है। सच तो यह है कि मुझे अपनी लड़की पर बड़ा अभिमान है। इससे प्रकट होता है कि मैंने उसका लालन-पालन ठीक किया।' वह फिर कुछ देर एक कोने से दूसरे कोने तक कांपता हुआ टहलता रहा। उसने कई बार शौच के पात्र को देखा। इसके बाद उसने हाफपैंट उतार दिया।

'भाई, माफ करना,' उसने कहा, 'मैं अब और अधिक न रोक सकूंगा। मुझे बड़ी ज़ोर से हाजत हो रही है।'

वह कमोड पर बैठ गया। विन्स्टन ने अपना मुह हाथों से छिपा लिया।

'स्मिथ,' तुरन्त ही टेलीस्क्रीन से आवाज़ आई, '६०७९ स्मिथ डब्लू ! अपने मुह पर से हाथ हटाओ। मुह को इस तरह छिपाना मना है।' विन्स्टन ने अपने हाथों को हटा लिया। पारसन्स के जाने के बाद पता लगा कि पानी नहीं आता जिससे कमोड की सफाई होती है। फलतः घण्टों बदबू आती रही। और भी अपराधी इसी रहस्यमय तरीके से आए और चले गए। एक औरत को जब बतलाया गया कि उसे १०१ नम्बर के कमरे में ले जाया जाएगा, तो वह बुरी तरह कांप गई और उसके चेहरे का रंग एकदम बदल गया। समय बीत रहा था। यदि वह सुबह लाया गया होगा तो दोपहर हुई होगी और यदि तीसरे पहर लाया गया होगा तो आधी रात होगी। विन्स्टन के ठीक सामने एक ऐसा आदमी बैठा था, जिसके ठोड़ी थी ही नहीं। उसके दांत दिखाई पड़ते थे और वह मासूम चूहे या बन्दर-सा लगता था। उसके गाल इतने फूले हुए थे कि विश्वास नहीं होता था कि उनमें खाने की कोई चीज़ नहीं भरी है। वह अपनी छोटी-छोटी आंखों से बारी-बारी से हरएक को देख रहा था। यदि किसीकी आंख उससे मिल जाती थी तो वह अपना मुंह तुरन्त फेर लेता था।

दरवाज़ा खुला। एक और बन्दी लाया गया। उसे देखते ही एक बार तो विन्स्टन का खून बर्फ की तरह जम गया। वह बहुत ही साधारण व्यक्ति था। इंजीनियर या कोई टेक्नीशियन-सा लगता था। लेकिन उसका चेहरा देखने लायक था। बिलकुल मुर्दों जैसी खोपड़ी लगती थी। मुंह इतना पतला था कि होंठ तथा आंखें अनुपात से बड़ी दिखलाई पड़ती थी। आंखों से हत्यारापन प्रकट होता था और यह भी लगता था कि उसके हृदय में ऐसी घृणा बस गई जो कभी खत्म नहीं हो सकती है।

वह विन्स्टन से कुछ हटकर बेंच पर बैठ गया। विन्स्टन ने उसकी तरफ दुबारा नहीं देखा। परन्तु उस आदमी का चेहरा विन्स्टन के दिमाग से एकदम कभी नहीं निकल पाया। उसे ऐसा लग रहा था कि वह उसकी आंखों में आंख डालकर देख रहा है। अकस्मात् उसने अनुमान किया कि मामला क्या है। उस आदमी की भूख से जान निकली जा रही थी। यही विचार सब बन्दियों के मन में उत्पन्न हुआ। सब लोग अपनी-अपनी जगह से हिल गए। बिना ठोडी के आदमी ने मुर्दे की खोपड़ी जैसे आदमी को भी देखा। इसके बाद उसने अपना मुंह फेर लिया। वह अपनी जगह पर ही बार-बार आसन बदलने लगा। आखिरकार विन्स्टन उठकर खड़ा हो गया। टहलते हुए जाकर उसने अपनी जेब से रोटी का एक टुकड़ा निकालकर उस मुर्दे की शकल वाले आदमी को दिखलाया।

टेलीस्क्रीन से भयानक शोर हुआ। गोल मुंह वाला आदमी एकदम घूम गया और उसने विन्स्टन के हाथ से रोटी छीन ली। जिस आदमी को डबलरोटी दिखलाई गई थी उसने अपना हाथ पीछे कर लिया। इस तरह जैसे उसने रोटी लेने से इन्कार कर दिया हो।

'बमस्टीड,' टेलीस्क्रीन वाली आवाज़ ने कहा, '२७७३, बमस्टीड जे। वह रोटी का टुकड़ा छोड़ दो!!'

गोल मुंह वाले आदमी ने रोटी का टुकड़ा गिरा दिया।

'जहां हो, वहीं खड़े रहो!' आवाज़ ने कहा, 'दरवाज़े की ओर मुंह कर लो! ज़रा भी मत हिलो!'

बिना ठोडी वाले आदमी ने आज्ञा का अक्षरशः पालन किया। उसके गाल कांप रहे थे और वह अपने को नियन्त्रित नहीं रख पा रहा था। दरवाज़ा आवाज़ करता हुआ खुल गया। अफसर के साथ कु

सशस्त्र सिपाही भी कोठरी में घुस आए। घुसते ही अफसर ने पूरी ताकत से एक घूसा बमस्टीड के मुंह पर मारा। घूंसे के प्रहार से वह बिल्कुल जमीन पर गिर गया। और उसका शरीर धक्के से पाखाने के बरतन से जा लड़ा। वह कुछ क्षण के लिए मूर्च्छित हो गया और जहां का तहां पड़ा रहा। उसके मुंह और नाक से खून की धारा बह निकली थी। उसे केवल गरगराहट ही आ रही थी शायद वह आवाज भी बेहोशी में ही निकल रही थी। उसके बाद वह घुटनों के बल उठकर बैठने लगा। खून और लार के साथ उसके सारे दांत बाहर आ गए।

सब बंदी चुपचाप बैठे थे। वे हाथों पर हाथ रखे थे। मोटा आदमी अपनी जगह पर आकर बैठ गया। उसका मुंह काले फल की तरह सूज गया था और वह पहचाना भी नहीं जा रहा था। एक तरफ का निकला हुआ मांस काला पड़ा जा रहा था। मुंह के नाम पर चेहरे में केवल एक छेद रह गया था। कभी-कभी उसके कपड़ों पर एकाध बूंद खून गिर जाता था।

दरवाजा फिर खुला। मुर्दे जैसी खोपड़ी वाली शकल के आदमी की ओर इशारा करते हुए अफसर ने कहा, 'कमरा नं० १०१।'

विंस्टन ने चीख की आवाज सुनी। वह आदमी कूदकर फर्श पर जा पड़ा था और घुटनों के बल बैठ गया था। उसने दोनों हाथों की मुट्ठियां बंद कर रखी थीं।

'कॉमरेड, अफसर,' उसने चिल्लाकर कहा, 'मुझे वहां मत ले चलो। क्या सब कुछ आपको बता नहीं दिया, अब और क्या आप जानना चाहते हैं? ऐसी कोई बात नहीं है, जिसे मानने के लिए मैं तैयार नहीं। मुझे बताओ, क्या बात कहनी है मैं कह दूंगा, या लिख लो—मैं दस्तखत कर दूंगा—कुछ भी लिख लो। पर १०१ नम्बर में मत ले चलो।'

'कमरा नम्बर १०१।' अफसर ने फिर दोहराया।

उस आदमी का चेहरा पहले ही पीला पड़ा था और अब तो वह ऐसा विकृत हो गया था कि विंस्टन को विश्वास नहीं हो रहा था कि किसी आदमी का चेहरा इतना भी बिगड़ सकता है। निश्चित रूप से उसके चेहरे का रंग हलका हरा हो गया था।

वह फिर चीखा, 'और चाहे जो करो। तुम मुझे हफ्तों से भूखा मार रहे हो। मुझे मर जाने दो। मुझे गोली मार दो। फांसी पर लटका दो।

मुझे २५ साल के लिए जेल भेज दो। क्या तुम चाहते हो कि मैं किसी और आदमी का नाम ले दूं। तुम वह नाम बतलाओ, मैं उसका नाम भी ले दूंगा। मेरी पत्नी है। तीन बच्चे हैं। उनमें सबसे बड़ा छः साल का है। आप सबके गले मेरे सामने काट डालिए। मैं खड़ा-खड़ा देखता रहूंगा। कुछ न बोलूंगा। लेकिन १०१ नम्बर के कमरे में मत ले चलिए।'

'कमरा नं० १०१।' अफसर ने फिर दोहराया।

उस आदमी ने और लोगों की तरफ देखा। उसकी आंखें बिना ठोढ़ी वाले आदमी पर ठहर गईं। उसने अपना दुर्बल हाथ उठाकर उसकी तरफ इशारा किया।

'यह है वह आदमी, जिसे आपको ले जाना चाहिए, मुझे नहीं।' उसने चीखकर कहा, 'आपने नहीं सुना कि मुंह पर घूंसा लगने के बाद यह क्या कह रहा था। मुझे मौका दीजिए, मैं सब कुछ बता दूंगा कि क्या कह रहा था। यही पार्टी के विरुद्ध है, मैं नहीं।'

दो मजबूत सिपाही उसे बगल में पकड़कर उठा लेने के लिए झुक गए। लेकिन तभी वह फर्श पर धड़ाम से गिरकर लेट गया। उसने बेंच के लोहे का एक पाया पकड़ लिया। सिपाहियों ने उसे घसीटा, लेकिन वह जितनी ताकत से उस लोहे की सलाख को पकड़े था उसे देखकर आश्चर्य हो रहा था। शायद कोई बीस सेकेंड चली होगी। और तब दूसरी तरह की दर्दभरी चीख उसके गले से निकली। एक सिपाही ने बूट से उसके हाथ में इतने जोरों से ठोकर मारी कि एक हाथ की उंगलियों की हड्डियां टूट गई थीं। अब उन्होंने उसके पैर पकड़कर उसे घसीट लिया।

'कमरा नं० १०१।' अफसर ने कहा।

वह आदमी लड़खड़ाता हुआ सिपाहियों के सहारे बाहर चल गया। उसका सिर एक तरफ झुक गया था। वह अपने कुचले हाथ को सहला रहा था। उसका प्रतिरोध समाप्त हो गया था।

बहुत समय गुजर गया। यदि उस आदमी को सिपाही आधी रात को ले गए थे तो सुबह हो गई थी और सुबह ले गए थे तो दोपहर बाद का समय हो गया था। विन्स्टन अकेला था और घंटों अकेला रहा था। पतली बेंच पर बैठे-बैठे जब कमर दुख जाती थी तो वह खड़ा हो जाता

उसे ऐसा लग रहा था कि वह स्ट्रेचर पर पड़ा है। अन्तर था तो केवल यह कि जमीन से जरा अधिक ऊंचा था। वह इस तरह बंधा था कि हिल भी नहीं सकता था। उसके मुंह पर साधारण से अधिक तेज प्रकाश पड़ रहा था। ओ'ब्रायन उसके बगल में खड़ा था और बार-बार ध्यान से देख रहा था। दूसरी ओर एक आदमी सफेद कोट पहने खड़ा था। उसके हाथ में इन्जेक्शन की सुई थी।

आंखें खुलने के बाद भी आसपास की चीजें देखने में और समझने में उसे कुछ समय लगा। उसे लग रहा था कि वह इस कमरे में दूसरी दुनिया से तैरता हुआ आ गया है। वह दुनिया जहां से वह आया है पानी के नीचे है। वह कब तक उस दुनिया में रहा उसे ज्ञात नहीं था। गिरफ्तारी के बाद से उसने दिन या रात के दर्शन नहीं किए। इसके अलावा उसकी याददाश्त भी काम नहीं दे रही थी। सोते समय भी जो चेतना आदमी में रहती है, वह भी खत्म हो गई थी और शायद दुबारा शुरू हुई थी। सुप्त चेतना के लम्बे भाग की कोई याद उसे नहीं रह गई थी।

कोहनी पर पहला कोड़ा पड़ने के बाद वह दुःस्वप्न शुरू हुआ था। बाद में उसने अनुभव किया कि उसके साथ जो हुआ वह साधारण और हर बंदी के साथ की जाने वाली प्रारम्भिक पूछताछ थी। कितनी बार वह पीटा गया, कितनी देर पीटा गया, यह सब उसे कुछ भी याद नहीं था। उसे मारने के लिए हमेशा पांच या छः काली वर्दीधारी सिपाही जुटते थे। कभी घूंसों से, कभी कोड़ों से, तो कभी लोहे के डंडे या नालदार जूतों से उसे पीटा जाता था। वह पशु की तरह फर्श पर लज्जा का परित्याग कर लोटा-लोटा फिरता था। कभी वह ठोकरें बचाने की कोशिश भी करता था। परन्तु इससे वह और मार खाता था। कभी पसली में, कभी पेट में, कभी कोहनी और कभी गुप्त अंगों पर ठोकरें मारी जाती थीं। और यह क्रम कभी-कभी तब तक चलता जब तक वह बेहोश नहीं हो जाता था। कभी-कभी तो पिटाई आरम्भ होने के पहले वह दया की भीख मांगने लगता था। वह घूंसा देखते ही वास्तविक और ... स्वीकार करने लगता था। कभी वह तय कर लेता

तो वे उसे फिर सिपाहियों के हवाले कर देने की धमकी देते थे। कभी-कभी उनका स्वर अकस्मात् बदल जाता। वे उसे कॉमरेड कहकर पुकारते। उससे वे इंगसोश और बड़े भाई के नाम पर अपीलें करते। खेदपूर्वक उससे पूछते कि क्या वह अब भी पार्टी के प्रति वफादार हुआ है या नहीं और अपने पाप का प्रायश्चित्त उसने कर लिया है या नहीं। घंटों के प्रश्नों के बाद उसमें जरा-सा भी साहस नहीं रह जाता था और उत्तर में केवल उसकी आंखों में आंसू भर आते और अलबार बह निकलती। वह ऐसी सारी बातें तुरन्त स्वीकार कर लेता था जो वे उससे मनवाना चाहते थे। अब उसका काम यह था कि पहले पता लगा लेना कि वे क्या चाहते हैं और फिर तुरन्त जो कुछ वे कहें स्वीकार कर लेना और दस्तखत कर देना, जिससे डाट-फटकार शुरू न होने पाए। उसने यह स्वीकार कर लिया था कि वह कई प्रमुख पार्टी-सदस्यों की हत्याएं कर चुका है। राजद्रोह-सम्बन्धी परचे उसने बांटे हैं। उसने सार्वजनिक धनराशि में से गबन किया है। सैनिक गुप्त रहस्यों को बेचा है। वह सन् १९६८ से ईस्ट एशियाई सरकार से गुप्तचर का काम करने के लिए रुपया पाता रहा है। उसने यह भी मान लिया कि वह धार्मिकता में विश्वास करता है। पूंजीवाद का प्रशंसक है। व्यभिचारी है। उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि उसने अपनी पत्नी की हत्या की है। हालांकि वह भी जानता था और उसके प्रश्नकर्ता भी जानते थे कि उसकी पत्नी अब भी जिन्दा है। उसने यह भी स्वीकार किया था कि वह वर्षों गोल्डस्टीन के सम्पर्क में रहा है और उसके गुप्तदल का सदस्य है। उसने उन सब आदमियों के भी नाम सदस्यों के रूप में ले दिए थे जिन्हें वह जानता था।

इसके अलावा उसे कुछ और भी बातें याद थीं। पर उनका एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं था। यह याद ठीक इस तरह की थी जैसे कोई चित्र हो जो चमक रहा हो परन्तु उसके चारों ओर का और पास का सारा हिस्सा काला हो।

वह अपने तख्त से आधा उठ गया क्योंकि उसे लग रहा था कि उसके कानों में ओ'ब्रायन की आवाज पड़ी है। ये शब्द उसके कानों में पड़े : 'विन्स्टन, चिन्ता मत करो, तुम मेरे पास हो। सात साल से मैं तुमपर निगाह रखे हूं। अब मौका आ गया है। मैं तुम्हें बचा लूंगा। मैं

तुम्हें बिलकुल ठीक कर दूंगा।' उसे यह ध्यान नहीं कि वह ओ'ब्र
ही आवाज थी। लेकिन उसे इतना खयाल जरूर है कि यह स्वर
मिलता-जुलता था, जिसने यह कहा था कि 'अब हम ऐसी जगह
जहां कभी अंधेरा नहीं होना होगा।' पहले उसकी आंखों के आगे
छाया रहा। उसके बाद कोठरी या कमरे का दृश्य स्पष्ट हो गया
पीठ के बल लेटा था। जरा भी हिल-डुल नहीं सकता था। हा
यह बंधा था। उसकी खोपड़ी का पिछला हिस्सा तक बंधा था। ओ
गम्भीरता से उसके चेहरे को देख रहा था। उसके हाथों के नी
डायल था जिसमें अंक लिखे थे। ऊपर एक लिवर था।

'मैंने तुमसे कह दिया था कि यदि हम मिले तो हमारे मिलने
जगह यही होगी।' ओ'ब्रायन ने कहा।

बिना किसी चेतावनी के ओ'ब्रायन का हाथ जरा-सा हिला
उसके शरीर में घोर पीड़ा की एक लहर दौड़ गई। भयानक दर्द
उसके शरीर को तोड़ा जा रहा था। हर जोड़ खींच-खींचकर अ
किया जा रहा था। उसकी रीढ़ की हड्डी निकली आ रही थी। इ
दांत दबा लिए और ज़ोर-ज़ोर से सांस लेने लगा, जिससे वह जि
सम्भव हो चुप रह सके।

लिवर को ओ'ब्रायन ने ढीला छोड़ दिया। पीड़ा की लहर जित
शीघ्रता से आई थी उतनी ही जल्दी गायब भी हो गई।

'यह चालीस था,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'देख लो, इस डायल पर
तक नम्बर लिखे हैं। अब यह बात हमेशा याद रखना कि मैं जिस क्ष
चाहूंगा उसी क्षण मनचाही मात्रा में कष्ट दे सकूंगा। अगर तुम मु
बोले, या किसी भी कारण तुमने ठीक उत्तर न दिया या तुम्हारे उत्त
तुम्हारे सामान्य बौद्धिक स्तर से नीचे हुए तो समझ लेना तुम एकद
दर्द के मारे चीख उठोगे। समझ गए न?'

'हां!' विन्स्टन ने उत्तर दिया।

ओ'ब्रायन की कठोरता कम हो गई। उसने अपना चश्मा कुछ
सोचते हुए ठीक कर लिया। एक-दो कदम इधर-उधर टहला। जब वह
बोला तो उसकी वाणी में कोमलता थी, धीरज था। वह डाक्टर,
अध्यापक या पादरी-सा लग रहा था—जो बात को समझाना चाहता
है, शारीरिक दण्ड नहीं देना चाहता।

'तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारी खराबी क्या है ? तुम
न पहले से अपनी त्रुटि जानते रहे हो। तुम पागल हो। तुम्हारी
स्मरणशक्ति में दोष है। तुम यथार्थ घटनाओं को याद रखने की बजाय
र बातों को याद रखते हो जो कभी नहीं हुईं। सौभाग्यवश हमारे पास
पका इलाज है। तुम स्वयं इसका इलाज इसलिए नहीं कर सके क्योंकि
मने स्वयं ऐसा करना पसन्द नहीं किया। तुम्हें अपनी इच्छा-शक्ति
गम में लानी चाहिए थी। परन्तु तुमने ऐसा नहीं किया। उदाहरण के
लए एक प्रश्न मैं तुमसे पूछता हूं। आजकल ओशनिया किससे युद्ध कर
रहा है ?'

'जब मैं पकड़ा गया था तब ओशनिया की लड़ाई ईस्ट एशिया से
चल रही थी।'

'ईस्ट एशिया से ! ठीक। और ओशनिया की लड़ाई हमेशा से ईस्ट
एशिया से ही रही है। है न ?'

विन्स्टन ने सांस ली। वह बोलना चाहता था लेकिन बोल नहीं
सका। उसकी आंखें डायल पर थीं। वह उन्हें वहां से हटा नहीं पा रहा
था।

'सच बोलना। मुझे वही बतलाओ जो तुम ठीक समझते हो, जो
तुम्हें याद हो।'

'ईस्ट एशिया से लड़ाई होने की घोषणा के पूर्व हमारी उससे दोस्ती
थी। युद्ध यूरेशिया के विरुद्ध चल रहा था। वह चार साल चला।
इसके पूर्व ईस्ट एशिया के विरुद्ध चल रहा था। वह चार साल चला।'

'दूसरा उदाहरण,' उसने कहा, 'कुछ साल पूर्व तुम्हें एक और भ्रम
हुआ था। तुम समझने लगे थे कि जोन्स, आरोन्सन और रदरफोर्ड,
जो पहले पार्टी के सदस्य थे और जो गद्दारी और तोड़-फोड़ के काम
करने के लिए अपने बयानों के बाद फांसी पर चढ़ा दिए गए थे, वस्तुतः
अपराधी नहीं थे। तुम्हारा ख्याल है कि तुमने ऐसा सबूत देखा था, जो
गलत नहीं हो सकता। तुमने एक फोटोग्राफ की कल्पना कर ली थी;
तुम्हारा ख्याल है कि वह तुम्हारे हाथ में भी रहा है। वह फोटोग्राफ
ऐसा था।'

ओ'ब्रायन के हाथ में समाचारपत्र की कटिंग थी। इसमें वही फोटो
थी जो विन्स्टन ने देखी थी। कोई पांच सेकेंड वह फोटो को देखता

रहा। यह वही फोटो थी जो किसी पार्टी समारोह में ग्यारह वर्ष पूर्व न्यूयार्क में ली गई थी। अखबार में छपी थी और फिर उस सम्करण की समस्त प्रतियां नष्ट कर दी गई थीं। एक क्षण वह और फोटो देखता रहा। इसके बाद वह फोटो उसकी आंखों के सामने से हटा दी गई। उसने अपने शरीर के ऊपरी भाग को ऊंचा करने की कोशिश की, किन्तु घोर पीड़ा के अलावा उसके हाथ और कुछ न लगा। किसी भी दिशा में जरा भी हिलना सम्भव नहीं था।

'है तो यह !' वह चिल्लाया।

'नहीं।' ओ'ब्रायन ने कहा।

वह कमरे के दूसरी ओर गया। वहां भट्ठी वाला छेद सामने की दीवार में था। ओ'ब्रायन ने उस छेद का मुंह खोला। वह फोटो वाला कागज उसने भट्ठी में डाल दिया। और वह टुकड़ा गरम हवा के झोंके से बिना किसी के देखे अपने आप भट्ठी में जलने के लिए उड़ता चला जा रहा था। ओ'ब्रायन लौट आया।

उसने कहा, 'वह फोटो नहीं है। कभी नहीं थी।'

'लेकिन वह है, वह थी। वह स्मृति में है। मेरी स्मृति में। आपकी स्मृति में। आपको याद है।'

'मुझे याद नहीं है। ओ'ब्रायन ने कहा।

विन्स्टन का दिल डूब गया। यह द्वैध विचार था।

ओ'ब्रायन उसकी ओर कुछ सोचता हुआ देख रहा था। वह ऐसा लग रहा था कि कोई मास्टर है जो शरारती किन्तु प्रतिभाशाली बच्चे को पढ़ा रहा है। 'अतीत के नियन्त्रण के संबंध में पार्टी का नारा है। चाहो तो उसे दोहरा दो,' ओ'ब्रायन ने कहा।

'पार्टी यथार्थ का नियन्त्रण करती है, वहीं भविष्य को भी नियन्त्रित करती है। जो वर्तमान को नियन्त्रित कर सकता है वह अतीत को भी अपने नियंत्रण में रख सकता है।' विन्स्टन ने आज्ञाकारी की भांति नारे को दोहरा दिया।

'जो वर्तमान को नियन्त्रित कर सकता है, वह अतीत को भी नियंत्रित कर सकता है।' बात का समर्थन करते हुए ओ'ब्रायन ने सिर हिलाया। 'क्या विन्स्टन, तुम्हारा यह भी मत है कि अतीत का कोई यथार्थ अस्तित्व है ?'

विन्स्टन फिर अपनी घोर असहाय स्थिति अनुभव करने लगा। उसकी आंखें डायल की ओर चली गईं। वह नहीं जानता था कि हा ना कौन-सी बात कहने से वह डायल से बच सकता है। वह यह ही जानता था कि कौन-सा उत्तर ठीक है।

ओ'ब्रायन थोड़ा-सा हंस दिया। 'तुम अध्यात्मवादी नहीं हो, विन्स्टन,' उसने कहा, 'मैं प्रश्न और भी स्पष्ट ढंग से पूछता हूं। क्या अतीत कहां या कहीं भी था और वह अब भी घट रहा है?'

'नहीं।'

'तो अतीत कहां है, यदि है तो?'

'रिकार्डों में—लिखा हुआ।'

'रिकार्डों में—और···?'

'दिमाग में। मानवीय स्मृति में।'

'स्मृति में। ठीक। तो पार्टी सारे रिकार्डों को नियंत्रित करती है और हम स्मृति को अपनी मुट्ठी में रखते हैं। ऐसी दशा में अतीत हमारी मुट्ठी में हुआ या नहीं?'

'लेकिन आप अन्य लोगों को याद रखने से कैसे रोक सकते हैं?' विन्स्टन ने चीखकर कहा। वह क्षण-भर के लिए डायल भूल गया 'अतीत की बातें तो अपने आप याद रहती हैं। वह आदमी के बस के बाहर है। स्मृति-शक्ति आप कैसे नियंत्रित करेंगे? आप मेरी स्मृति कहां नियंत्रित कर पाए हैं?'

ओ'ब्रायन का मुंह कठोर हो गया। उसने अपना हाथ डायल प से लिवर पर रखा।

'उल्टी बात है,' उसने कहा, 'तुमने स्वयं अपनी स्मृति को अप नियंत्रण में नहीं रखा है। इसलिए तुमको यहां आना पड़ा है। तुम यह क्यों लाए गए? इसलिए कि तुमने आत्मनियंत्रण नहीं किया। तु समझते हो यथार्थता कोई भौतिक, बाह्य और ठोस चीज है। परन विन्स्टन, यथार्थता केवल मानव-मस्तिष्क में रह सकती है। अन्यत्र क भी नहीं। सो भी व्यक्ति के मस्तिष्क में नहीं, जो गलती कर सकता बल्कि पार्टी के मस्तिष्क में। पार्टी का मस्तिष्क सामूहिक है, अनश्व है। यथार्थता को केवल पार्टी की दृष्टि से ही देखा जा सकता है अन्यथा उसका देखना असम्भव है। यह तथ्य है जिसे तुम्हें सीखन

कर बैठा है। शायद कुछ सेकेण्डों के लिए वह बेहोश हो गया था। जिन पट्टियों से वह बंधा था वे भी ढीली कर दी गई थीं। उसका सारा शरीर ठंडा था। परन्तु वह बुरी तरह कांप रहा था। उसके दांत बज रहे थे। आंसू गालों पर बह रहे थे। कुछ क्षण के लिए वह बच्चों की तरह ओ'ब्रायन से चिपक गया। हंसने की बात थी। ओ'ब्रायन भी उसे थपथपा रहा था। उसको यह लग रहा था कि ओ'ब्रायन ही उसका रक्षक है। दर्द कहीं बाहर से मिला था। उसका कारण ओ'ब्रायन नहीं था। ओ'ब्रायन उसे बचा रहा था।

'तुम बहुत धीरे-धीरे सीखते हो,' ओ'ब्रायन ने जरा कोमलता से कहा।

'मैं क्या करूं तो ?' वह बड़बड़ाया, 'मैं जब अपने सामने दो और दो चार देख रहा हूं तो पांच कैसे कह दूं ?'

'कभी-कभी, विन्स्टन। कभी-कभी वे पांच होते हैं और कभी-कभी तीन। कभी-कभी वे तीन, चार, पांच एकसाथ होते हैं। तुम्हें और प्रयत्न करना होगा।'

विन्स्टन को उसने फिर लिटा दिया। उसके हाथ-पैर फिर शिकंजे में कसे गए। लेकिन दर्द नहीं था। कांपना भी रुक गया था। वह कमजोरी अनुभव कर रहा था। उसका सारा शरीर अब भी ठंडा पड़ा था। ओ'ब्रायन ने सफेद कोट वाले आदमी को इशारा किया। वह उस सारे काण्ड को निश्चल खड़ा हो देख रहा था। वह नीचे झुक गया। उसने समीप आकर विन्स्टन की आंखों को देखा। नाड़ी देखी। उसकी छाती में अपने कान लगाए। इधर-उधर अंगुलियों से बजाकर देखा। फिर ओ'ब्रायन की ओर देखकर सिर हिला दिया।

'फिर,' ओ'ब्रायन ने कहा।

विन्स्टन के सारे शरीर में फिर पीड़ा की लहर दौड़ गई। सुई अवश्य ही सत्तर या पचहत्तर पर होगी। इस बार उसने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं। अब उसे तब तक किसी तरह जीवित ही रहना था जब तक दर्द का यह दौर बीत न जाए। अब उसने इसकी भी फिक्र छोड़ दी कि वह चीख रहा है या नहीं। दर्द फिर गायब हो गया। लिवर ढीला कर दिया गया था। उसने आंखें खोल लीं।

'कितनी अंगुलियां हैं विन्स्टन ?'

'चार। मैं पांच देखने की कोशिश करूंगा।'

'तुम मुझे विश्वास दिला रहे हो या स्वयं पांच देखने की कोशि करोगे ?'

'मैं स्वयं पांच देखने की कोशिश करूंगा।'

'फिर।'

इस बार सुई फिर अस्सी या शायद नब्बे तक चली गई थ विन्स्टन को कभी-कभी याद आ जाता था कि दर्द क्यों हो रहा है अंगुलियों का जंगल उसके सामने नाच रहा था। असंख्य अंगुलिय पेड़ों की भांति उसकी आंखों के सामने आ-जा रही थीं। उसने फि आंखें बन्द कर लीं।

'कितनी अंगुलियां हैं विन्स्टन ?'

'मैं नहीं जानता। लेकिन यदि तुमने फिर कसा तो अब की बार मर ही जाऊंगा।'

'बेहतर।'

विन्स्टन की बांह में इन्जेक्शन की सुई घुस गई। उसी सम विन्स्टन के सारे शरीर में विश्रामदायक उष्णता की लहर दौड़ गई। आधा दर्द जा चुका था। उसने आंखें खोलीं और ओ'ब्रायन की ओर कृतज्ञता से देखा।

'तुम जानते हो, विन्स्टन, इस समय कहां हो ?'

'शायद प्रेम मंत्रालय में। यह मेरा अनुमान है।'

'यहां हम क्यों लाते हैं लोगों को ?'

'उनसे उनके अपराध स्वीकार कराने को।'

'नहीं, यह कारण नहीं है। और सोचो।'

'उनको सजा देने के लिए।'

'नहीं !' ओ'ब्रायन असाधारण रूप से चिल्ला पड़ा। उसका चेहरा क्रोध से लाल और कठोर हो गया। 'नहीं, केवल अपराध बुबूल करवाने और सजा देने के लिए नहीं। मैं यह बतलाऊं कि हम तुम्हें यहां क्यों लाए हैं। तुम्हारा इलाज करने। तुम्हें स्वस्थ बनाने। क्या तुम जानते हो, विन्स्टन, यहां जो आता है, वह हमारे हाथ से बिना अच्छा हुए नहीं जाता ? हम अपने दुश्मनों को नष्ट नहीं करते, हम उन्हें हैं।'

ओ'ब्रायन मुड़ गया। एक या दो कदम आगे गया। इसके बाद
र वह फिर बोला तो ऐसा लगा कि ओ'ब्रायन का क्रोध काफी कम
। गया है :

'सबसे पहली बात तो तुम यह समझ लो कि यहां कोई शहीद
नहीं होता। तुमने शायद वे किस्से पढ़े होंगे जिनमें पादरी लोगों क
यन्त्रणा देते थे। यन्त्रणा का यह ढंग, मध्ययुग में था। वह सफल न
हुआ। एक नास्तिक जलाया गया परन्तु उसकी जगह हजारों पैदा
गए। क्यों ? ऐसा क्यों हुआ ? उसका कारण यह था कि पादरियों
न्यायालय खुले में विरोधियों को मारता था। उन्हें उस समय मार
था जब वे लोग अपने कर्मों पर पश्चात्ताप तक करने को तैयार न
होते थे। लोग अपने विश्वास का परित्याग नहीं करते थे और मर
थे। नतीजा यह होता था, जो मरता वह शहीद हो जाता था,
लोग पादरियों को धिक्कारते थे। बीसवीं शताब्दी में तानाशाह इ
जर्मन नाज़ियों और रूसी साम्यवादियों का नाम लिया जा सकता
रूसियों ने साम्यवाद-विरोधियों को मध्ययुग के पादरियों से कहीं अ
निर्दयता से दबाया। वे यह जान गए थे कि लोगों को शहीद नहीं
दिया जाए। जिनको वे पकड़ते थे और जिनपर मुकदमा चल
उनको सार्वजनिक रूप से लांछित और अपमानित पहले कर दे
थे उनको अकेले में तब तक बन्द रखने और तब तक यन्त्रणाएं
जब तक वे रो-रोकर अपने सारे अपराध स्वीकार नहीं कर
दया की भिक्षा मांगने नहीं लगते थे। कुछ समय बाद फिर वह
होती थी। मृत व्यक्ति शहीद माने जाते थे और उनके अप
भुला दिया जाता था। फिर सवाल उठता है—ऐसा क्यों होत
इसका पहला कारण यह था कि जो अपराध वे स्वीकार क
बलात् कराते थे और वे स्वीकारोक्तियां असत्य होती थीं।
कोई गलती नहीं करते। हम उन स्वीकारोक्तियों को सच्चा
है। हम मृतकों को अपने खिलाफ कभी नहीं खड़ा होने देते।
कभी मत सोचना कि भावी सन्तति तुम्हारे दृष्टिकोण क
करेगी। भावी सन्तति तुम्हारा नाम तक नहीं जानेगी। तुम्ह
रजिस्टर में नाम तक नहीं होगा और किसी जीवित व्यक्ति
तक में तुम नहीं रहोगे। तुम अतीत और भविष्य दोनों में स

दिए जाओगे। सब रिकार्ड इस तरह संशोधित कर दिए जाएँगे कि लगे कि तुम कभी थे ही नहीं।'

'तो फिर मुझे ये कष्ट और यातना क्यों दी जा रही है?'

ओ'ब्रायन जरा-सा मुस्करा दिया। 'विन्स्टन, तुम सन्देह भरे दाग की तरह हो। और इस दाग को हमें मिटाना ही पड़ेगा। मैं तुम्हें यह नहीं बता रहा कि हम अतीत के उत्पीड़कों से भिन्न हैं। जब तक कोई हमारा प्रतिरोध करता रहता है, तब तक हम उसे कभी नहीं मारते। हम उसको अपने मन का बना लेते हैं। हम उसके अन्तःकरण पर कब्जा करते हैं। हम उसके मस्तिष्क को अपने अनुकूल बना देते हैं। हम उसकी सारी दुष्टता जला देते हैं। हम उसे अपने पक्ष में मिला लेते हैं, दिखावटी तौर पर नहीं बल्कि हृदय से। सचमुच वह व्यक्ति हमारी तरफ हो जाता है। जब वह हमारा एक अंग बन जाता है, तब हम उसे मार डालते हैं। हमें यह सह्य नहीं कि संसार में कहीं भी गलत विचार हो। चाहे वे विचार कितने ही गुप्त या शक्तिहीन क्यों न हों। प्राचीन समय में नास्तिक नास्तिकता का जप करते ही करते मर जाता था। रूसी लोग जब विरोधियों की सफाई करते थे तब भी उनके दिमाग में राजद्रोह और विद्रोह के विचार बन्द होते थे। हम दिमाग को बिलकुल ठीक बनाकर आदमी को मारते हैं।

ओ'ब्रायन इस तरह बोल रहा था जैसे सपने में कोई बोल रहा हो। विन्स्टन सोच रहा था कि वह मक्कारी नहीं कर रहा था। ओ'ब्रायन पाखण्डी नहीं था। वह जो कुछ कह रहा था उसके हर शब्द में उसका विश्वास है। परन्तु वह स्वयं अपनी मानसिक और बौद्धिक हीनता से दबा जा रहा था। ओ'ब्रायन हमेशा उससे बड़ा था। ऐसा कोई विचार न था जो ओ'ब्रायन के दिमाग में बहुत पहले ही न आ चुका हो और उसकी भली भाँति उसने परीक्षा न कर ली हो और फिर उसे उसने अस्वीकार न कर दिया हो। लेकिन वह किस प्रकार सिद्ध कर सकता था कि ओ'ब्रायन पागल है? अवश्य ही विन्स्टन पागल रहा होगा।

'यह मत सोचना कि तुम पूर्ण आत्मसमर्पण के बाद आत्मरक्षा में सफल हो जाओगे। यहाँ जो कुछ होगा वह हमेशा के लिए होगा। यह ... भाँति समझ लो। हम तुम्हें इतना कुचल देंगे कि ... कभी उठ ही न सकोगे। चाहे तुम हजार बरस क्यों न जिओ।

दरमा फिर नाक पर रख लिया।
'तुम्हें याद है कि तुम डायरी लिखते थे,' उसने कहा, 'उसमें तु
लिखा था कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं या दुश्मन इससे कोई मतलब न
लेकिन ऐसा आदमी अवश्य हूं जिससे बात की जा सकती है। आज
भेंट समाप्त होने से पूर्व यदि तुम कोई प्रश्न पूछना चाहो तो पूछ स
हो।'
'कोई भी प्रश्न पूछ सकता हूं ?'
'कोई भी।' ओ'ब्रायन ने देखा कि विन्स्टन की निगाहें डायल
हैं। 'डायल का स्विच आफ कर दिया गया है। वह काम नहीं करे
तुम्हारा पहला प्रश्न क्या है ?'
'आपने जूलिया का क्या किया ?' विन्स्टन ने पूछा। ओ'ब्रा
मुस्करा दिया। फिर बोला, 'उसने तुम्हें धोखा दिया है, विन्स्टन। प
जाने के बाद तुरन्त, बिना कुछ भी छिपाए हर बात उसने कह दी।
ऐसे लोग बहुत कम देखे हैं जो इतनी जल्दी हमारे काबू में आ जा
यदि वह तुम्हारे सामने आ जाए तो शायद ही तुम उसे पहचान सकं
उसका सारा विद्रोह, उसका अभिमान, उसकी बेवकूफियां और उ
गंदे विचार सब कुछ जला दिए गए। उसका मत-परिवर्तन पूर्ण
बिलकुल पाठ्य पुस्तक के उदाहरण लायक।'
'तुमने उसे यंत्रणा दी होगी ?'
ओ'ब्रायन ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। बोला, 'अगला प्रश्न
'क्या बड़े भाई सचमुच हैं ?'
'बेशक। पार्टी है, बड़े भाई हैं, वे तो पार्टी के प्रतीक हैं।'
'क्या वे उसी तरह हैं जिस प्रकार मैं हूं ?'
'अब तुम नहीं हो।' ओ'ब्रायन ने कहा।
विन्स्टन ने क्लान्त भाव से कहा, 'मैं पैदा हुआ था। मैं म
मेरे हाथ और पैर हैं। मैं संसार में थोड़ी-सी जगह घेरे हूं। क
ठोस पदार्थ मेरे साथ उसी जगह में नहीं रखा जा सकता। क
अर्थों में बड़े भाई का अस्तित्व है ?'
'तुम्हारी बात का कोई महत्त्व नहीं है। बड़े भाई हैं।'
'क्या बड़े भाई की कभी मृत्यु होगी ?'
'कभी नहीं। वे कैसे मर सकते हैं ? अगला सवाल ?'

चश्मा फिर नाक पर रख लिया।

'तुम्हें याद है कि तुम डायरी लिखते थे,' उसने कहा, 'उसमें तुमने लिखा था कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं या दुश्मन इससे कोई मतलब नहीं, लेकिन ऐसा आदमी अवश्य हूं जिससे बात की जा सकती है। आज की भेंट समाप्त होने से पूर्व यदि तुम कोई प्रश्न पूछना चाहो तो पूछ सकते हो।'

'कोई भी प्रश्न पूछ सकता हूं ?'

'कोई भी।' ओ'ब्रायन ने देखा कि विन्स्टन की निगाहें डायल पर हैं। 'डायल का स्विच आफ कर दिया गया है। वह काम नहीं करेगा, तुम्हारा पहला प्रश्न क्या है ?'

'आपने जूलिया का क्या किया ?' विन्स्टन ने पूछा। ओ'ब्रायन मुस्करा दिया। फिर बोला, 'उसने तुम्हें धोखा दिया है, विन्स्टन। पकड़े जाने के बाद तुरन्त, बिना कुछ भी छिपाए हर बात उसने कह दी। मैंने ऐसे लोग बहुत कम देखे हैं जो इतनी जल्दी हमारे काबू में आ जाएं। यदि वह तुम्हारे सामने आ जाए तो शायद ही तुम उसे पहचान सकोगे। उसका सारा विद्रोह, उसका अभिमान, उसकी बेवकूफियां और उसके गंदे विचार सब कुछ जला दिए गए। उसका मत-परिवर्तन पूर्ण था, बिलकुल पाठ्य पुस्तक के उदाहरण लायक।'

'तुमने उसे यंत्रणा दी होगी ?'

ओ'ब्रायन ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। बोला, 'अगला प्रश्न ?'

'क्या बड़े भाई सचमुच हैं ?'

'बेशक। पार्टी है, बड़े भाई हैं, वे तो पार्टी के प्रतीक हैं।'

'क्या वे उसी तरह हैं जिस प्रकार मैं हूं ?'

'अब तुम नहीं हो।' ओ'ब्रायन ने कहा।

विन्स्टन ने क्लान्त भाव से कहा, 'मैं पैदा हुआ था। मैं मरूंगा। ...पैर हैं। मैं संसार में थोड़ी-सी जगह घेरे हूं। कोई भी ...रे साथ उसी जगह में नहीं रखा जा सकता। क्या इन... का अस्तित्व है ?'

...का कोई महत्त्व नहीं है। बड़े भाई हैं।'

...की कभी मृत्यु होगी ?'

'वे कैसे मर सकते हैं ? अगला सवाल ?'

चश्मा फिर नाक पर रख लिया।
'तुम्हें याद है कि तुम डायरी लिखते थे,' उसने कहा, 'उसमें तुम
लिखा था कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं या दुश्मन इससे कोई मतलब नहीं
लेकिन ऐसा आदमी अवश्य हूं जिससे बात की जा सकती है। आज
भेंट समाप्त होने से पूर्व यदि तुम कोई प्रश्न पूछना चाहो तो पूछ सक
हो।'
'कोई भी प्रश्न पूछ सकता हू ?'
'कोई भी।' ओ'ब्रायन ने देखा कि विन्स्टन की निगाहें डायल
हैं। 'डायल का स्विच आफ कर दिया गया है। वह काम नहीं करे
तुम्हारा पहला प्रश्न क्या है ?'
'आपने जूलिया का क्या किया ?' विन्स्टन ने पूछा। ओ'ब्रा
मुस्करा दिया। फिर बोला, 'उसने तुम्हें धोखा दिया है, विन्स्टन। प
जाने के बाद तुरन्त, बिना कुछ भी छिपाए हर बात उसने कह दी।
ऐसे लोग बहुत कम देखे हैं जो इतनी जल्दी हमारे काबू में आ जा
यदि वह तुम्हारे सामने आ जाए तो शायद ही तुम उसे पहचान सके
उसका सारा विद्रोह, उसका अभिमान, उसकी बेवकूफियां और उ
गंदे विचार सब कुछ जला दिए गए। उसका मत-परिवर्तन पूर्ण
बिलकुल पाठ्य पुस्तक के उदाहरण लायक।'
'तुमने उसे यत्रणा दी होगी ?'
ओ'ब्रायन ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। बोला, 'अगला प्रश्न
'क्या बड़े भाई सचमुच है ?'
'बेशक। पार्टी है, बड़े भाई हैं, वे तो पार्टी के प्रतीक हैं।'
'क्या वे उसी तरह हैं जिस प्रकार मैं हू ?'
'अब तुम नहीं हो।' ओ'ब्रायन ने कहा।
विन्स्टन ने क्लान्त भाव से कहा, 'मैं पैदा हुआ था। मैं मर
मेरे हाथ और पैर हैं। मैं संसार में थोड़ी-सी जगह घेरे हू। को
ठोस पदार्थ मेरे साथ उसी जगह में नहीं रखा जा सकता। क
अर्थों में बड़े भाई का अस्तित्व है ?'
'तुम्हारी बात का कोई महत्त्व नहीं है। बड़े भाई हैं।'
'क्या बड़े भाई की कभी मृत्यु होगी ?'
'कभी नहीं। वे कैसे मर सकते हैं ? अगला सवाल ?'

वह जानता था कि ओ'ब्रायन क्या कहेगा। कि पार्टी सत्ता अपने लिए नहीं बल्कि बहुसंख्यकों के हित के लिए चाहती है। वह सत्ता इसलिए चाहती है कि जनता के सदस्य कमजोर हैं, डरपोक हैं, कायर हैं, जो स्वतन्त्रता को सहन नहीं कर सकते, सत्य को देख नहीं सकते वे शासित होने चाहिए। ऐसे लोगों के शासन की समुचित व्यवस्था उन लोगों द्वारा होनी ही चाहिए जो उनसे अधिक बलवान हैं। आदमी के सामने दो रास्ते हैं स्वतन्त्रता और सुख। अधिकांश व्यक्तियों के लिए स्वतन्त्रता नहीं सुख जरूरी है। पार्टी कमजोरों के लिए है। उसके सदस्य अपने सुख को बलिदान करते हैं जिससे अन्य लोगों को सुख मिले। वे शासन-कार्य करते हैं जिससे अन्य लोगों का भला हो। अचानक उसके दिमाग में यह आया कि जब ओ'ब्रायन यह बातें कहेगा तो विन्स्टन उन-पर विश्वास करने लगेगा।

'हमारे लाभ के लिए ही आप हमपर शासन कर रहे हैं।' उसने क्षीण स्वर में कहा, 'आप समझते हैं कि हम अपना शासन स्वयं नहीं कर सकते और इसलिए'''।

दर्द के मारे विन्स्टन की चीख निकल गई। आरम्भ करते ही ओ'ब्रायन ने डायल का लिवर दबा दिया। सुई पैंतीस तक गई होगी।

'बिल्कुल बेवकूफों का-सा उत्तर दिया है, विन्स्टन तुमने, बिल्कुल बेवकूफों-सा। तुम जैसे आदमी को इस प्रश्न का उत्तर देने की आशा आनी चाहिए।'

उसने लिवर छोड़ दिया और कहा

'अब मैं तुम्हें बतलाता हूं कि इस प्रश्न का उत्तर किस प्रकार दिया जाना चाहिए। उत्तर यह है। पार्टी अपने लिए सारी ताकत चाहती है। दूसरों की भलाई में कोई दिलचस्पी नहीं रखते। हमें सत्ता अपने चाहिए। हमें धन, विलासिता, दीर्घ जीवन या सुख कुछ भी नहीं

चाहिए। हमें सत्ता, शक्ति, विशुद्ध शक्ति चाहिए। हम अन्य शासक
वर्गों से इन अर्थों में भिन्न हैं कि हम जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं
और सब वर्ग, वे भी जो हम जैसे लगते हैं, हमसे भिन्न हैं। हमा
विचार है कि वे सब कायर और पाखंडी थे। जर्मन नाज़ी और रू
कम्युनिस्टों के हथकंडे हमसे अवश्य मिलते-जुलते थे लेकिन उनमें अ
लक्ष्य को पहचानने का साहस नहीं था। वे यह दिखलाते थे और शा
विश्वास भी करते थे कि उन्होंने केवल कुछ समय के लिए ही सा
अपने हाथ में ली है। वह भी अनिच्छा से। ज़रा आगे चलकर एक
के बाद कोने में स्वर्ग छिपा है, वहां पहुंचकर हर आदमी बराबरी
अधिकार पा सकेगा। हर आदमी स्वतन्त्र होगा। हम इन लोगों की त
नहीं हैं। हम जानते हैं कि कोई कभी सत्ता को इस दृष्टि से नहीं ह
पाता कि कुछ समय बाद वह उसे छोड़ देगा। सत्ता और शक्ति स
नहीं हैं, साध्य हैं। क्रान्ति की रक्षा के लिए तानाशाही ज़रूरी नहीं
दमन का उद्देश्य दमन है और यंत्रणा का उद्देश्य यंत्रणा है। क्या
तुम्हारी समझ में मेरी बात आ गई ?'

विन्स्टन ओ'ब्रायन के चेहरे की क्लान्ति देखकर स्तब्ध रह ग
वह पहले भी इतना थका चेहरा देख चुका था। ओ'ब्रायन उसके
झुक गया। अपने चेहरे को विन्स्टन के चेहरे के और नज़दीक ले
और कहने लगा :

'तुम सोच रहे हो, मेरा चेहरा क्लान्त है। उससे वृद्धता प्रकट
है। तुम सोच रहे हो, मैं सत्ता की बात करता हूं, लेकिन अपने शरी
जर्जर होने से नहीं रोक पाता। क्या तुम यह नहीं समझते विन्स्ट
आदमी समाज का एक अंग है। क्या नाखून काटने से तुम म
हो ?'

वह बिस्तर से हट गया और जेब में हाथ डालकर इधर
टहलने लगा।

'हम सत्ता के पुरोहित हैं,' ओ'ब्रायन कह रहा था, 'सत्ता श
का अर्थ भली भांति समझ लेना आवश्यक है। पहली बात तो यह
शक्ति सामूहिक चीज़ है। पार्टी का यह नारा तो तुम जानते ही
दासता ही स्वतन्त्रता है। तुमने कभी यह भी सोचा है कि इसक
भी अर्थ हो सकता है। स्वतन्त्रता दासता है। अकेला आदमी,

आदमी, ईश्वर बना दिया जाता है। पराजय असंभव है क्योंकि हर आदमी की मृत्यु अवश्यंभावी है जो स्वयं आदमी की सबसे बड़ी हार है। लेकिन यदि वह पालन करके स्वयं व्यक्तित्व पार्टी में लय कर दे तो वह भी अमर हो जाएगा। यहीं तो समझना रहती है। दूसरी बात यह है कि शक्ति का अर्थ है दूसरे व्यक्तियों पर प्रभाव होना। शरीर पर ही नहीं, बल्कि उनके मस्तिष्कों पर भी पूरा काबू होना। ओब्रायन फिर थोड़ा-सा मुस्कराया और बोला

'असली शक्ति, जिसको प्राप्त करने के लिए हम दिन-रात संघर्ष प्रयत्न कर रहे हैं, वह भौतिक पदार्थों के स्वामित्व को प्राप्त करने की शक्ति नहीं है। अपितु वह शक्ति ऐसी है जिससे हम लोगों को मुट्ठी में रख सकें।' वह एक क्षण के लिए रुक गया और इस प्रकार प्रश्न पूछने लगा जैसे कोई अध्यापक किसी प्रतिभाशाली विद्यार्थी से पूछता है : 'एक आदमी दूसरे पर अपनी शक्ति का प्रयोग किस प्रकार करता है, विन्स्टन ?'

विन्स्टन ने सोचा। इसके बाद बोला, 'उसे कष्ट देकर।'

'बिल्कुल ठीक। दूसरे को कष्ट देकर आदमी अपनी शक्ति दूसरे पर प्रदर्शित करता है। आज्ञाकारिता ही पर्याप्त नहीं है। जब तक वह कष्ट न पाए, तब तक तुम्हें कैसे पता चलेगा कि वह तुम्हारी बात मान रहा है या अपनी ? शक्ति है—कष्ट पहुंचाना और अपमानित करना। शक्ति है—आदमी के दिमाग को चीरफाड़ देना और फिर दिमाग के उन टुकड़ों को अपने ढंग से सजा लेना। तो अब तुम यह अनुभव कर रहे हो न कि हम किस प्रकार की दुनिया बना रहे हैं ? यह दुनिया पहले के सुखवादी विचारकों की कल्पना से बिल्कुल उल्टी है, यह दुनिया है भय की, धोखे की और गद्दारी की, यत्रणा की, दमन की और दरिंदों की। ज्यों-ज्यों यह बढ़ती जाएगी त्यों-त्यों हमारी दुनिया और भी क्रूर होती जाएगी। पुरानी सभ्यताओं का दावा था कि उनकी नींव प्रेम तथा न्याय पर है। हमारी दुनिया की नींव घृणा है। हमारी दुनिया में भय, क्रोध, विजय और आत्मपतन के सिवा अन्य कोई मानवीय भावना शेष नहीं रहेगी। अन्य हरएक चीज को हम नष्ट कर देंगे। हमने पुरानी आदतें छोड़ दी हैं। हमने माता-पिता तथा बच्चों के बीच का सम्बन्ध

और औरत के बीच नाता खत्म कर दिया है। कोई भी व्यक्ति अपने मित्र, बच्चे या पत्नी पर विश्वास नहीं करता। भविष्य में न पत्नी होगी और न मित्र। बच्चे माताओं से जन्म के बाद ले लिए जाएंगे ठीक उसी तरह जैसे मुर्गी के अण्डे उठा लिए जाते हैं। यौन या काम-भावना समाप्त कर दी जाएगी। राशन कार्ड को जिस तरह तारीख बदलवाकर नया कराया जाता है उसी तरह सन्तानोत्पत्ति भी वार्षिक क्रिया हो जाएगी। हम शिश्न को भी नष्ट कर देंगे। हमारे स्नायुविद् आजकल इसी प्रकार का शोध कर रहे हैं। पार्टी-भक्ति के सिवा कोई बात शेष नहीं रह जाएगी। बड़े भाई के सिवा कोई किसीसे प्रेम नहीं करेगा। न कला रह जाएगी और न विज्ञान, न साहित्य। जब हम सर्वान्तर्यामी और सर्वशक्तिशाली होंगे तो विज्ञान की क्या ज़रूरत? कोई जिज्ञासा नहीं रह जाएगी और जीवन की आवश्यकता भी नहीं रहेगी। सभी शारीरिक सुखों को नष्ट कर दिया जाएगा। परन्तु शक्ति का मद बराबर रहेगा—इस बात को मत भूलना, विन्स्टन, यह मद बराबर बढ़ता जाएगा। असहाय शत्रु को अपनी टांगों से दबा देख हम हमेशा हर्षित होते रहेंगे। भविष्य का चित्र यह है—'एक जूता हमेशा के लिए आदमी के मुंह पर रखा हुआ है।'

ओ'ब्रायन रुक गया, जैसे वह विन्स्टन को बोलने का अवसर देना चाहता था। विन्स्टन बिस्तर में और दब-सा गया। वह कुछ भी नहीं कह सकता था। उसका हृदय बर्फ की भांति जम गया था। ओ'ब्रायन का भाषण जारी था :

'और याद रखो, यह स्थिति शाश्वत रहेगी। मुंह हमेशा कुचला जाता रहेगा। विद्रोही, समाज का शत्रु, हमेशा रहेगा। उसे हमेशा हराया जाता रहेगा और बार-बार अपमानित किया जाता रहेगा। गोल्डस्टीन और उसकी बातें बराबर बनी रहेंगी। हर दिन, हर क्षण, विरोधी हराए जाएंगे, बदनाम किए जाएंगे, उनकी हंसी उड़ाई जाएगी, उनपर थूका जाएगा और फिर भी वे जिन्दा रहेंगे। जो नाटक मैंने सात साल तक तुम्हारे साथ खेला है, बार-बार खेला जाएगा, पीढ़ियां गुज़रती जाएंगी और उनके साथ यह नाटक भी अधिकाधिक सूक्ष्म और गुप्त रूप से खेला जाता रहेगा। हमेशा कोई न कोई विद्रोही हमसे दया की भिक्षा मांगता रहेगा और पीड़ा से तड़पता रहेगा। उसमें ज़रा भी

पराजय नहीं रहेगा। हमें ईश्वरत्व प्राप्त करने की शक्ति होगी यह कोशिश में निरन्तर हुआ हमने कदमों को छूने के लिए छोड़ा। दुनिया है जिसका हम निर्माण कर रहे हैं। ऐसी दुनिया जिसमें एक बार दूसरी विजय की आवश्यकता हमने तौर में रखनी जरूरी और अधिक से अधिक और पहले से अधिक शक्ति का प्रयोग करते जाए जाना है न केवल इस दुनिया के सम्बन्ध में तुम प्रश्न ही प्रश्न कर स बल्कि तुम उसे स्वीकार करोगे, निरन्तर बनाओगे, उसका स्वागत करोगे और उसके अंग बन जाओगे।'

फलस्वरूप, विन्स्टन इस बात के सम्मुख पूर्ण असमर्थ हो गया था दूसरे उसे डर था कि यदि वह बहस करता गया तो ओ'ब्रायन शायद फिर पुर्जा दबा देगा। फिर भी उससे चुप नहीं रहा जा रहा था। धीरे धीरे बिना किसी तर्क के सहारे, केवल ओ'ब्रायन के वक्तव्य से घबराकर विस्मय किए बोला

'मैं नहीं जानता—न मैं परवाह करता हूं। बस इतना जानता हूं कि अन्त अपने कार्य में निश्चय ही असफल होंगे। कोई आपको हराएगा। जीवन आपको पराजय करेगा।'

'क्या ऐसा होने का कोई प्रमाण तुम्हारे पास है? या कोई कारण बता सकते हो, जिसकी वजह से ऐसा होना जरूरी है?'

'कुछ नहीं। परन्तु जो कुछ मैंने कहा है, अपने विश्वास के आधार पर कहा है। मैं जानता हूं, तुम हारोगे, पार्टी हारेगी। कोई ऐसी चीज आत्मा या सिद्धान्त इसी ब्रह्माण्ड में है, जिसे तुम जीत नहीं सकते।'

'क्या ईश्वर में तुम्हारा विश्वास है, जो हराएगा?'

'मैं नहीं जानता। शायद मानव की आत्मा।'

'और तुम अपने को मानव समझते हो?'

'हां।'

'अगर तुम मानव हो विन्स्टन, तो समझ लो तुम अन्तिम मानव हो। बिस्तर से उठ पड़ो!' ओ'ब्रायन ने कहा।

पट्टियों से वह बंधा था, वे खुल गईं। विन्स्टन धीरे से फर्श लड़खड़ाता हुआ खड़ा हो गया।

रक्षक हो। अब तुम स्वयं देखोगे कि तुम क्या हो। अपने कपड़े उतार डालो।'

विन्स्टन ने वह तनी खोल दी जिससे उसके कपड़े बंधे थे। उसे पता नहीं वे कब के फट चुके थे। उसे याद नहीं था कि गिरफ्तारी के बाद उसने कभी पूरे कपड़े उतारे हों। वर्दी के नीचे कुछ पीले और फटे चिथड़े थे—वे उसकी बनियान और अण्डरवियर के टुकड़े थे। कपड़े उतारने के बाद उसने देखा कि कमरे के एक कोने में तीन बड़े शीशे रखे हैं। वह उनकी तरफ बढ़ा। इसके बाद रुक गया। रोकते-रोकते उसके मुंह से चीख निकल गई।

'आगे बढ़ जाओ,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'शीशों के बीच में खड़े हो जाओ।'

वह डर जाने की वजह से रुक गया था। झुकी कमर, सफेद रंग का नरकंकाल उसकी तरफ बढ़ा आ रहा था। उसकी शक्ल बड़ी भयानक थी। फिर भी वह जान गया कि यह शक्ल उसीकी है। वह शीशे की तरफ और बढ़ गया। उसका चेहरा नीचे की तरफ हो गया था। इसका कारण यह था कि उसकी कमर झुक गई थी। उसके सामने ऐसी शक्ल थी जिसने बरसों से आदमी का चेहरा नहीं देखा था। वर्षों जेल में गुजर गए थे। माथा भुका और काला पड़ गया था। और सिर गंजा हो गया था। नाक टेढ़ी हो गई थी। गाल की हड्डियां टेढ़ी-मेढ़ी हो गई थीं। मुंह खिंच गया था। निश्चय ही वह उसका चेहरा था। लेकिन उसका चेहरा उसके अन्तःकरण से भी अधिक बदल गया था। उसपर वे भाव प्रकट नहीं होते थे, जो वह सोचता था। वह थोड़ा-थोड़ा गंजा भी हो गया था। पहले उसे लगा कि उसके सारे अंग सफेद हो गए हैं। परन्तु उसकी खोपड़ी के बाल ही सफेद हो गए थे। हाथों और मुंह को छोड़कर उसके शरीर पर सर्वत्र मैल भरा था। मैल के नीचे लाल घावों के निशान थे। टखने के नीचे नस वाला फोड़ा खूब फूल गया था। लाल हो गया था और उसपर से खाल उधड़-उधड़कर गिरने को थी। लेकिन सबसे भयानक बात यह थी कि उसके शरीर में खून ही नहीं था। पसलियों का दायरा तंग हो गया था। ठीक उसी तरह जिस तरह अस्थि-पंजर का हो जाता है। पैर सूख गए थे। घुटने जांघों से अधिक मोटे दिखलाई पड़ते थे। रीढ़ की हड्डी बुरी तरह टेढ़ी हो गई थी। वह तो

उसका ढेढ़ापन देखकर आश्चर्य में पड़ गया। उसके कंधे
बढ़कर झुक गए थे और छाती अन्दर की ओर धंस गई थी।
के बोझ से अन्दर मुड़ी जा रही थी। यदि वह किसी औ
होती तो वह कह देता कि यह कोई साठ साल का बूढ़ा आ
किसी बहुत ही बुरे रोग में फंसा है।

'अपनी हालत देखो।' ओ'ब्रायन ने कहा, 'अपने शरीर
को देखो। अपने गन्दे धूल-भरे पंजों को देखो। पैर के घुपार
देखो। तुम जानते हो कि तुमसे भेड़ की तरह बदबू आ रहे
तुम्हें अब अपने शरीर से बदबू आती ही नहीं। एक हाथ से
पूरी गरदन पकड़ सकता हूं। मैं गाजर की तरह तुम्हारी गर
कर फेंक सकता हूं। तुम्हारे बाल मेरी मुट्ठी में आते हो उब
देखो।' उसने थोड़े-से बाल हाथ से पकड़कर उखाड़ दिए।
खोलो। नौ, दस, ग्यारह, दांत रह गए हैं। जो रह गए हैं
जा रहे हैं। देखो।' उसने सामने के दांत अपने अंगूठे औ
पकड़ लिए। दर्द की एक लहर विन्स्टन के जबड़े में दौड़ गई।
ने एक दांत उखाड़कर ज़मीन पर फेंक दिया।

'तुम सड़ गए हो', ओ'ब्रायन कह रहा था, 'तुम टुकड़े-टु
गिर रहे हो। क्या हो तुम, कूड़े का ढेर। यही आखिरी आदम
तुम मानव हो तो समझ लो यही मानवता है। अब कपड़े पह

विन्स्टन ने धीरे-धीरे कपड़े पहनने शुरू कर दिए। अभी
यह नहीं सोचा था कि वह कितना निर्बल और क्षीण हो गया
एक ही बात उसके दिमाग में थी। तो इसका मतलब है कि
उसकी कल्पना से अधिक समय गुज़र गया। अपने नष्ट-भ्रष्ट
ख्याल कर उसे अपने ऊपर तरस आने लगा। इसके पहले कि
आपको संभाल सके, वह बिस्तर के बगल में पड़े एक स्टूल पर
और रोने लगा। वह मुट्ठी-भर हड्डियों का ढांचा था जो उस
प्रकाश में रो रहा था।

'तुमने ऐसा किया है,' विन्स्टन सिसकी भर रहा था, 'तुम

यह सब पहले कदम में ही निहित था। कोई भी ऐसी बात नहीं हुई जिसकी कल्पना तुमने पहले न कर रखी हो।'

वह कुछ रुका और फिर बोला

'हमने तुम्हें तोड़ दिया है। तुमने रो-रोकर दया की भीख मांगी है, तुमने हरएक के साथ गद्दारी की है। क्या तुम एक भी ऐसी बात सोच सकते हो, जो अपमानास्पद हो और तुमने न की हो ?'

विन्स्टन का रोना थम गया था। आंसू अब भी झर रहे थे। उसने ओ'ब्रायन की ओर देखा।

'मैंने जूलिया को तो धोखा नहीं दिया।' विन्स्टन बोला।

ओ'ब्रायन ने कुछ सोचते हुए उसकी ओर देखा। 'नहीं,' वह बोला, 'नहीं। तुमने यह बात बिलकुल सच कही। तुमने जूलिया को धोखा नहीं दिया।'

'बतलाओ,' उसने कहा, 'मुझे कब गोली मारी जाएगी ?'

'काफी समय लग सकता है,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'तुम्हारा मामला बड़ा कठिन है। लेकिन आशा मत छोड़ो। देर-सबेर यहां सबका इलाज हो जाता है। अन्त में हम तुम्हें अवश्य ही गोली मार देंगे।'

४

अब वह पहले से बहुत अच्छा था। यदि दिनों की बात की जा सके तो वह हर रोज़ तगड़ा होता जा रहा था।

कमरे मे धवल प्रकाश वैसा ही था। सूं-सूं की आवाज़ भी कोठरी में वैसी ही आती जा रही थी। लेकिन वह अन्य लोगों की अपेक्षा आराम मे था। लकड़ी के तख्त पर तकिया और गद्दा था। उसे नहलाया जाता था। नहाने के लिए गरम पानी भी दिया जाता था। उसे नये बनियान और अण्डरवियर तथा कपड़े दिए गए थे। उसके टखने के फोड़े को मरहम लगाकर पट्टी से बांध दिया गया था, जिससे उसे बड़ा आराम था। उसके बाकी दांत भी उखाड़ दिए गए थे और नये नकली दांत दे दिए गए थे।

नियमित रूप से चौबीस घण्टो मे उसे तीन बार भोजन दिया जाता था। वह कभी सोचता था कि उसे रात मे खाने को दिया जाता है या

मिल थे। खाना बेहद अच्छा था। हर तीसरे खाने के साथ उसे
मिलता था। एक बार उसे सिगरेट का पैकेट भी दिया गया। उसके
दियासलाई नहीं थी। लेकिन जो सिपाही खाना लेकर आते थे, वे
बिल्कुल नहीं थे। वे ही उसकी सिगरेट जला देते थे। पहले उसे सिग
पीने में कठिनाई हुई। फिर भी वह कोशिश करता रहा। वह पैकेट का
समय चला। वह हर खाने के बाद आधी सिगरेट पीता था।

उसे एक सफ़ेद स्लेट और पेंसिल भी दी गई थी। पहले उस
उसका कोई उपयोग नहीं किया। वह जागता होता तो भी निष्क्रिय प
रहता। कभी तो वह खाना खाकर बिस्तर पर लेटता तो बिना हि
उस समय तक लेटा रहता जब तक अगले खाने का वक्त नहीं हो जाता।
कभी वह सो जाता, कभी वह दिन में सपने देखता। तेज रोशनी की
ओर चेहरा करके उसकी सोने की आदत पड़ गई थी। इससे कोई फ़
अन्तर नहीं पड़ता। उसे लम्बे-लम्बे सपने लगातार दिखाई पड़ते थे।
वह स्वर्गलोक में पहुंच जाता था। वह कभी धूप में फैले खण्डहरों में
बैठा होता था। कभी मां के साथ, कभी जूलिया के, तो कभी ओ'ब्रायन
के साथ। वे कुछ करते नहीं थे। केवल धूप में बैठे रहते और शान्ति से
बातचीत करते। इसी तरह के विचार जागने पर उसके दिमाग में होते
थे। अब बुद्धिपूर्वक सोचने की उसकी शक्ति लुप्त हो गई थी। अब
उसको पीड़ा भी नहीं थी। वह एकान्त से तंग नहीं होता था। उसमें
बातचीत करने की कोई इच्छा नहीं थी। केवल अकेला रहे। कोई मारे-
पीटे नहीं, प्रश्न न पूछे, खाने को पेटभर मिले और साफ़-सुथरा रह सके,
वह इतने से ही पूर्ण सन्तुष्ट था।

धीरे-धीरे उसे नींद कम आने लगी। परन्तु फिर भी उसका बिस्तर
से उठने को जी नहीं करता। वह चुपचाप पड़ा रहता था। कभी अपनी
बांहों पर हाथ फेरकर बार-बार देखता कि उनपर मांस चढ़ रहा है या
नहीं। अन्त में उसे निश्चय हो गया कि वह मोटा हो रहा है। घुटनों से
जांघें अधिक मोटी हो गई थीं। उसके झुके हुए कंधे सीधे हो गए थे।
लेकिन उसे पता लगा कि वह ज्यादा दूर चल नहीं सकता था। वह एक
हाथ की दूरी पर रखा स्टूल पकड़ नहीं सकता था। कुछ दिन के भोजन
के बाद तथा कुछ और ताकत आ जाने पर सम्भव था
लगे। उसे विश्वास होता जाता था कि उसका चेहरा

होता जा रहा था। हां, सिर पर बाल जरूर नहीं रह गए थे। वह गंजा था।

उसकी मानसिक क्रियाशीलता में वृद्धि हो रही थी। वह तख्त के बिस्तर पर दीवार के सहारे बैठ जाता और स्लेट अपने घुटने पर लेता। इस प्रकार वह अपने-आपको पुन: शिक्षा देने का प्रयत्न करता।

उसने सीख लिया था कि पार्टी की शक्ति से लोहा लेना कितना बचपना है। वह जान गया था कि विचार-पुलिस सात वर्ष से उसे देख रही थी ठीक उसी तरह जिस तरह दूरबीन से कोई भुनगे को देखता है। कोई भी ऐसा काम नहीं था, कोई भी ऐसा जोर से बोला गया शब्द नहीं था, जो उनकी निगाह या कानों से छिपा रहा हो। उन्होंने उसके हर विचार को जान लिया था। वह पार्टी से टक्कर नहीं ले सकता था। दूसरे, पार्टी का विचार ठीक था। शाश्वत और सामूहिक मस्तिष्क किस प्रकार गलती कर सकता है? ऐसे कौन-से भौतिक प्रतिमान हैं जिनसे कोई उनकी गलती पकड़ सकता था? यह मामला तो केवल यह सीख लेने का है कि वे क्या चाहते हैं। जो चाहें वही किया जाए। केवल ''

उसके हाथ में पेंसिल बड़ी मोटी और अजब-सी लग रही थी। वह उन विचारों को लिखने लगा जो उस समय उसके दिमाग में आ रहे थे। उसने बड़े-बड़े शब्दों में लिखा :

'दासता ही स्वतन्त्रता है।'

इसके बाद बिना रुके उसने लिखा :

'दो और दो पांच होते हैं।'

उसने हर बात स्वीकार कर ली थी। अतीत परिवर्तनीय था। अतीत कभी बदला नहीं गया। ओशनिया का ईस्ट एशिया से युद्ध चल रहा था। हमेशा ही दोनों के बीच लड़ाई रही थी। जोन्स, आरोनसन और रदरफोर्ड पर जो अभियोग लगाए गए थे, वे सच थे। उसने ऐसी कोई तसवीर नहीं देखी जिससे उनकी निर्दोषिता सिद्ध होती हो। ऐसी तसवीर कभी थी ही नहीं। यह सब कितना आसान था। केवल आत्म-समर्पण कर दो और बाकी बातें स्वयं हो जाएंगी। यह एक ऐसी धारा में तैरने के समान था कि आप चाहे कितना आगे तैरें, वह आपको पीछे ही घसीटेगी; आगे नहीं बढ़ने देगी। और इसके बाद आप अकस्मात्

धाराप्रवाह के अनुकूल हो जाएं और उसके साथ ही बहने लगें।
रूप को बदलने के सिवा और कुछ भी नहीं करना था। उसे आ
हो रहा था कि आखिर उसने विद्रोह किया ही क्यों, हर चीज आ
थी केवल —!

उसने यह भी अनुभव किया कि उसके दिमाग में शंका उत्पन्न
नहीं होनी चाहिए। जहां भी खतरनाक विचार आए दिमाग को सोच
एकदम बंद कर देना चाहिए। यह प्रक्रिया स्वयमेव होनी चाहिए।
भाषा में इस प्रक्रिया का नाम अपराध रोकने की प्रक्रिया था। वह
प्रक्रिया का अभ्यास करने लगा।

इस बीच वह लगातार यह भी सोचता आ रहा था कि वे कब उ
गोली मारेंगे। अब से दस मिनट बाद भी उसे गोली मारी जा सकती
थी और दस साल बाद भी। वे उसे वर्षों जेल में एकान्तवास करा सकते
थे। वे श्रमशिविर में भी भेज सकते थे। वे उसे कुछ समय के लिए रिहा
भी कर सकते थे। इतना निश्चित था कि अनुमानित समय पर मौत
कभी नहीं आएगी। एक परम्परा थी, जो किसीने बतलाई नहीं थी,
लेकिन हरएक को मालूम था कि वे हमेशा पीछे से गोली मारते थे,
बिना चेतावनी के, उस समय जब आप बरामदे में चल रहे हों या एक
कोठरी से दूसरी में ले जाए जा रहे हों।

एक दिन वे उसे गोली मारने का फैसला कर लेंगे। यह तो कोई
नहीं कह सकता कि वह कौन-सा दिन होगा, लेकिन कुछ सेकेंड पहले
यह भांप लेना कठिन न होगा। दस सेकेंड भी काफी होंगे। बस इतने
समय में ही उसके हृदय का विचार-जगत् बदल सकता है और तब अक-
स्मात्, वह अपना छद्मवेश उतार फेंकेगा। उसकी घृणा प्रकट हो जाएगी।
वह लपट की तरह जल उठेगा। उसी समय उसे गोली आकर लगेगी।
उसका दिमाग ठीक होने के पूर्व ही टुकड़े-टुकड़े हो चुका होगा। वे उसे
ठीक नहीं कर पाएंगे। उसके विद्रोही विचारों को कोई सजा नहीं दी
जा सकेगी। वह स्वयं कोई पश्चाताप नहीं कर पाएगा और सदैव के
लिए उनके हाथ के बाहर चला जाएगा। अपनी पूर्णता में वे स्वयं छेद
कर लेंगे। उनसे घृणा करते हुए मरना ही उसके लिए स्वतन्त्रता थी।

पीछे वही मोम जैसे रंग वाले चेहरे का अफसर था। काली वर्दीधारी सिपाही भी थे।

'खड़े हो जाओ,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'यहां आओ।'

विंस्टन उसके सामने खड़ा हो गया। ओ'ब्रायन ने अपने मजबूत हाथों से विंस्टन के कन्धे पकड़ लिए और पास से देखने लगा।

'अब तुम सुधर रहे हो। मानसिक दृष्टि से अब तुममें बहुत कम दोष रह गया है। भावनात्मक दृष्टि से तुमने अभी प्रगति नहीं की है। बतलाओ, बिना झूठ बोले मुझे सच-सच बतलाओ विंस्टन। तुम जानते हो मैं झूठ हमेशा पकड़ लेता हूं। तुम बड़े भाई के बारे में क्या सोचते हो?'

'मैं घृणा करता हूं, उनसे।'

'घृणा करते हो, ठीक। अब समय आ गया है कि तुम अन्तिम कदम उठाओ। बड़े भाई से तुम्हें प्रेम करना ही चाहिए।'

उसने धीरे से धक्का देकर उसे काली वर्दीधारी सिपाहियों की तरफ कर दिया।

'कमरा नम्बर १०१,' ओ'ब्रायन ने कहा।

५

यह कोठरी, अब तक की जेल की उन सारी कोठरियों से बड़ी थी, जिनमें वह रखा गया था। उसके ठीक सामने दो मेजें थीं, जिनपर हरे मेजपोश बिछे थे। एक मेज तो उससे एक या दो मीटर की दूरी पर थी। दूसरी जरा दूर दरवाजे के पास थी। वह एक कुर्सी से बंधा था। पट्टियां इतनी कसी थीं कि वह हिल भी नहीं सकता था। सिर तक इधर-उधर नहीं कर सकता था। पीछे से एक पैड बंधा था, जिसकी वजह से वह केवल अपने सामने ही देख सकता था।

एक क्षण के लिए वह कमरे में अकेला रह गया था। परन्तु कुछ ही क्षणों बाद ओ'ब्रायन दरवाजा खोलकर कमरे में घुस आया।

ओ'ब्रायन ने कहा, 'तुमने एक बार मुझसे पूछा था कि १०१ नम्बर के कमरे में क्या है। मैंने उत्तर दिया था कि तुम जानते हो।'

'सत्य यह है कि दुनिया में यह कमरा सबसे भयानक जगह है।'

मैं बिना जाने कैसे वह काम कर सकता हूं, जो आप चाहते हैं ?'

ओ'ब्रायन चूहेदानी को उठाकर पास ले आया। उसमें बन्द चूहे काफी बड़े-बड़े थे। चूहेदानी में से चूहे चिचिया रहे थे। चूहे आपस में लड़ रहे थे।

ओ'ब्रायन ने चूहेदानी को उठा लिया। उठाने ही उसने कोई खटका दबाया। विन्स्टन ने अपने-आपको कुर्सी के बंधनों से छुड़ाने की बेहद कोशिश की। लेकिन बेकार था। उसके शरीर का हर भाग यहां तक कि उसका सिर भी बड़ी सख्ती से बांधा गया था। ओ'ब्रायन चूहेदानी को और पास ले आया।

ओ'ब्रायन ने कहा, 'मैंने अभी पहला खटका दबाया है। इसका अगला भाग तुम्हारे चेहरे पर बिलकुल ठीक बैठ जाएगा। कहीं से सिर हटाने की ज़रा-सी भी जगह नहीं रह जाएगी। जब मैं यह खटका दबाऊंगा तो वह दरवाज़ा खुल जाएगा जिसके उस पार चूहे हैं। ये भूखे जानवर तुमपर बन्दूक की गोली की तरफ टूट पड़ेंगे। तुमने कभी चूहे को हवा में छलांग मारते देखा है ? वे तुम्हारे मुंह पर उछलकर बैठ जाएंगे और कुतर-कुतरकर छेद कर देंगे। कभी वे पहले आंखों पर हमला करते हैं और कभी वे गालों में छेद कर जीभ को खा जाते हैं।'

अब चूहेदानी और निकट आ गई थी। लेकिन वह अपने आतंक के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था। अकस्मात्, उन चूहों की गन्दी बदबू उसकी नाक में घुस गई। उसे कै आने लगी। एक क्षण के लिए वह जानवरों की तरह चिल्ला रहा था। वह पागल हो गया था। सहसा उसे एक ख्याल आया। एक ही उम्मीद बचने की थी। वह अपनी जगह किसी और को रखवा दे। उसके तथा चूहों के बीच किसी और आदमी का शरीर आ जाए।

चूहेदानी के नकाब की वजह से अब कमरे की और कोई चीज़ नहीं दिखलाई पड़ रही थी। तारों वाला दरवाज़ा कुछ अंगुल दूर रह गया था। चूहे जानते थे कि उन्हें क्या मिलने वाला था। एक मोटा चूहा तार के सहारे खड़ा हो गया था। वह बार-बार फुफकार-सी मार रहा था। विन्स्टन को उसके मुंह के नीचे के बाल दिखलाई पड़ रहे थे। पीले और गन्दे दांत भी दिखाई दे रहे थे। भय के कारण उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया था। वह अंधा हो गया था। वह असहाय था। उसका

दिमाग नगण्य हो गया था।

अपने आसपास के वातावरण से बिल्कुल अनभिज्ञ व्यक्ति की भांति ओ'ब्रायन कह रहा था, 'सम्राटों के युग में चीन में यह दण्ड बड़ा सामान्य समझा जाता था।'

चूहेदानी उसके मुंह पर आ गई थी। चूहेदानी के तार उसके गालों से सट रहे थे। और अब नहीं, कोई आशा नहीं थी। लेकिन फिर भी बचने की आशा, क्षीण आशा थी। शायद अब देर हो गई थी। बहुत देर हो गई थी। वह जानता था कि दुनिया में एक ही आदमी है जिसे वह अपनी जगह सजा दिलवा सकता है। एक ही व्यक्ति है जो उसके तथा चूहों के बीच आ सकता है। वह बार-बार चिल्ला रहा था :

'मेरी जगह जूलिया को बुलाओ। मेरा नहीं उसका सिर फसाओ। मेरा सिर इसमें मत फसाओ। उसका चेहरा फाड डालो। उसकी हड्डियां तक कुतरवा दो। मुझे मत कुतरवाओ। जूलिया को बुलाओ। मुझे नहीं।'

चूहेदानी की जाली के ठंडे तार अब भी उसके गालों को स्पर्श कर रहे थे। तभी उसने किसी खटके के दबने की आवाज सुनी। वह जान गया था कि इस बार चूहेदानी का दरवाजा खुलने के लिए नहीं, बल्कि बन्द करने के लिए खटका दबाया गया है।

६

चेस्टनट कैफे बिल्कुल खाली हो गया था। एक खिड़की से तिरछी होकर डूबते सूरज की किरणें मेज पर पड़ रही थीं। दिन के तीन (पन्द्रह) बजे थे। टेलीस्क्रीन से मधुर संगीत की आवाज आ रही थी।

विन्स्टन अपने रोज वाले कोने में बैठा था। वह खाली गिलास को देख रहा था। वह बार-बार बड़े भाई के पोस्टर वाले घूरते हुए चेहरे को निगाह उठाकर देख लेता था। नीचे लिखा था, बड़े भाई तुम्हें देख रहे हैं। बिना बुलाए बेटर आकर उसका शराब का गिलास भर देता था और साथ ही दूसरी बोतल से शराब में कुछ छिड़क भी देता था। यह सैकरीन थी जिसमें लौंग की खुशबू होती थी। यही कैफे की विशेषता

विन्स्टन टेलीस्क्रीन सुन रहा था। केवल संगीत आ रहा था। परन्तु सम्भावना थी कि शान्ति मंत्रालय का विशेष बुलेटिन किसी भी समय आ जाए। अफ्रीका के मोर्चे से मिलने वाले समाचार बड़े अशान्तिपूर्ण थे। उसे दिन में बार-बार उन समाचारों के कारण चिन्ता हो जाती थी। यूरेशियन सेना तेजी से आगे बढ़ रही थी। यह मॅट्रल अफ्रीका के ही हाथ से निकलने का सवाल नहीं था, बल्कि पूरी लड़ाई में पहली बार समस्त ओशनिया खतरे में था।

अकस्मात् उसके हृदय में जो उत्तेजना और भय पैदा हुआ था वह थोड़ी देर बाद समाप्त हो गया। उसने युद्ध के सम्बन्ध में सोचना बन्द कर दिया था। इन दिनों वह किसी भी चीज के बारे में कुछ क्षणों से अधिक नहीं सोच सकता था। उसने गिलास उठाया और एक घूंट में उसकी शराब समाप्त कर दी। हमेशा की तरह इस बार भी वह शराब पीने के बाद एकबारगी कांप गया। इस शराब की बू उन चूहों से इतनी अधिक मिलती थी।

वह उनका सपने में भी नाम नहीं लेता था। जहां तक सम्भव होता था वह उनकी शकल की भी कल्पना नहीं करता था। अभी तक उसे लगता था कि वे उसके चेहरे के पास उछल रहे हैं और उनकी बदबू उसकी नाक में घुसी जा रही है। उसने शराब काफी पी ली थी और उसे डकार आ रही थी। अपनी रिहाई के बाद से अब वह मोटा हो गया था। एक तरह से वह अब पहले से भी अधिक अच्छा हो गया था। नाक की खाल तथा गालों की हड्डियों की त्वचा पर लालिमा आ गई थी। सिर का मज तक लाल हो गया था। एक वेटर फिर बिना बुलाए शतरंज और टाइम्स के ताजे अंक ले आया। इसके बाद विन्स्टन का गिलास खाली देखकर उसने शराब फिर भर दी। आर्डर देने की जरूरत नहीं थी। वे उसकी आदत जानते थे। शतरंज की बाजी हमेशा लगी रहती थी। कोने की मेज हमेशा उसके लिए सुरक्षित रहती थी। जब सारा होटल भरा होता था तब भी वह अकेला ही रहता था। उसके समीप कोई नहीं आता था। वह अपने शराब के गिलास तक नहीं गिनता था। कुछ दिनों बाद वे उसे बिल देते थे। लेकिन उसे हमेशा लगता था कि उससे पूरे पैसे नहीं लिए जाते थे। यदि वे ज्यादा भी लेते तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। उसके पास आजकल काफी पैसा रहता था। वह नौकरी

दिमाग गायब हो गया था।

अपने आसपास के वातावरण में बिलकुल अनभिज्ञ व्यक्ति
भांति ओ'ब्रायन कह रहा था, 'सम्राटों के युग में चीन में यह दण्ड
सामान्य समझा जाता था।'

चूहेदानी उसके मुंह पर आ गई थी। चूहेदानी के तार उसके गा
से सट रहे थे। और अब नहीं, कोई आशा नहीं थी। लेकिन फिर
बचने की आशा, क्षीण आशा थी। शायद अब देर हो गई थी। बहुत दे
हो गई थी। वह जानता था कि दुनिया में एक ही आदमी है जिसे व
अपनी जगह सजा दिलवा सकता है। एक ही व्यक्ति है जो उसके तथ
चूहों के बीच आ सकता है। वह बार-बार चिल्ला रहा था :

'मेरी जगह जूलिया को बुलाओ। मेरा नहीं उसका सिर फंसाओ।
मेरा सिर इसमें मत फंसाओ। उसका चेहरा फाड़ डालो। उसकी हड्डिया
तक कुतरवा दो। मुझे मत कुतरवाओ। जूलिया को बुलाओ। मुझे
नहीं।'

चूहेदानी की जाली के ठंडे तार अब भी उसके गालों को स्पर्श कर
रहे थे। तभी उसने किसी खटके के दबने की आवाज सुनी। वह जान
गया था कि इस बार चूहेदानी का दरवाजा खुलने के लिए नहीं, बल्कि
बन्द करने के लिए खटका दबाया गया है।

६

टनट कैफे बिल्कुल खाली हो गया था। एक खिड़की से तिरछी होकर
ते सूरज की किरणें मेज पर पड़ रही थी। दिन के तीन (पन्द्रह)
थे। टेलीस्क्रीन से मधुर संगीत की आवाज आ रही थी।

विन्स्टन अपने रोज वाले कोने में बैठा था। वह खाली गिलास को
रहा था। वह बार-बार बड़े भाई के पोस्टर वाले घूरते हुए चेहरे
निगाह उठाकर देख लेता था। नीचे लिखा था,
[illegible]। बिना बुलाए वेटर आकर उसका [illegible]
साथ ही दूसरी बोतल से शराब में कुछ [illegible]
ोन थी जिसमें लौंग की खुशबू होती थी। यही [illegible]

विन्स्टन टेलीस्क्रीन सुन रहा था। केवल संगीत आ रहा था। परन्तु संभावना थी कि शान्ति मंत्रालय का विशेष बुलेटिन किसी भी समय आ जाए। अफ्रीका के मोर्चे से मिलने वाले समाचार बड़े अशान्तिपूर्ण थे। उसे दिन में बार-बार उन समाचारों के कारण चिन्ता हो जाती थी। यूरेशियन सेना तेजी से आगे बढ़ रही थी। यह सेंट्रल अफ्रीका के ही हाथ से निकलने का सवाल नहीं था, बल्कि पूरी लड़ाई में पहली बार समस्त ओशेनिया खतरे में था।

अकस्मात् उसके हृदय में जो उत्तेजना और भय पैदा हुआ था वह थोड़ी देर बाद समाप्त हो गया। उसने युद्ध के सम्बन्ध में सोचना बन्द कर दिया था। इन दिनों वह किसी भी चीज के बारे में कुछ क्षणों से अधिक नहीं सोच सकता था। उसने गिलास उठाया और एक घूट में उसकी शराब समाप्त कर दी। हमेशा की तरह इस बार भी वह शराब पीने के बाद एकबारगी काप गया। इस शराब की बू उन चूहों में इतनी अधिक मिलती थी।

वह उनका सपने में भी नाम नहीं लेता था। जहां तक सम्भव होता था वह उनकी शकल की भी कल्पना नहीं करता था। अभी तक उसे लगता था कि वे उसके चेहरे के पास उछल रहे हैं और उनकी बदबू उसकी नाक में घुसी जा रही है। उसने शराब काफी पी ली थी और उसे डकार आ रही थी। अपनी रिहाई के बाद से अब वह मोटा हो गया था। एक तरह से वह अब पहले से भी अधिक अच्छा हो गया था। नाक की खाल तथा गालों की हड्डियों की त्वचा पर लालिमा आ गई थी। सिर का गंज तक लाल हो गया था। एक वेटर फिर बिना बुलाए शतरंज और टाइम्स के ताज़े अंक ले आया। इसके बाद विन्स्टन का गिलास खाली देखकर उसने शराब फिर भर दी। आर्डर देने की जरूरत नहीं थी। वे उसकी आदत जानते थे। शतरंज की बाजी हमेशा लगी रहती थी। कोने की मेज हमेशा उसके लिए सुरक्षित रहती थी। जब सारा होटल भरा होता था तब भी वह अकेला ही रहता था। उसके समीप कोई नहीं आता था। वह अपने शराब के गिलास तक नहीं गिनता था। कुछ दिनों बाद वे उसे बिल देते थे। लेकिन उसे हमेशा लगता था कि उससे पूरे पैसे नहीं लिए जाते थे। यदि वे ज्यादा भी लेते तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। उसके पास आजकल काफी पैसा रहता था। वह नौकरी

भी कर रहा था। उन्हीं दस मिनट गुरुत्वों अन्दर से आ रही थी। सैनिक भी पहले से अधिक दिखता था।

टेलीस्क्रीन से आने वाली आवाज रुक गई। किसी समय उद्घोषक ने संगीत बन्द करके ऐलान किया, मलाबार मोर्चे पर बहुत ही महत्वपूर्ण घोषणा होने वाली है। सब उसे सुनने को तैयार रहें। मलाबार मोर्चे पर बहुत ही महत्वपूर्ण समाचार सुनाया जाएगा। तैयार रहें। संगीत फिर टुनटुनाने लगा।

विंस्टन का हृदय धड़कने लगा। अवश्य ही इस बुलेटिन में मोर्चे के समाचार सुनाए जाएँगे। उसे लग रहा था कि कोई बहुत ही खराब समाचार सुनाया जाने वाला है। अफ्रीका में पराजय की आशंका उसके दिमाग में कई बार उत्पन्न हो चुकी थी। उसके विचार फिर खो गए। उसने मेज पर जमी धूल पर उंगली से लिखा

2 + 2 = 5

वह कहती थी, वे मन के अन्दर नहीं घुस सकते। लेकिन वे आदमी के अन्दर भी घुस सकते थे। ओ'ब्रायन का कहना था, यहां जो कुछ होता है, वह हमेशा के लिए होता है। यह सच था। कुछ ऐसी बातें हो जाती हैं, आप कुछ ऐसे काम कर बैठते हैं, जिन्हें कभी नहीं समझ सकते। आपका हृदय कुचल दिया जाता है। जमा दिया जाता है।

वह उससे मिला था। वह दुनिया से बोला भी था। वह जान गया था कि अब वे उसके काम में कोई दिलचस्पी नहीं लेते। यदि वे दोनों चाहते तो फिर भी मिल सकते थे। वास्तविकता यह थी कि उनकी मुलाकात संयोगवश हो गई थी। मार्च का बहुत ही ठंडा दिन था। जमीन लोहे की तरह सख्त थी। इधर-उधर कुछ घास के सिवा फूल की एकाध कली तक रही नहीं थी। घास तक हवा के जोर से उखड़ गई थी। वह तेजी से भागा आ रहा था। उसके हाथ ठंडे थे और ठंड के मारे आंखों से पानी निकल रहा था। तभी वह कोई १० मीटर की दूरी पर उसे दिखलाई पड़ी। वे एक-दूसरे के पास से बिना किसी प्रकार का संकेत किए निकल गए। इसके बाद वह घूमा और उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। वह जानता था कि कोई खतरा नहीं है। परन्तु वह बोली नहीं। वह घास पर तिरछी-तिरछी इस तरह चलने लगी मानो उसमें पिण्ड [illegible] है। इसके बाद वह उदासीन हो गई और उसने विंस्टन

को अपनी बगल के बराबर आ जाने दिया। उसने उसकी कमर अपनी बाहों में लपेट ली। उसने अपने-आपको छुड़ाने की भी कोशिश नहीं की। उसका चेहरा सूजा हुआ था। उसके बालों के नीचे एक लम्बा घाव था। यह घाव माथे और कनपटी के बीच में था। उसकी कमर पहले से अधिक स्थूल हो गई थी। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह अब सख्त भी हो गई है। एक बार उसने राकेट बम के गिरने से ढह गए मकान के नीचे से एक लाश निकाली थी। वह लाश पत्थर जैसी भारी लग रही थी। जूलिया का शरीर भी वैसा ही पत्थर-सा लग रहा था। उसकी त्वचा का वर्ण भी पहले से भिन्न हो गया था।

उसने उसका चुम्बन तक लेने का प्रयत्न नहीं किया। वे आपस में बोले तक नहीं। जब वे लौटने लगे तो उसने मुड़कर सीधे आंखों में आंखें डालकर उसे पहली बार देखा—क्षण-भर के लिए ही। परन्तु उस दृष्टि में घोर घृणा और तिरस्कार का भाव था।

'मैंने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है।' वह बोली। 'मैंने भी तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है', विन्स्टन ने प्रत्युत्तर में कहा। उसने विन्स्टन पर एक घृणाभरी दृष्टि डाली। फिर बोली, 'कभी-कभी वे ऐसी यातना देने की धमकी देते है कि बरबस मुह से निकल जाता है, यह यातना मुझे नहीं मेरे बजाय अमुक व्यक्ति को दो। बचने का और कोई रास्ता ही नहीं सूझता। और आप अपनी जान बचाने को किसी भी मूल्य पर राजी हो जाते हैं। आप चाहते हैं कि वह कष्ट किसी दूसरे आदमी को दिया जाए। आपको और किसीकी चिन्ता होती ही नहीं। बस आदमी अपनी ही फिक्र करता है।'

'बस आदमी अपनी ही फिक्र करता है।' उसने भी प्रतिध्वनि की भांति बात दोहरा दी।

'इसके बाद फिर आपकी वह प्रेम-भावना उस आदमी के प्रति नहीं रह जाती जिसका नाम उस समय आप ले देते हैं।'

'नहीं,' वह बोला, 'उस व्यक्ति के प्रति फिर वह प्रेम-भाव नहीं रह जाता।'

'हम फिर मिलेंगे।' उसने कहा।

'हां, हमें फिर अवश्य मिलना चाहिए।' वह भी बोली।

वह कुछ अनिश्चयात्मक ढंग से उसके पीछे कुछ कदम आगे तक

कर्ण लग गए। उसकी आँखों से दो बड़े-बड़े आँसू निकल पड़े और गाल के इधर-उधर बह निकले। उसके आसपास बगावत की गंध फैली हुई थी। लेकिन अब सब ठीक था। सब ठीक था। सपने भी समाप्त हो ही चुका था। सब कुछ समाप्त हो गया था। उसने अपने-आपको जीत लिया था। वह बड़े भाई से प्रेम करने लगा था।

०००